'उत्तरायणी'

2017

युवाओं का भविष्य

'उत्तरायणी' की एक पहल

Standing from left : DS Bhandari, KN Pande, JP Dhaundiyal, KR Arya, Ramesh Chandra, BM Sundriyal
Sitting from left : Sarita Yajurvedi, GS Rawat, OP Joshi, K Arya, GD Gaur, KB Dhaulakhandi

उत्तराखण्ड में युवाशक्ति की दशा और दिशा

–कृश्न आर्य, अध्यक्ष उत्तरायणी

हमारी युवा पीढ़ी हमारी भविष्य निधि है, जैसे उनका वर्तमान होगा वैसा ही हमारा भविष्य होगा। भारत के अधिकांश युवाओं (युवक–युवतियां) की वर्तमान स्थिति चिन्ताजनक है। वे दिशा भ्रमित हैं। उनमें आत्मविश्वास का अभाव है। आधुनिक सोच और सूचना से अनभिज्ञ, अन्धविश्वास व व्यसनों का शिकार, अन्धकार में भटकता हुआ उलझा व्यक्तित्व। उत्तराखंड में स्थिति और भी खराब है। युवाओं में अवसरों की पहिचान नहीं, उत्साह उमंग नहीं, भविष्य की कोई योजना नहीं, वर्तमान से लापरवाह, अपने अतीत से अनभिज्ञ। दुर्भाग्यवश न उनके सामने कोई आदर्श हैं, न उन्हें कोई राह दिखाने वाला है। अपने अध्यन से जीवन संवारने वाले अमूल्य समय को वे व्यर्थ के कार्यों में बर्वाद कर रहे हैं जो अत्यन्त चिन्ता का विषय है। युवावस्था गीली मिट्टी की तरह है जिससे चाहे तो सुन्दर आकृति बनायी जा सकती है, और यदि मिट्टी सूख गयी तो लाख जतन करके भी कुछ नहीं किया जा सकता है। एक और नई बीमारी ने युवाओं को घेर लिया है–मोबाइल–गेम्स, व्हाटस अप, फेस बुक; यू–टयूब तथा सेल्फी (मोबाइल से अपनी व अपने दोस्तो की विभिन्न मुद्राओं में फोटो खीचना)। जो समय अपने पढ़ने–लिखने मानसिक विकास, ज्ञानार्जन व शरीर सौष्ठव (स्वस्थ तन्दुरूस्त शरीर) बढ़ाने में लगाना चाहिए था वह कीमती समय फिजूल के बतियाने में, अनाप–सनाप संवाद, एस.एम.एस., फेसबुक कमेन्टस व व्हट्स–अप संदेशों में बर्वाद हो रहा है। इन कार्यों से क्षणिक मनोरंजन के अलावा जीवन निर्माण में कोई योगदान नहीं होता। आधुनिक फैशन के प्रतीक मोबाइल,

मोटर बाइक, कपडों, सौन्दर्य प्रसाधनों में मां–बाप का पैसा बर्वाद हो रहा है। बच्चों की जिद के सामने मां–बाप मात्र मूक–दर्शक बने हुए हैं। इन सबका असर कि यह घर में अशिष्ट बातें व अमर्यादित हरकतों से परिवार व समाज का माहौल बिगड़ रहा है। अधिकांश युवक नशे (शराब, सिगरेट, पान, तम्बाकू, गाँजा, चरस) के शिकार हो चुके हैं। इन शौकों को पूरा करने के लिए धन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ये युवक चोरी, लूट–पाट चेन–स्नेचिंग, ठगी और यहां तक कि किडनैपिंग, डकैती व मोटर वाहन (बाइक, कार) चोरी की वारदात तक कर रहे हैं। मां–बाप बेवश, डरे, सहमे, लाचार होकर देख रहे हैं। यह बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है।

आभिभावक (गार्जिन्यन्स) बच्चों को पढ़ाने लिखाने के मकसद से स्कूल, कॉलेजों में भेजते हैं, परंतु अधिकांश युवा कक्षा छोड़ कर कैन्. टीन, पास की बीडी–सिगरेट की दुकान अथवा सिनेमा घरों में मंड. राते रहते हैं। कक्षा में अध्यापकों से अशिष्टता करते हैं, उन्हें डराते–ध ामकाते हैं। परीक्षायें देखकर उन्हें टालने (पोस्टपोन) करने के लिए धरना–हड़ताल का सहारा लेते हैं, तोड–फोड व नारे बाजी से सारा वातावरण (माहौल) खराब करते हैं। जो युवक स्कूल कालेज की मामूली परीक्षाओं से घबरा कर हड़ताल करते हैं, वे कल जीवन के मुश्किलो से भरे रास्तों पर कैसे चल सकेंगे। अपने स्कूल कालेजों में हड़ताल, नारेबाजी, नेतागिरी करने वाले युवक युवतियां अपनी बाकी का जीवन पश्चाताप में गुजारते हैं। जीवन की परीक्षा रोकने के लिए कोई हड़ताल संभव नहीं है। समय किसी का इंतजार नहीं करता। यदि नेतागिरी का शौक ही है तो स्कूल कालेजों की लम्बी छुट्टियों में (खाली समय में) समाज में फैली बुराइयों, कुरीतियों, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, खाद्य पदार्थों में व दवाओं में मिलावट करने वालों के खिलाफ आन्दोलन करें ताकि आपकी नेतागिरी की चाह भी पूरी हो और समाज को फायदा भी हो सके। आन्दोलन करें भ्रष्ट अधिकारियों

के खिलाफ, देश में फैली अराजकता, अनियमितता के खिलाफ।

युवाओं को सावधान रहना चाहिए कि उनके आन्दोलनों का फायदा राजनैतिक पार्टियाँ अपने फायदे के लिए न उठायें। वो उन्हें स्वार्थ सिद्धि का साधन न बनायें और तत्पश्चातच दूध की मक्खी की तरह दूर कर दें, वास्तविकता जब तक आपको पता चलता है तब तक उम्र निकल चुकी होती है और आप वास्तविकता के धरातल पर ठगे हुए दर–दर की ठोकरें खाने लिए मजबूर हो जाते हैं।

अनुशासन समाज व राष्ट्र का जीवन हैं, परंतु हमारे युवा इससे दूर भागते हैं। आलस्य और कामचोरी उनकी आदत बन चुके हैं। समय की पाबन्दी और समय का सदुपयोग करना न उन्हें आता है, न उन्हें कोई बताता है। दुनिया के दूसरे देशों के युवक खेल कूद के क्षेत्र में नये–नये कीर्तीमान (रिकार्ड) बना रहे हैं विज्ञान व तकनीकी के नये अविष्कार, बहादुरी और साहस के नये कारनामें कर दिखा रहे हैं, वही हमारा युवावर्ग फैशन, और असामाजिक तत्वों के हाथों अपना भविष्य नष्ट कर रहा है। उद्यमशीलता का उसमें न तो साहस है न ही उत्साह और आत्मविश्वास। हमारे पर्वतीय प्रदेश के युवा हीन भावना के भी शिकार हैं। फलतः वे 5–7 लोगों के छोटे समूह को संबोधित करने में भी घबराते हैं जिसका असर जीवन पर्यन्त चलता है। इसे दूर करने का एकमात्र उपाय है खुद को किसी से कम न समझें तथा जिस बात से डर लगे, जिस काम को करने से घबराहट हो वही काम बार–बार करें, पहले से अधिक तैयारी और आत्मविश्वास के साथ, और यह मान कर चले कि डर के आगे जीत है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं जिनमें साधारण लोगों ने असाध ाारण सफलतायें हासिल की हैं।

हमारे समाज को आज अनुशासित, सधे हुए युवाओं की जरूरत है ताकि नयी तकनीकी (टैक्नोलॉजी) शिक्षा द्वारा खोले गये अनगिनत

अवसरों का दोहन एक्सप्लोयटेशन किया जा सके। हमारे युवाओं में भविष्य को जानने–परखने की दृष्टि (विजन) हो, और उसे कार्यान्वित करने का ठोस कार्यक्रम, उसी के अनुसार वर्तमान के कार्य कलापों का निर्धारण करें। आज चारों तरफ तीव्र प्रतिस्पर्धा का वातावरण है जिसमें सफलता पाने के लिए जी जान से मेहनत करने और अनुशानस पूर्वक अपने शारीरिक, मानसिक क्षमताओं का समुचित विकास करने की आवश्यकता है। अगर आगे बढ़ना है तो आत्मविश्वास, स्वतंत्र विचारों को अपनाना होगा वैज्ञानिक सिद्धांतों को अपनाना होगा। नये विचारों पर खुले मस्तिष्क से विचार करें सब कुछ भाग्य पर न छोड़कर अपनी बुद्धि और परिश्रम पर अधिक भरा. सा करें। अपने अंदर आत्मविश्वास का भाव पैदा करें, अपनी कमियों को दूर करें, और ईमानदारी से खुद को सुधारें। वर्तमान सुधर गया तो भविष्य अवश्य ही सुनहरा होगा। प्रतिभा हो, अवसर की समझ हो, आत्मविश्वास, आत्मशक्ति हो तो सफलता आवश्य मिलेगी। जोश और होश में काम करें, हर काम को खुश होकर करें, चुनौतियों और जिम्मेदारियों को सहर्ष स्वीकार करें। अपने काम को पूरी लगन व एकाग्रता से करे। जोशीले लोगों की जिन्दगी हमेशा गतिशील होती है और वे मार्गदर्शक बनते हैं। इतिहास में उन्ही लोगों का नाम रहता है जो कुछ करके जाते हैं, जिनसे समाज का कल्याण होता है। हमें अपनी महान परंपरायें याद रखनी होगी और उन परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का उत्तरदायित्व स्मरण रखना होगा। जिन आदर्शों और आशाओं को लेकर पृथक प्रदेश के लिए लोगों ने संघर्ष किया, कष्ट झेले हैं तो उनके सपनों को साकार कर एक प्रगतिशील, उन्नत, विकसित प्रदेश उत्तराखण्ड की रचना करना हमारे युवाओं के लिए महानतम चुनौती है और उत्तरदायित्व भी।

हमारी युवा पीढ़ी में आत्मबल/आत्मविश्वास, उत्साह–उमंग व नवजीवन का संचार करने लिए एक संयत जीवन (लाईफ–स्टाइल)

को अपनाना अनिवार्य है। जिसमें सच्चेमन से, पूरी शक्ति से, निष्ठा और संकल्प (प्रतिज्ञा) से पूराने तौर–तरीको को त्याग कर नयी जीवन–चर्या अपनानी पड़ेगी, जिसका धर्म की तरह हर परिस्थिति में पालन करना होगा। नूतन जीवन चर्या में अपनी दिन–चर्या पुनर्निध ाारित करनी होगी, समय का महत्व (मूल्य) समझना होगा कठिन परिश्रम को अपनाना होगा, शरीर को चुस्त तन्दुरस्त और मजबूत बनाने के उपायों का पालन करना होगा। अपने चरित्र व गुणों में नेतृत्व–कौशल को शामिल करना व दृष्टिकोण को आधुनिक व वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित करना होगा मानसिक शक्ति की क्षमता का विकास करना आवश्यक है तभी एक सशक्त जीवन का निर्माण हो सकेगा।

♦♦♦

लहरों से डर के नौका कभी पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है इसे स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी, देखो और मुल सुधार करो
जबतक न सफल हो, नींद चैन का त्याग करो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागे तुम
कुछ किये बगैर जै. जैकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

उत्तराखण्ड में प्रारम्भिक शिक्षा

जगत सिंह बिष्ट, पूर्व महाप्रबंधक, नाबार्ड

1. शिक्षा क्यों: अच्छा जीवन जीने के लिए अच्छी शिक्षा, पर्याप्त आय और उत्तम स्वास्थय आवश्यक हैं। धन विरासत में मिल सकता है और जो ऐसे भाग्यशाली होते हैं उन्हें धन से शिक्षा में सुविधा भी मिलती है, लेकिन शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए सभी को संघर्ष करना पड़ता है। शिक्षा का ध्येय हर छात्र को इतना सक्षम बनाना है कि वह अपने परिवार का जीवन सार्थक करने के साथ–साथ समाज और देश के लिए भी योगदान कर सके। लेकिन ग्रामीण भारत में शिक्षा का ऐसा योगदान काफी कम है। पिछले कुछ वर्षों में मुझे अपनी पत्नी के साथ उत्तराखण्ड सहित उत्तर भारत के 8 राज्यों में ग्रामीण स्कूलों के छात्रों, उनके अभिभावकों, प्रधानाचार्यों और अध्यापकों से बातचीत करने का अवसर मिला। हमने पाया कि कुछ राज्यों की तुलना में उत्तराखण्ड की शिक्षा न ठीक है और नाही संतोषजनक ही है। हमने उत्तराखण्ड के पौड़ी, उत्तरकाशी, देहरादून, रुद्रप्रयाग, अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़, उधमसिंह नगर और चंपावत के करीब 175 स्कूलों का भ्रमण करने पर पाया कि शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत बहुत पीछे हैं। बॉकी स्कूलों में भी स्थिति ऐसी ही है जो नव युवाओं के भविष्य के लिए आशा जनक स्थिति नहीं है। इसे सुध ाारना पड़ेगा।

2. कौन जिम्मेदार:

(क) अभिभावक: शिक्षा की इस खराब हालत के लिए अभिभावक अधिक जिम्मेदार हैं। अभिभावक बच्चों की पढ़ाई में शुरू से सचेत नहीं रहते और बच्चे हर कक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी इतने परिष्कृत नहीं हो पाते कि वे परिवार को मजबूत आधार प्रदान कर सकें।

बच्चे को स्कूल में डालने, फीस, पुस्तकें तथा ड्रेस प्रदान करने के बाद अभिभावक निश्चिंत हो जाते हैं। वे यह नहीं देखते कि बच्चे कक्षा में नियमित रहते हैं या नहीं और वे क्या पढ़ रहे हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब बच्चे सप्ताह भर तक शादी जैसे आयोजनों में मस्त रहते हैं और अभिभावकों को उनकी पढ़ाई की चिंता नहीं होती। गरीब या अनपढ़ अभिभावक भी यदि निरंतर बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते रहें तो सभी बच्चे उच्च शैक्षिक स्तर प्राप्त कर सकते हैं। इसका उदाहरण अध्यापकों के अपने बच्चों का अच्छा प्रदर्शन है क्योंकि अध्यापक लगातार अपने बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते हैं। अभिभावक रोज बच्चों को स्कूल की पढ़ाई के बारे में पूछें तो बच्चे कक्षा में अध्यापक की बात गौर से सुनने लगेंगे और धीरे–धीरे यह उनकी आदत बन जाएगी। यहीं से बच्चे के सुनहरे भविष्य की नींव पड़ जाती है। यह बात शहरों में काम करने वाले अभिभावकों पर भी लागू होती है। अतः अपने बच्चे की कमजोर शिक्षा के लिए अभिभावकों को चाहिए कि वे अध्यापकों और सरकार को दोष देने की बजाए अपने योगदान में सुधार करें।

(ख) **अध्यापकः** ग्रामीण भारत के काफी अध्यापकों में उत्साह का अभाव देखने को मिला। हम यहां इसके कारणों पर चर्चा नहीं करेंगे और इसके लिए व्यवस्था को भी दोष देना ठीक नहीं। अध्यापक की शैक्षिक योग्यता कुछ भी रहे वह समय के साथ कुशल अध्यापक सिद्ध हो सकता है अतः शिक्षक का प्रयास हो कि कक्षा के हर छात्र को पाठ समझ आ जाए। जहां कक्षा में 25 प्रतिशत से अधिक छात्र पाठ को समझने में असमर्थ पाए जाएं वहां अध्यापक को अपने पढ़ाने के तौर–तरीकों में बदलाव करना चाहिए। तब महत्वपूर्ण प्रश्न यह होगा कि कैसे पढ़ाया जाए। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके लिए प्रयोग आवश्यक होंगे। यह काम ध्यान से सुनो'

कहते रहने से नहीं बल्कि नए–नए तरीके अपनाने से ही हो पाएगा। अध्यापकों में उत्साह की कमी और अभिभावकों की उदासीनता के कारण छात्र कक्षा में एकाग्रचित नहीं हो पाते। कुछ सीमा तक खानपान / घर / गांव का माहौल और स्कूल की दूरी / रास्ता, भी इसके लिए जिम्मेदार होते हैं लेकिन इन पर नियंत्रण मुश्किल नहीं। ध्यान से सुनने का एक प्रयोग अनायास ही हमसे भी हो गया जिसमें 12वीं तक के 95 प्रतिशत छात्र उन तीन राज्यों के नाम नहीं बता सके जिन्हें वे अच्छी तरह जानते थे और जिनका उल्लेख उनके समक्ष कुछ ही मिनट पहले किया गया था। अभ्यास के एक प्रयोग में 12वीं कक्षा तक के औसतन 75 प्रतिशत छात्र 3000 में 4 का भाग ठीक नहीं दे पाए जबकि उनमें से अधिकांश को भाग देना आता था। ये हालत मेरे जमाने में भी थे लेकिन तब पढ़ने व रटने की प्राथमिकता थी और हममें से कुछ लोग अपने जीवन में ठीक–ठीक पहुंच गए तथा उम्मीद है कि वे अगली पीढ़ी को भी सुखद भविष्य दे पाने में समर्थ रहे होंगे। अध्यापकों के ऊपर भावी पीढ़ी का सारा रारोमदार है। उन्हें अपनी जिम्मेदी सच्ची लगन से निभानी चाहिए, आखिर यह सैकड़ों बच्चों की जिन्दगी का प्रश्न है।

(ग) **सरकारः** आमतौर पर हम सभी खामियों का दोष सरकार पर मढ़ देते हैं। लेकिन ग्रामीण भारत के कमजोर शिक्षा स्तर के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराना ठीक नहीं। हां अध्यापकों की सुविधा और प्रभाव के कारण उनके ट्रांसफरों के परिणामस्वरूप जो हानि विद्यार्थियों को हो जाती है उसके लिए अवश्य व्यवस्था को दोषी ठहराया जा सकता है। स्थानान्तरण की समस्या से निजात पाने के लिए यह भी हो सकता है कि 8वीं कक्षा तक की पढाई के लिए उन्हीं अभ्यर्थियों को अध्यापक नियुक्त किया जाए जो स्कूलों के आस पास के गांवों में रहते हों। सरकार स्कूलों में आवश्यक सुविधायें ब्लैक बोर्ड, चौंक, बैठने व लिखने के लिए कुर्सियाँ व डेस्क, पीने का पानी,

स्कूल की इमारत की देखभाल की जिम्मेदारी निभायें। अध्यापकों के काम का समय–समय पर निरीक्षण हो और कमियाँ दूर की जायें।

3. **तकनीकी/व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकासः** हमने तकनीकी /व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में देर से कदम रखा। अब इंजीनियर, एमसीए, एमबीए, कृषि विशेषज्ञ, होटल मैनेजमेंट और डिप्लोमाधारी हमारे इलाकों से निकलने लगे हैं। डाक्टरों, नर्सों और फार्मिस्स्टिों के मामले में हम अभी भी पीछे हैं। तकनीकी शिक्षा के बाद अपना रोजगार स्थापित करने के बजाए हमारा जोर विशेष्ज्ञकर सरकारी नौकरी पर रहता है। तकनीकी /व्यावसायिक शिक्षा का लाभ भी जागरूक अभिभावकों ने ही उठाया है। हमें पहाड़ के दो आईटीआई में छात्रों से बात करने का भी अवसर मिला और उनका कहना था कि वे अच्चे वेतन वाली नौकरी प्राप्त कर लेंगे जबकि ऐसा काफी कठिन है। दसवीं और बारहवीं उत्तीर्ण छात्रों को अच्छी छात्रवृत्ति वाले तकनीकी कौशल प्रशिक्षण मिलना चाहिएर। विडबना देखिए कि तकनीकी प्रशिक्षण के बाजाए उन्होंने अकुशल कामगार की के लिए हमने पहले की भी लेकिन अभिभावक चाहते थे कि कोई पक्की नौकरी वाला प्रशिक्षण नौकरी को वरीयता दी और अकुशल कामगारों की हालत जानकारों से छुपी नहीं है। कौशल विकास की हम अभी भी उपेक्षा कर रहे हैं और चाहते हैं कि कोई भी सरकारी नौकरी मिल जाए ताकि क भी न कभी तो नौकरी पक्की हो जाएगी। बस्तुतः बढ़ रहे वित्तीय बोझ के कारण सरकारी नौकरी का जमाना नहीं रहा और जिन्हें सरकारी नौकरी मिल भी जाएगी उनहें अधि ाकांशतः संविदा पर काम करना होगा।

4. **हमारे पूर्वाग्रह :** अशिक्षा या कूपमंडूपता के कारण हम कई पूर्वाग्रहों से घिरे रहते हैं। मसलन भाग्य पर निर्भर रहना, सुधार नहीं हो सकता, अच्छे छात्र तो भगवान की देन होते हैं, अपनी असफलता के लिए दूसरों को दोष देना, अधिक पढ़ने या रटने से कुछ नहीं

होता या कि पढ़ने वाला बच्चा कहीं भी पढ़ सकता है, आदि आदि। हम मेहनत नहीं करते और चाहते हैं कि बच्चा किसी भी तरह पास हो जाए। हम निजी स्कूलों और अग्रेजी माध्यम से भी बच्चों को पढ़ाने का भ्रम पाले हुए हैं जबकि वही अच्छा स्कूल और माध्यम है जो छात्र को अच्छा भविष्य दे सकें और अध्यापक अभिभावक तथा छात्र किसी भी स्कूल को कभी भी अच्छा बना सकते हैं। हमारे के पास का स्कूल अच्छा हो सकता है और यदि इसमें कुछ खामियाँ होंगी तो हम सब दूर कर सकते हैं। अभिभावक जगत में अच्छे स्कूल के लिए एक अंधी दौड़ पूरे देश में चल पड़ी है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन खूब हो रहा है। इस दिशा में जागरूक नागरिक लोगों से समूह में चर्चा करेंगें तो ग्रामीण शिक्षा को नई रोशनी मिल सकती है। हम अपने अनुभव से स्पष्ट करना चाहेंगें तो ग्रामीण शिक्षा को नई रोशनी मिल सकती है। हम अपने अनुभव से स्पष्ट करना चाहेंगे कि बच्चे का भविष्य घर एवं स्कूल में तैयार होता है तथा घर से बड़ा कोई विद्यालय नहीं और माता पिता से बड़ा कोई अध्यापक नहीं।

5. **अंग्रेजी ज्ञान का महत्वः** शिक्षा और रोजगार से जुड़ा एक अहं मसला अंग्रेजी भाषा भी है। भाषा कम्युनिकेशन की प्रभावी कला है और हिन्दी–अंग्रेजी भाषाओं में निपुण होने पर रोजगार आसान हो जाता है। हिन्दी रोज बोलचाल/व्यवहार में प्रयोग करने से आ जाती है लेकिन अंग्रेजी भाषा हमारी शिक्षा में 12वी कक्षा तक अनिवार्य होने पर भी छात्र उसमें निपुणता प्राप्त नहीं कर पाते जिसका प्रतिकूल प्रभाव सीधे रोजगार पर पड़ता है। इसलिए उत्तम हिन्दी के साथ ठीक ठाक अंग्रेजी भी आवश्यक है क्योंकि अंग्रेजी ज्ञान विज्ञान और अन्तराष्ट्रीय कारोबार की भाष्ज्ञों के साथ साथ हमारे देश सहित कई देशों की राजकाज की भाषा भी है। के बिना रोजगार में ऊंचाइयां प्राप्त करना भी कठिन है। अब कक्षा एक से अंग्रेजी पढ़ाए जाने के कारण कुछ सुधार तो हुआ है लेकिन अभी भी कमजोर अंग्रेजी के कारण बड़ी संख्या में हमारे युवाओं की शिक्षा बाधित होकर रह जाती

है। इसके परिणामस्वरूप रोजगार और प्रतियोगिता में अपेक्षित श्रेणी नहीं मिल पाती। इस समस्या के समाधान के लिए अंग्रेजी विषय की अनिवार्यता समाप्त करने सहित कई उपाय सरकार ने किए लेकिन समस्या और उलझती चली गई। अंग्रेजी विषय में पास हो जाने पर भी वास्तव में छात्र अंग्रेजी में कमजोर होने के कारण रोजगार में भी पिछड़ जाते है। वस्तुतः अंग्रेजी भाषा को आसान और रोचक तरीके से पढ़ाने की जरूरत है ताकि छात्रों में अंग्रेजी का डर घर न कर पाए ओर उन्हें अंग्रेजी में दक्षता प्राप्त करने के लिए अधिक श्रम और समय भी न लगाना पड़े। युवाओं को अंग्रेजी उतनी अवश्य आनी चाहिए जिससे कोई नियोक्ता उनके अंग्रेजी ज्ञान के बारे में आश्वस्थ हो सकें। हम यह भी कहना चाहेंगे कि छात्र 10/12 कक्षा में अंग्रेजी अवश्य लें। हां कुछ सीमा तक अंग्रेजी विषय में उत्तीर्ण होने की अनिवार्यता को समाप्त करने से भी लाभ हो सकता है। इस स्तर पर हम अंग्रेजी पर जोर नहीं देना चाहेंगे क्योंकि इण्टरव्यू में अगर हिन्दी में देने की दूर सभी जगह है और जैसे लिखित अंग्रेजी में निपुण होगा उसे अंग्रेजी बोलने में अधिक समय भी नहीं लगेगा। नियमित रूप से अंग्रेजी पढ़ने लिखने का अभ्यास भी कारगर परिण ाम देता है। हमें एक तथ्य यह भी देखने को मिला कि जो छात्र अंग्रेजी से दूर भागते रहे वे अन्य विषयों में भी कमजोर पाए गए।

(क) ग्रामीण अनुभवों के आधार पर हम बताना चाहेंगे कि अंग्रजी सरल और रुचिकर ढंग से पढ़ाई/पढ़ी जा सकती हैं। आइए अंग्रेजी की ।ए ठए ब्ए क सीखने के बाद छात्रों को एक अक्षर वाले शब्द बताएं जो । और ⁊ हैं। इसके बाद दो अक्षर वाले शब्द निम्नानुसार लिखवाएं/लिखे जा सकते हैं जो अत्यंत सीमित हैं और अर्थ सहित याद रखना कठिन भी नहीं।

अक्षर	2	अक्षर	2	अक्षर	2	अक्षर	2	अक्षर	2
A	AM, AN AS, AT	G	GO	M	ME, MY	S	SO	Y	-
B	BE, BY	H	HE, HI	N	NO	T	TO	Z	-
C	CO	I	IF, IN, IS, IT	O	OF, ON OR, OX	U	UP US		
D	DO	J	-	P	-	V	-		
E	-	K	-	Q	-	W	WE		
F	-	L	LO	R	RE	X			

(ख) उक्त अभ्यास के बाद 3, 4 और 5 अक्षर के शब्द वर्णानुक्रम से लिखने का अभ्यास किया/कराया जाए। इस अभ्यास में शब्द लय में आते हैं इसलिए शब्द B अक्षर से शुरू करने होते हैं लेकिन हमने यहां । से भी शब्द इसलिए शुरू किए है कि कोई खाना खाली न रहे। इसे छात्र अभ्यास के समय स्वतः ही महसूस भी करेंगे। इस अभ्यास में कुछ सार्थक और कुछ निर्थक शब्द बनेगें। पहले A से Z तक लिखे जाने वाले शब्दों का मात्र पहला अक्षर बदलना है और शेष अक्षर यथावत रहते हैं। इसमें छात्रों को शब्द लिखना रुचिकर लगता है। यही रुचि अंग्रेजी लिखने और है सीखने की प्रेरणा देती है। इसके उपरान्त अन्य शब्दों को भी अभ्यास के लिए लिया जा सकता। नीचे दिए गए अभ्यास की तरह इसे किया जा सकता है। 3, 4, और 5 अक्षर से सभी शब्द बनाने के बाद छात्र उन शब्दों पर सही (✓) का निशान लगाएं जो उन्हें विश्वासपूर्वक आते हों। जिन शब्दों के अर्थ छात्रों को न आ रहे हों लेकिन छात्र उन्हें सार्थक महसूस करते हों उन शब्दों पर (?) चिहन लगाया जाए। शेष शब्दों पर (×) चिह्न लगाया जाए। यहां से अंग्रेजी शब्द भंडार बढ़ना आरंभ हो जाएगा।

अक्षर	3	4	5	अक्षर	3	4	5	अक्षर	3	4	5
A	Aap x	Aape x	Apes x	J	Jap ?	Jape?	Japes?	S	Sap?	Sape X	Sap X
B	Bap?	Bape X	Bape X	K	Kap X	Kape X	Kape X	T	Tap X	Tape ✓	Tapex ✓
C	Cap ✓	Cape?	Cape ✓	L	Lap ✓	Lape X	Lape X	U	Uap x	Uape X	Uapes X
D	Dap?	Dape X	Dapex	M	Mab ✓	Mape x	MapesX	V	Vap X	Vape ?	Vape?
E	Exp	Eape X	Eapes X	N	Nap ✓	Nape ✓	Napes ✓	W	Wap X	Wape X	Wapes X
F	Fap X	Fapex	Fapes X	O	Oap X	Lape X	Lapes X	X	Xap X	Xape x	Xapes X
G	Gap ✓	Gape?	Gapes ✓	P	Pap ?	Pape ?	Papes X	Y	Yap ?	Yape X	Yapes X
H	Hap ?	HapeX	HapesX	Q	Qap X	Qape X	QapesX	Z	Zap ?	Zape X	Zapes X
I	Lab X	Lapex	Lapes X	R	Rap?	Rape ✓	Rapes ✓				

(ग) अब छात्र अपनी अंग्रेजी पुस्तक के पहले पाठ से 3 और 4 अक्षर के वे शब्द निम्नानुसार नोट करें जिनके अर्थ वे नहीं जानते हों, फिर शब्दकोश से उन शब्दों के अर्थ ज्ञात कर शब्दों के सामने उनका अर्थ लिख दिया जाए। इसी तरह पाठ 2 और अन्य पाठों के शब्द भी लिखकर उनके अर्थ डिक्शनरी से ज्ञात किए जाएं।

Letters	3	4	Letter	3	4	Letter	3	4
A	Arm, Ant	Acid, Auto	J	Jet, Jar	Just jute	S	Sea, see	Seat, seem
B	Bet, Bit	Bate, Boot	K	Key, Kin	Kite, Kind	T	Tow, Too	Tear, tore
C	Cab, Cut	Care, Cute	L	Lay Lie	Like, lest	U	Use,	User
D	Dig, Don	Door, Dust	M	Mot Met	Must, Most	V	Vie, vow	View, vary

क्योंकि 3 और 4 अक्षर के शब्द बड़ी संख्या में रिपीट होते हैं इसलिए उन्हें आसानी से याद किया जा सकता है कुछ समय बाद छात्र अपने विवेक से अंग्रेजी पाठ्य पुस्तक के 5, 6, 7 और 8 अक्षर वाले के शब्दों के अर्थ भी ज्ञात कर सकते हैं। यह काम विशेष रूप से छुट्टियों में कर लिया जाए। इसके बाद कक्षा में जब अध्यापक पाठ

पढ़ाएंगे तो पाठ समझने में आसानी रहेगी और शब्दों के अर्थ प्रसंग सहित याद हो सकेंगे।

(घ) अब हम अंग्रेजी वाक्य के अभ्यास पर आते हैं। जिसमें हम ग्रामर की बात नहीं करेंगे। नीचे लिखे वाक्य को छात्र अंग्रेजी और हिन्दी में कई रूपों लिखने का अभ्यास करेंगे तो उन्हें पता लग जाएगा कि वाक्य कैसे लिखे जाने चाहिए।

अंग्रेजी वाक्य	हिन्दी वाक्य
He says	वह कहता है
I am alright	मैं ठीक हूं
How are you (alright / not alright) Are you alright (yes/no)	आप कैसे हैं (ठीक हूं/ठीक नहीं हूं) क्या आप ठीक हैं (हां / नहीं)
He says (that) I am alright (but) how are you / (Are) you alright.	वह कहता है (कि) मैं ठीक हूं (लेकिन) आप कैसे हैं (क्या) आप ठीक हैं

ऊपर दिए गए वाक्य वर्तमान काल में है उन्हें छात्र भूतकाल और भविष्य काल में भी लिखने का अभ्यास करें और जानकारों को दिखाएं। तीन दिन उक्त वाक्यों को बार बार वर्तमान, भूत और भविष्य काल में लिखने के बाद उनके प्रश्नवाचक या नकारत्मक वाक्य बनाने का प्रयास करें। पांच दिन के बाद उन्हें अभ्यास रुचिकर लगने लगेंगे। इसके बाद आगे उक्त के आधार पर और वाक्य बनाने में कठिनाई होगी तो अध्यापकों या जानकारों का मार्गदर्शन लेना सहायक होगा। इस तरह के अभ्यास से छात्रों को अनेक तरह के वाक्य लिखने में रचि आएगी और वाक्य सरल लगने लगेंगे। बस दो माह रोज एक–एक घंटे के अभ्यास से अंग्रेजी की समस्या दूर हो सकती है। हां आगे नियमित पढ़ाई और शब्दकोश से सहायता लेना जारी रहना चाहिए। एक वचन, बहुवचन की क्रियाओं का ज्ञान व सही प्रयोग अंग्रेजी की धूरी जिसके चारों तरफ ही बाँकी अंग्रेजी साहित्य घूमता है।

कम्प्यूटर की जानकारी और उस पर अंग्रेजी/हिन्दी टाईपिंग भी सीखी जानी चाहिए। कुछ मिल जाये तो ठीक है नहीं तो ग्रेजुएशन पर ध्यान केन्द्रित करे। ग्रेजुएशन ठीक हो गया तो आगे नौकरी के कई अवसर मिलने आरंभ हो जाते है। अब तक युवक कैरियर के बारे में काफी कुछ जान चुका होता है। ग्रेजुएशन के बाद बी–एड भी किया जा सकता है। दूसरों से जानकारी और परामर्श लेते रहने की समझदारी भी दिखाएं। सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के फार्म भरे जाने चाहिए और उनके लिए तन मन से पढ़ाई हो।

बच्चे कच्ची मिट्टी की तरह है जिन्हें अध्यापक, अभिभावक (माता–पिता) व सरकार मिलजुल कर एक अच्छे साँचे में डालकर कीमती मूर्ति के रूप में ढाल सकते हैं। यदि सभी अपनी अपनी जिम्मेदारियाँ सच्चाई के निभाये और बच्चों को उनके भविष्य के बारे में तथा रोजगार के लिए गलाकर (कटथ्रोट) प्रतियोगिता से सजग कराते रहे, उन्हें कठोर परिश्रम कर अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते रहें। अभिभावक बच्चों के कार्यकलापों की खबर रखें और उन्हें हमेशा नियत समय पर उठने, पढ़ने खेलने, खाने व सोने की राय दें और अनुशासन के अन्दर रखें तो स्थिति में सुधार आयेगा। हम प्रतिज्ञा करें कि अपने बच्चों के सुखद भविष्य के लिए बच्चों व खुद से कठिन परिश्रम करवायेंगे।

♦♦♦

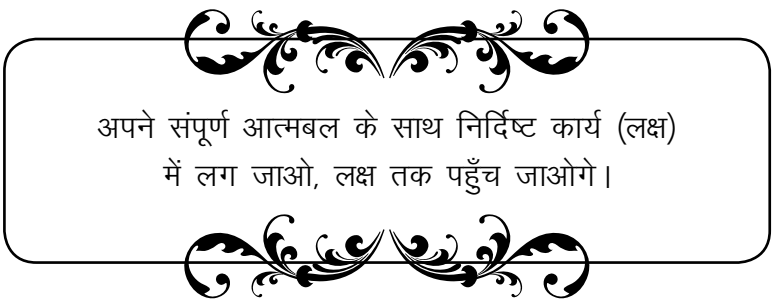

बारहवीं के बाद के विकल्प

अशोक सिंह
301 प्रियदर्शिनी अपार्टमेन्ट, पटपड़गंज

स्कूली शिक्षा की अंतिम सीढ़ी यानी बारहवीं के बाद भविष्य निर्माण के लिए किस राह को चुना जाए यह अहम् सवाल छात्रों का ही नहीं बल्कि अभिभावकों के लिए भी अक्सर चिंता का विषय होता है। यह समस्या कला, वाणिज्य और विज्ञान तीनों ही प्रकार के विषयों की शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं के लिए होती है। विज्ञान की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए इस समस्या का अतिरिक्त महत्व होता है क्योंकि उनके पास अन्य विधाओं की तुलना में कहीं ज्यादा विकल्प होते हैं। ऐसे में चयन कर पाना इतना आसान नहीं रह जाता।

इस लेख में हम विज्ञान विषयों के दायरे में उपलब्ध विभिन्न कैरियर विकल्पों पर रोशनी डालने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से कुछ परंपरागत विषयों की श्रेणी वाले विकल्प हैं तो अन्य विकल्प हाल के वर्षों में अस्तित्व में आए विभिन्न विषयों पर आधारित हैं। निस्संदेह इनमें से प्रत्येक का कैरियर निर्माण में अपना विशिष्ट महत्व है, यह तथ्य नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

इससे पहले कि इन विविध कैरियर विकल्पों के बारे में चर्चा करें यह बात स्पष्ट करना जरूरी है कि किसी भी विषय की विशेषज्ञता हमेशा भविष्य निर्माण की नई राहें स्वयं खोलती है जबकि अच्छे से अच्छे पाठ्यक्रम में औसत प्रदर्शन करने वाले छात्रों के लिए सफलता की बुलंदियों को छूना आसान काम नहीं कहा जा सकता। इसलिए हमेशा पढ़ाई को मात्र डिग्री हासिल करने का पर्याय न समझते हुए ज्ञान अर्जन का माध्यम समझना चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है हमेशा पाठ्यक्रम या विषयों के चयन में अपनी दिलचस्पी रुझान, (रुचि) रुचि और विषयों के बारे में समझ पर अवश्य गौर करना चाहिए। भेड़ चाल में आकर पाठ्यक्रमों या विषयों का चयन करना कतई समझदारी नहीं कहा जा सकता। अक्सर देखा गया है कि प्रतिभावान और मेधावी युवा भी इस प्रकार की गलती कर बैठते हैं और बाद में या तो उन्हें पाठय्क्रम अध ूरा छोड़ना पड़ जाता है या बमुश्किल पास हो पाते हैं। जाहिर है ऐसी स्थिति में भविष्य कितना डांवाडोल होगा इसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं है।

एक और अहम् सवाल है कि 'एप्टीट्यूड' का पता कैसे चले। इसके लिए कई कसौटियों का मोटे दौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें बारहवीं स्तर पर विभिन्नन विषयों के प्राप्तांक, अपनी स्वयं की विषयों पर पकड़, अध्यापकों की राय और कैरियर परामर्शदाताओं द्व ारा लिए जाने वाले एप्टीट्यूड टेस्ट। आमतौर पर इन बातों के आध ार पर काफी हद तक युवाओं के सही प्रकार के एप्टीट्यूड का पता लगाया जा सकता है।

इंजीनियरिंगः विज्ञान विषयों की पढ़ाई करने वाले अधिकांश युवाओं का सपना इंजीनियरिंग कॉलेजों में दाखिला लेना होता है। इसमें भी आई आई टी, ए आई ई ई ई आदि परीक्षाओं के माध्यम से शीर्ष कॉलेजों में दाखिला लेने का ही प्रयास होता है। ये प्रवेश परीक्षाएं आमतौर से एक जैसी ही होती हैं। परीक्षा में ग्यारहवीं और बारहवीं के सिलेबस से ही प्रश्न होते हैं। प्रश्नों में विषयों की बुनियादी समझ की जांच करने पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

वर्तमान में इंजीनियरिंग की 50 से अधिक शाखाओं की शिक्षा वि िभन्न संस्थानों में उपलब्ध है। इसमें कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल मैकेनिकल, कैमिकल, टेलीकम्यूनीकेशन,

इंफामेंशन टेक्नोलॉजी, पेट्रोकैमिकल, सिविल इत्यादि का विशेषतौर पर उल्लेख किया जा सकता है। अधिकांश युवाओं की वरीयता सूची में इन्हीं शाखाओं की सूची देखी जा सकती है।

आल इंडिया इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जामिनेशन (ए आई ई ई ई) के बारे में विस्तृत जानकारी वेबसाइट ूण्पममण्दपबण्पद से प्राप्त की जा सकती है। जबकि विभिन्न प्रदेशों की इंजीनियरिंग चयन परीक्षाओं के लिए 'स्टेट लेबल इंजीनियरिंग एग्जामिनेशन, (एस एल ई ई) की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इनमें आर पी ई टी (राजस्थान), एम पी–सी ई टी (मध्य प्रदेश), यू पी एस ई ए टी (उत्तर प्रदेश), सी ई टी (चंडीगढ़), के सी ई टी (कर्नाटक), सी ई ई टी (हरियाणा), सी ई ई (केरल) आदि का नाम लिया जा सकता है। इन्हीं परीक्षाओं के जरिए विभिन्न प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेजों में भी दाखिले दिए जाते हैं।

मेडिकल : जीव विज्ञान सहित बारहवीं पास करने वाले युवाओं के लिए एम बी बी एस, बी ए एम एस, बी एच एम एस, बी डी एस आदि पाठ्यक्रम प्रमुख रूप से विकल्प हो सकते हैं। इनमें एम बी बी एस और बी डी एस के लिए अखिल भारतीय स्तर की चयन परीक्षाओं के आधार पर दाखिले दिए जाते हैं। जबकि राज्य स्तर के संस्थानों के लिए इंजीनियरिंग की भांति राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसमें सी बी एस ई द्वारा आयोजित की जाने वाली अखिल भारतीय स्तर की चयन परीक्षा मुख्य है। इसके बारे में अधिक जानकारी सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (सी बी एस ई) की वेबसाइट ूण्बइेमण्दपबण्पद से प्राप्त कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान : हाल के वर्षों में व्यावसायिक खेती के क्षेत्र में बढ़ते विदेशी और बड़ी–बड़ी कारपोरेट कंपनियों के निवेश के कारण रा. जगार की संभावनाएं इस क्षेत्र में तेजी से बढ़ी हैं। इसके अलावा

कृषि अनुसंधान, अध्यापन एवं कृषि सूचना प्रचार–प्रसार कार्यों में भी कृषि उपकरण, उर्वरक और कीटनाशक निर्माता कंपनियों में भी ऐसे कृषि प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता बड़े पैमाने पर रहती है।

कृषि क्षे में बी.एस– सी. और बी.टेक. स्तर के पाठ्यक्रम विभिन्न विधाओं में देश के तमाम कृषि विश्वविद्यालयों में संचालित किए जाते हैं। इन विधाओं में कृषि विज्ञान, बागवानी कृषि इंजीनियरिंग, डेरी टेक्नोलॉजी, रेशम कीट विज्ञान, वानिकी, मत्स्य पालन, पशु चिकित्सा विज्ञान आदि का उल्लेख किया जा सकता है। इनमें भी अखिल भारतीय और प्रादेशिक स्तर की चयन परीक्षाओं के आधार पर दाखिले दिए जाते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई सी ए आर) की बेबसाइट ूण्पबंतण्दपबण्पद से इस बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

जैव प्रौद्योगिकी (बायोटेक्नोलॉजी) : जैव प्रौद्योगिकी पर आध ाारित कैरियर संभावनाएं देश–विदेश में देखी जा सकती है। जैव प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम स्नातक स्तर से लेकर डॉक्टरेट स्तर तक देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हैं। अमूमन चयन के लिए प्रवेश परीक्षाओं में शामिल होना पड़ता है। इस बारे में विस्तृत जानकारी निम्न संस्थानों से प्राप्त की जा सकती है :

– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

– इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, (दिल्ली, खड़गपुर आदि)

– उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

– बखतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, (म.प्र.)

– मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, (महाराष्ट्र)

– पंजाबी विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

– मदुरै कामकाज विश्वविद्यालय, मदुरै, (तिमलनाडु)

– बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)

– अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, (उत्तर प्रदेश)।

पर्यावरण विज्ञान : पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण प्रशिक्षित पर्यावरण विशेषज्ञों की मांग बढ़ना स्वाभाविक है। इनकी मांग न सिर्फ औद्योगिक इकाइयों और प्रदूषण विभागों में है बल्कि स्वतंत्र परामर्शदाता के रूप में भी कम नहीं है। पाठ्यक्रमों में प्रदूतषित जल उपचार, सीवर प्रणाली को पर्यावरण हितैषी बनाना, वायु प्रदूषण से बचाव, ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण, रासायनिक प्रदूषण आदि पर आधारित सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थानों से संपर्क किया जा सकता है:

– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

– विश्वेश्वरैय्या टेक्नोलॉजिकल यूनीवर्सिटी, चिकमंगलूर

– कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर, विशाखापट्टनम।

नर्सिंग: प्रशिक्षित नर्सों की आवश्यकता भारत ही नहीं बल्कि पश्चिमी देशों में भी हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ी है। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और लोगों में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण ही चिकित्सा व्यवसाय से जुडे लोगों की मांग में इजाफा आया है। देशस में मुख्य रूप से युवतियों और पहिलाओं के लिए ही नर्सिंग के पाठयक्रम संचालित किए जाते हैं। हालांकि अब पुरुष नर्स की उपयोगिता भी महसूस की जाने लगी है। देश के चंद गिने–चुने

संस्थानों में पुरुष नर्सिंग ट्रेनिंग की भी व्यवस्था है। नर्सिंग का चार वर्षीय पाठ्यक्रम बी.एस–सी (नर्सिंग) है। इसके अलावा मिडवा. इफरी एंड ऑग्जिलरी नर्सिंग, जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी आदि पाठयक्रम भी संचालित किए जाते हैं। अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थानों से संपर्क किया जा सकता हैः

– मोतीलाल नेहरू हॉस्पिटल, इलाहाबाद (उ.प्र.)

– महात्मा गांधी हॉस्पिटल, जोधपुर (राजस्थान)

– स्कूल ऑफ नर्सिंग (गुरु तेग बहादुर हॉस्पिटल, दिल्ली।

– कॉलेज ऑफ नर्सिंग, सर गंगाराम हॉस्पिटल, दिल्ली

– एस वी बी पी मेमोरियल हॉस्पिटल, विलासपुर (म.प्र.)

– सुचेता कृपलानी हॉस्पिटल, नई दिल्ली।

– स्कूल ऑफ नर्सिंग, डॉ. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल, नई दिल्ली।

गृह विज्ञानः इस विषय की पृष्ठभूमि वाले युवाओं के हुनर की उपयोगिता प्रमुख रूप से खद्य प्रसंस्करण उद्योग, समाज सेवा, होटल उद्योग, हैल्थ क्लब, कैटरिंग सर्विस, बाल विकास आदि क्षेत्रों में है। यह विषय दरअसल अपने में कई अन्य विषयों का समागम है। इसमें विज्ञान के परंपरागत विषयों के अलावा पर्यावरण, स्वास्थ्य, पोषण, मनोविज्ञान टेलरिंग, कुकरी इत्यादि का भी समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है। बी.एस–सी. (गृह विज्ञान) का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम देश भर में फैले हुए संस्थानों में उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थानों से संपर्क किया जा सकता हैः

– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

– राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर, बिहार

– गोबिन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर

– जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001

– इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)।

पैरामेडिकल कोर्स: फिजियोथिरैपी, सेनिटरी इंस्पेक्टर, मेडिकल लैबोरेटरी टेक्नीशियन, रेडियोग्राफर इत्यादि जैसे पाठ्यक्रमों की उपयोगिता रोजगार पाने की दृष्टि से काफी बढ़ी है। नए अस्पतालों और डाइग्नोस्टिक सेंटरों के खुलने से प्रशिक्षित कर्मियों के लिए काफी संख्या में राजेगार के नए अवसर सृजित हुए हैं। बारहवीं में जीव विज्ञान के साथ अन्य विज्ञान विषयों की पृष्ठभूमि वाले युवाओं को ही निर्धारित चयन परीक्षा के आधार पर इन पाठ्यक्रमों में दाखिले दिए जाते हैं। अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थानों से संपर्क किया जा सकता है:

– वेल्लोर मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर (तमिलनाडु)

– इंस्टीट्यूट फार द फिजिकली हैंडिकैप्ड, नई दिल्ली

– आमर्ड फोर्सेज मेडिकल कॉलेज, पुणे (महाराष्ट्र)

– आंध्र मेडिकल कॉलेज, विशाखापट्टनम

– गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल, रीवा

– पब्लिक हैल्थ इंस्टीट्यूट, पटना (बिहार)

– क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, लुधियाना (पंजाब)

– मेडिकल कॉलेज, रोहतक (हरियाणा)

मर्चेंट नेवी : समुद्री जहाजों पर बतौर नेविगेटिंग ऑफिसर, मैरीन इंजीनियर या अन्य महत्वपूर्ण मदों पर कार्यरत लोगों को मर्चेंट नेवी का हिस्सा माना जाता है। इनमें यात्राी वाहक और मालवाहक दोनों ही प्रकार के जहाज शामिल हैं। देश में मर्चेंट नेवी से जुड़े प्रशिक्षण की जिम्मेदारी जहाजरानी मंत्रालय के अधीन कार्यरत डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ शिपिंग पर है। इन पाठ्यक्रमों में बी.एस.सी. (नॉटिकल साइंस) मैरीन इंजीनियरिंग मुख्य हैं। इनमें दाखिले आई आई टी की जी ई ई चयन परीक्षा के आधार पर दिए जाते हैं। अधिक जानकारी : शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया (शिपिंग हाउस, 245 मैडम कामा रोड, मुम्बई) से अथवा इनकी वेबसाइट ूणीपचपदकपंण्बवउ से प्राप्त की जा सकती है।

भूगर्भ विज्ञान

हाल के वर्षों में यह क्षेत्र अत्यंत तेजी से चहुंमुखी तौर पर विकसित हुआ है। इसके अंतर्गत पृथ्वी के गर्भ में छिपो विभिन्न खनिजों, ध ाातुओं और तेल भंडारों का पता लगाने से लेकर उनके उत्खनन और परिशोधन से जुड़े कार्यकलाप भी शामिल हैं। इसी की विशिष्ट उपशाखाओं की बात करें तो इसमें क्रिस्टिलोग्राफी, मिन. रोलॉजी जियोकैमिस्ट्री, जियोफिजिक्स, स्ट्रैटिग्राफी, पैलेन्टोनॉजी, ओशियनोग्राफी, मिट्रियोलॉजी, आदि का खासतौर पर उल्लेख किया जा सकता है।

भूगर्भशास्त्रियों का मुख्य काम जगह–जगह अन्वेषणों के जरिए भूमि की परतों के नीचे छिपे इन उपयोगी भंडारों का पता लगाना और उनके उत्खनन के कार्यों को वैज्ञानिक ढंग से अंजाम देना होता है। देश में बी.एस–सी. (जियोलॉजी)? एम.एस.सी (जियोलॉजी) और एम. टेक स्तर के विभिन्न पाठयक्रम इस क्षेत्र में उपलब्ध हैं।

इस प्रकार की डिग्रियों के बाद तेल, खानों, सिविल कंस्ट्रक्शन के काम में लगी कम्पनियों, भूगर्भ सर्वेक्षण विभागों आदि से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय और श्राष्ट्रीय स्तर की कम्पनिचयों में रोजगार संभावनाएं हो सकत है। प्रमुख संस्थाओं में शामिल हैंः

– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

– यूनीवसिर्टी ऑफ मुबई, मुंबइ (महाराष्ट्र)

– अन्ना यूनीवर्सिटी, चेन्नई (तमिलनाडु)

फार्मेसी

जीव विज्ञान सहित 10+2 पास करने वाले युवाओं के लिए आयुर्विज्ञान के बाद फार्मेसी के क्षेत्र में भी कैरियर संवारने के पर्याप्त अवसर हैं। इसके तहत विभिन्न दवाओं या औद्याधियों के रासायनिक संघटन, उनकी उत्पादन प्रक्रिया, प्रभाव आदि से संबंधित सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक जानकारियां दी जाती हैं। फार्मेसी का पाठ्यक्रम दसवीं के बाद भी डिप्लोमा स्तर के पाठ्यक्रम के रूप में भी उपलब्ध है। हालांकि 10+2 के बाद यह चार वर्षीय डिग्री स्तर का पाठ्यक्रम है। इसके बाद रोजगार या स्वरोजगार दोनों प्रकार के अवसरों से लाभ उठाया जा सकता है। इस डिग्री के आधार पर औषधि निर्माण उद्योग की शुरुआत के अलावा कैमिस्टा इाइसेंस भी हासिल किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थाओं से सम्पर्क किया जा सकता हैः

– कॉलेज ऑफ फार्मेसी (दिल्ली विश्वविद्यालय), पुष्प विहार, नई दिल्ली

– जामिया विश्वविद्याल, हमदर्द नगर, नई दिल्ली

– डिपार्टमें ऑफ फार्मास्यूटिक्स, इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

एंड साइंस, पिलानी, राजस्थान

– बिहार कॉलेज ऑफ फार्मेसी, पटना, बिहार।

डिजाइनिंग

अपनी रचनात्मक सोच एवं सृजनशीलता को मूर्त रूप देने के लिए डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपार रोजगार संभावनाओं की तलाश की जा सकती है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जिसमें डिजाइनिंग पर आधारित सोच का इस्तेमाल न किया जाता हो। प्रोडक्ट डिजा. इनिंग, टैक्सटाइल डिलाइनिंग, ज्वैलरी डिजाइनिंग, एनीमेशन डिज. ाइनिंग, फैशन डिजाइनिंग, कंस्ट्रक्शन डिजाइनिंग, आदि कितने ही ऐसे क्षेत्रों का नाम गिनाया जा सकता है जहां डिजाइनरों के कौशल की मोंग होती है। इनके अतिरिकक्त भी एक्सेस्सरी डिजाइनिंग, सिरेमिक्स डिजाइनिंग, एग्जीबिशन डिजाइनिंग, फर्नीचर डिजाइनिंग, आदि का उल्लेख किया जा सकता है। नामी संस्थानों में डिजाइन आधारित पाठ्यक्रमों में चयन परीक्षा के आधार पर दिाखिले दिए जाते हैं। शायद ही कोई ऐसा उद्योग हो जिसमें डिजाइनरों मोंग न हों। इस बारे में अधिक जानकारी के लिए निम्न संस्थानों से सम्पर्क किया जा सकता है :

– नेशनल इंस्टि्यूट ऑफ डिजाइन, पाल्की, अहमदाबाद (गुजरात)

– नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, हौजखास, नई दिल्ली

– अपैरल ट्रेनिंग एंड डिजाइन सेंटर, (कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली।

प्लास्टिक टेक्नोलॉजी

प्लास्टिक के बिना वर्तमान विश्व की कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। हमारे जीवन और रोजमर्रा की जिन्दगी में प्लास्टिक से बनी हुई वस्तुओं का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्लास्टिक इंजीनियरों का काम महज कृत्रिम पदार्थों एवं रसायनों का इस्तेमाल कर प्लास्टिक तैयार करना ही है। बल्कि विभिन्न प्रयोजनों में इसके प्रयोग के अनुसार आकृति प्रदान करना तथा मजबूती के वांछित स्तर तक इसे पहुंचाना भी है। धातुओं के घटते प्रयोग साथ–साथ प्लास्टिक से तैयार वस्तुओं का प्रयोग उसी अनुपात में निरंतर बढ़ता जा रहा है। आने वाले समय में प्लास्टिक के अनुप्रयोग की संभावनाएं तेजी से बढ़ेंगी। ऐसे में प्लास्टिक विशेषज्ञों की जरूरत भी तेजी से बढ़ने की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। विस्तृत जानकारी निम्न संस्थानों से हासिल की जा सकती हैः

– एच बी टी आई, कानपुर (उ.प्र.)

– यूनीवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ कैमिकल टेक्नोलॉजी, मुंबई (महाराष्ट्र)

– इंस्टिट्यूट ऑफ पेट्रोलियम स्टडीज एंड कैमिकल इंजीनियरिंग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़ (उ.प्र.)

– बिड़ला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रांची (झारखंड)

– दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, बवाना रोड, दिल्ली

– यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रोड, कोलकाता।

रक्षा सेवा

रोजगार प्रदाता के रूप में रक्षा सेवा का खासा महत्व है। थलसेना,

वायुसेना और नौसेना में प्रत्येक वर्ष अच्छी खासी संख्या में युवाओं की नियुक्तियां की जाती है। इसमें स्कूली शिक्षा से लेकर ग्रेजुएशन की डिग्री वाले युवाओं तक के लिए अलग–अलग अवसर हो सकते हैं।

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रत्येक वर्ष दो बार आयोजित की जाने वाली एन डी ए परीक्षा में 10□+ 2 पास युवाओं को अवसर दिए जाते हैं। वायुसेना और नौसेना में खासकन विज्ञान विषयों की शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं को प्राथमिकता दी जाती है। इसके अतिरिक्त शर्ट सर्विस कमीशनों के जरिए भी नियुक्तियां समय–समय पर की जाती है।।

10+2 टेक्नीकल एंट्री स्कीम भी इसी प्रकार का एक अन्य विकल्प है। इसके जरिए सेना के ई एम ई और सिग्नल कोर्स एं इंजीनियर कोर में नियुक्तियां की जाती है। ए एफ एम सी, पुणे में एम बी बी एस पाठ्यक्रम में दाखिला और उसके बाद सेना में मेडिकल कोर में नियुक्ति भी इसी का एक अहम् हिस्सा है। इस बारें में विस्तृत जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट उपयोगी हो सकती है।

- www.nausena-bharti.mil.in/www.nic.in/armedmedforces/airforce.htm
- www.upsc.gov.in
- www.careeraiforce.nic.in

बीमा

इस क्षेत्र में कुछ समय तक सरकारी क्षेत्र की कम्पनियों का बोल. बाला था। लेकिन सरकार द्वारा निजी क्षेत्र की बीमा (इंश्योरेंस) कम्पनियों के लिए कारोबार करने की छूट देने के बारे में स्थिति में

काफी बदलाव आ गया है। इससे बीमा कारोबार के नए–नए क्षेत्र उभरकर सामने आए हैं और रोजगार के भी तमाम अवसर सृजित हुए हैं। विशेषज्ञों के अनुमान के मुताबिक भारत में बीमा कवरेज के दायरे से बहुसंख्यक जनसंख्या अभी भी बाहर है। ऐसे में आकर्षक बीमा योजनाओं के प्रस्ताव से बड़ी तादाद में लोगों को इस दायरे में ला पाना संभव हो सकेगा। इस बारे में तमाम विश्वविद्यालयों में भी एक्च्यूरियल साइंस पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क किया जा सकता है।

– एक्च्यूरियल सोसायटी ऑफ इंडिया, 9 जीवन उद्योग, 278 डा. डी.एन. रोड, फोर्ट, मुंबई–400001

– मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई (महाराष्ट्र)

– दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

– अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)

– मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई (तमिलनाडु)

– मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)।

आर्किटैक्चर

इस विशिष्ट पाठ्यक्रम में बिलडिंग कंस्ट्रक्शन एवं डिजाइनिंग के अतिरिक्त बिल्डिंग मैटिरियल उएंड टाउन प्लानिंग, सर्वे से जुड़ी व्यावहारिक जानकारियों और प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जाता है। भविष्य निर्माण की दृष्टि से आर्किटैक्ट का कैरियर कमाई और शेहरत से भरपूर होता है। यही कारण है कि लंबें समय से यह प्रोफेशन युवाओं की प्राथमिकता सूची में सतत बना हुआ है।

देश के अंधिकांश विश्वविद्यालयों में बैचलर ऑफ आर्किटैक्च्र का

पाठ्यक्रम उपलब्ध है। इनमें चयन परीक्षाओं के जरिए ही दाखिले दिए जाते हैं। किसी सरकारी या निजी क्षेत्र की कम्पनी में बतौर आर्किटैक्ट नौकरनी करने के बाद स्वतंत्र रूप से भी यह कार्य किया जा सकता है। अब तो वैसे भी बिल्डंग एवं कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों को कारोबार करने की इजाजत दिए जाने पर सरकारी स्तर पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। जाहिर है ऐसे में नए सिरे से संभावनाएं उभरकर सामने आएंगी। चुनिंदा संस्थानों के नाम इस प्रकार हैंः

– स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटैक्चर, इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

– रुड़की यूनीवर्सिटी, रुड़की

– बी आई टी, रांची

– (झारखंड)

– चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटैक्चर, चंडीगढ़

– गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्किटैक्चर, टैगोर रोड, लखनऊ।

सूचना प्रौद्योगिकी

दुनिया भर में आज सूचना प्रौद्योगिकी का बोलबाला है। शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र अछूता होगा जहां सूचना प्रौद्योगिकी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग न हो।इसका प्रयोग सूचनाओं के आदान–प्रदान में बड़े पैमाने पर हो रहा है। व्यापार, शिक्षा–अनुसंधान आदि असंख्य ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक इस्तेमाल किया जा रहा है। मेडिकल ट्रांस्क्रिप्शन एवं अन्य बी पी ओ संबंधित कामकाज सिर्फ सूचना प्रौद्योगिकी के बूते ही चल रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी की शैक्षिक डिग्रियों को आज सफलता के पर्याय के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। देश के नामी विश्वविद्यालयों के अलावा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी के वि. भन्न शाखाओं में बैचलर्स डिग्री के तमाम तरह के पाठ्यक्रम संचा. लित किए जाते हैं। इनमें दाखिले चयन परीक्षा के आधार पर ही दिए जाते हैं। प्रमुख संस्थानों के नाम इस प्रकार हैं:

– इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

– बरहामपुर विश्वविद्यालय, उड़ीसा

– डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, (उ.प्र.)

– गुरू गोबिन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली

– एम जे पी रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय, (उ.प्र.)

– कोचीन यूनीवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, कोच्चि

– पंजाबी टेक्नीकल यूनीवर्सिटी, पंजाब

– इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी, इलाहाबाद।

♦♦♦

उम्मीदों को पूरा करने की कवायद

पूरन चंद्र काण्डपाल

उत्तरांचल के युवकों का देश के अन्य युवकों की तुलना में जीवनयापन के लिए अधिक जूझना पड़ता है। यों तो सरकारी नौकरियों की अब आशा ही नहीं की जा सकती परंतु इनी–गिनी जो नौकरियां बची है, चाहे वे केन्द्र की हों या राज्य की, उनमें प्रतियोगिता का स्तर इतना ऊँचा पहुँच गया है जिसको छू पाना आम उत्तराखण्डी युवक के बस की बात नहीं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह बुद्धिमान या योग्य नहीं होता। उत्तरांचल के युवा परिश्रमी कर्मठ, ईमानदार, देशप्रेमी तथा सौपे गए कार्य को करने में पूर्ण सक्षम होते है परंतु बचपन से ही उन्हें अभाव से गुजरना पड़ता है। न उचित शिक्षा मिल पाती है, न रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले नब्बे प्रतिशत बच्चे घर में पढ़ाई की ओर वांच्छित ध्यान नहीं दे पाते। अपवाद छोड़कर वर्षा पर आधारित खेती–बाड़ी होती है जिसमें वर्ष के तीन महीनों के लिए भी मुश्किल से अनाज उत्पन्न होता है। उसी में बच्चों सहित पूरा परिवार इतना व्यस्त रहता है कि स्कूल से आकर बच्चे घर में बस्ता तक नहीं खोल पाते।

माध्यमिक कक्षाओं में इन बच्चों को शिक्षा बोझ लगने लगती है। अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र जैसे विषयों से छात्र डरने लगते हैं उम्र बढ़ने के साथ उनकी घर के काम में भागीदारी बढ़ती जाती है। खेती – बाड़ी के काम में तो वे हाथ बटाते ही हैं, इसके अल. ावा पशुओं की देखभाल, चारा काटना, दूर–दराज से पेयजल तथा साग–सब्जियों के पौधों को सिंचित करने की व्यवस्था चक्की से अनाज पिसवाना जंगल से ईधन लाना आदि भी उनकी जिम्मेदारी होती है।

दसवीं कक्षा तक पहुँचते ही छात्र का शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान का स्तर साधारण वांच्छित स्तर से कम ही रहता है। अध्ययन के लिए पर्याप्त समय न मिल पाने से कुछ विषयों की गुत्थियाँ अनसुलझाी रह जाती हैं जो छठी से नौवीं कक्षा तक में सुलझ जानी चाहिए थी। परिणामस्वरूप उन्हीं विषयों से छात्र जी चुराने लगते हैं जिनसे उनका भविष्य बनता है। दसवीं–बारहवीं का परिणाम सम्मानजनक नहीं रहता। जिन युवकों को पूरे देश के छात्रों के साथ किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना होता है उन्हें उसके लिए हिंदी या अंग्रेजी में आवेदन तक करना नहीं आता। सामान्य ज्ञान का स्तर रातों–रात नहीं बढ़ाया जा सकता। इसके लिए प्राथमिक कक्षाओं से ही निरंतर अभ्यास अतिआवश्यक है। कक्षा बारहवीं तक यहाँ छात्रों को यह पता नहीं होता कि समाचार पत्र या प्रतियोगिता पत्रिकाएं क्या होती हैं। आज के युग में समाचार पत्र से बढ़कर सामान्य ज्ञान के स्तर को बढ़ाने की कोई औषधि नहीं है। समाचार पत्र का अभाव या ज्ञान अर्जन में कम लगाव इन युवकों को अन्य प्रतियोगी छात्रों के समूह में मूक रहने पर विवश करता है। ऐसी स्थिति में निराशा ही हाथ लगती है। उदाहरण के लिए किसी राष्ट्रीयकृत बैंक या राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की प्रतियोगिताओं में रोजगार कार्यालय का पंजीयन नहीं मांगा जाता। देश का कोई भी बारहवीं उत्तीर्ण युवक आवेदन कर सकता है परंतु सफल तो वही होगा जो अपने बुद्धिबल का वांच्छित प्रदर्शन कर सकेगा।

अपने वर्तमान शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए हमें कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सर्वप्रथम हमें अपने शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक व्यक्तित्व को सुधारना होगा। इसके बिना हम अस्वस्थ हैं। माध्यमिक तथा उच्चतर कक्षाओं में पढ़ रहे या पढ़ाई छोड़ चुके या पढ़ाई कर चुके अधिकांश छात्र धूम्रपान, गुटका, खैनी और प्लास्टिक की थैली में रम गए हैं। कुछ तो भाँग और चरस भी

पी रहे हैं। फलस्वरूप छाती की हड्डियाँ दूर से गिनी जा सकती हैं। आँखों में गड्ढे पड़ गए हैं। चेहरे की कांन्ति विलुप्त होकर बंदर मुखाकृति बन गई है। यौवन पूर्व बुढ़ापा उन्हें घेरे बैठा है। ये युवक सेना में भर्ती होने जाते हैं तो दो किलोमीटर की दौड़ समय पर पूरा नहीं कर सकते। कई युवा तो बीच में हाँफते हुए बाहर आ जाते हैं। जो दौड़ में सफल हो जाते हैं वे सामान्य ओब्जेक्टिव टाइप टेस्ट में रह जाते हैं। फिर खिसियाते हुए कहते हैं,.....हमारी एप्रोच ही नहीं थी, जिनकी थी वे ही पास हुए। ..आज देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है, फिर भी यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि योग्यता का फल देर–सबेर अवश्य मिलता है। पहले हम स्वयं को योग्य तो बनाएं। महामहिम पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अबुल पाकिर जैनुलब्दीन अब्दुल कलाम का उदाहरण देखें। गरीबी और अभाव के कटीले तार उन्हें नहीं उलझा सके। देश का सम्मान बढ़ाते हुए वे धनुषकोटी से राष्ट्रपति भवन तक पहुँच गए। भ्रष्टाचार का नासूर ऐसे कर्मठ लोगों को नहीं बंधता। ऐसे कई उदाहरण हैं। हम सकारात्मक सोच बनाऐं बस! बापू कह गए, ''बेरोजगारी उनके लिए है जो काम नहीं करना चाहते। व्यथ का तर्क न करें क्योंकि इससे लक्ष्य अदृश्य हो जाता है।''

समय का सदुपयोग अवश्य फलदाई होता है। एक क्षण भी बेकार नहीं जाना चाहिए। अध्ययन करें तथा प्रतियोगिता पुस्तकें और समाचार पत्र मिल–जुल कर खरीदें, नोटबुक में लिखने तथा डिक्शनरी (शब्दकोष) देखने की आदत डालें। समाचार अवश्य सुनें। टेलीविजन छोड़ें, बिजली नहीं है मत कहें, लालटेन और दीए की रोशनी में भी लोग आगे बढ़े हैं। निंद्रा–तंद्रा–आलस्य–भय त्यागें तथा अपने पर दया मत करें। जब हमें कहीं पहुँचना होता है, हम रास्ते से वापस नहीं आते। देर–सबेर मंजिल पर अवश्य पहुँचते हैं। यदि आप नियमित तैयारी में जुट गए तो शीघ्र ही परिवर्तन दिखाई देगा।

कुछ पाने के लिए हमें अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। समय किसी को नहीं मिलता, समय तो निकाला जाता है। आपने पिछले चौबीस घंटे कैसे बिताए जरा उन पर सोचें। ईमानदारी से सोचने पर पता चलेगा कि बहुत समय यों ही चला गया। अध्ययन का कार्य कल पर न छोड़ें। कल भी तो अध्ययन करना है। इससे समझौता कैसा? लोगों ने विषम परिस्थितियों में झंडे गाड़े हैं। सफलता की सीढ़ियाँ सकरी ओर टेढ़ी होती हैं।

स्कूल–कॉलेज और अध्यापकों के दोष ढूंढ़ने से भी लाभ नहीं होगा। यहाँ विजय का रास्ता ही मददगार हो सकता है। स्थ. ानीय राजकीय शिक्षण संस्थाओं को ही पूजा स्थल की तरह श्रद्ध ेय समझना होगा। अध्ययन की तुलना हम एक समबाहु त्रिभुज से कर सकते हैं। अध्ययन रूपी इस त्रिभुज की तीनों भुजाओं का जब तक एक समान सहयोग नहीं होगा, फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। छात्र–अभिभावक–शिक्षक इस त्रिभुज की तीन भुजाएं हैं। इन तीनों में सबसे अधिक, परिश्रम छात्र को ही करना पड़ेगा क्योंकि फल उसकी ही झोली में गिरना है। दूसरी भुजा अभिभावकों की है जिन्हें अपने छात्र–छात्रा पर पैनी दृष्टि रखनी होगी। पिता–चाचा–ताऊ को अपने बच्चों से बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू, खैनी तथा थैली नहीं मंगानी चाहिए और न उनसे हुक्का भरवाना चाहिए। सत्य तो यह है कि बड़ो को भी इन जहरीली वस्तुओं का त्याग करना चाहिए। यदि अपने बच्चों से ही जहर मंगाएंगे तो उन्हें बचाएंगे कैसे! बच्चे अक्सर बीड़ी के बंडल को खोले बिना ही पीछे से बीड़ी खींच कर निकाल लेते हैं या अभिभावकों की जेब से चुरा लेते हैं। कभी–कभी छात्रों के बस्तों पर दृष्टि डालनी चाहिए। समय रहते ही बच्चों को समझाकर राह भटकने से बचाया जा सकता हैं।

अभिभावकों की जिम्मेदारी रोटी–कपड़ा–स्कूल भर्ती तक ही सीमित नहीं हैं। उन्हें देखना चाहिए कि उनका छात्र नियमित रूप से

स्कूल–कालेज जा रहा है। वह घर से प्रतिदिन जा रहा है परन्तु वहाँ पहुँच भी रहा है या नहीं।

छात्र प्रगति की तीसरी भुजा अध्यापक है। कुछ के कारण सभी अध्यापकों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। ऐसे भी अध्यापक हैं जो पूर्ण ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य निभाते हैं। बदलते हुए परिदृश्य में अध्यापक अपने को असुरक्षित समझने लगे हैं। कक्षा में यदि छात्र ध्यान न दें, कार्य न करें, गैरहाजिर रहें या शरारत करें तो अध्यापक इन दुर्योधनों को दण्डित नहीं करते क्योंकि बात का बतंगड़ बनने पर विभाग, अभिभावक तथा छात्र कोई भी उनका समर्थन नहीं करेगा। यदि छात्र–अभिभावक सहयोग करें तो अध्यापक अवश्य करिश्मा कर सकते हैं। इतिहास साक्षी है उत्तरांचल में कई अध्यापकों ने त्याग–परिश्रम के बल पर विद्यालय का नाम तो ऊँचा किया ही है, लोगों के दिलों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

अंधविश्वास और रुढ़िवाद के अनगिनत दलदल भी यहाँ पग–पग पर हैं। यहाँ का युवा भी इन दलदलों में धँसा हुआ है। युवा पीढ़ी को इन दलदलों को पहचानना पड़ेगा। अध्ययन से मन न लगने, परीक्षा में असफल होने, स्वास्थ्य कमजोर होने, बेरोजगार रहने तथा कुंठिन रहने पर युवा वर्ग बड़ों के पदचिंहों पर चलते हुए–हाथ दिखाने, पूछ करने तथा जागर आयोजन कराने वाले सलाहकारों का शीघ्र शिकार हो जाता है। इससे कुछ भी लाभ नहीं होता सिवाय धन और समय की बर्बादी के। उत्तरांचल में पग–पग पर पुच्छारी–पुच्छारिनों की भरमार है। जब हम उनसे पूछेंगे तो वे कुछ तो बताऐंगे ही। वे हमारे पास नहीं आते हम उनके पास जाकर भ्रम की सांकलों में बध कर वापस आते है। स्मरण रहे योगेश्वर श्री कृष्ण की वाणी भगवद गीता में स्पष्ट लिखा है कि कर्म के सिवाय जीवन में कोई दूसरा रास्ता नहीं है। हमें अपने दृढ़ संकल्प रूपी धनुष से रूढ़िवाद और अंधविश्वास रूपी जयद्रध का वध स्वयं करना होगा।

अंतिम नहीं, परंतु अंत में कहना चाहूँगा कि मनोबल ने बढ़कर कोई ताकत नहीं होती इसे गिरने न दें। हताश न हों। अध्ययन करें जानकारी बढ़ाऐं। खाली समय में नकदी/मौसमी फसल उगाने में परिवार का सहयोग करें। पर्वतीय क्षेत्रों के लिए आधुनिक बीजों का अनुसंधान हो चुका है। पारंपरिक बीज तथा कृषि की विधि में बदलाव लाऐं। कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर से संपर्क स्थापित करें। आपके क्षेत्र में क्या परियोजनाएं आरंभ की जा सकती हैं, सभापति के सहयोग, क्षेत्र विकास अधिकारी या ब्लॉक प्रमुख को लिखित रूप में दें। अब तो विधायक भी उन्नीस से बढ़कर सत्तर हो गए हैं। हमारी बात उन तक जा सकती है। 'कुछ नहीं होगा' मत कहें। शुरू तो करें। किसी को तो शुरूआत करनी है। पहल करने में हिचक कैसी? कुटीर अथवा लघु उद्योग लगाकर आप स्वरोजगार उत्पन्न कर सकते हैं। पेड़ लगाते ही फल नहीं मिलता। परिश्रम और लगन से सफलता अवश्य मिलती है। कठिनाई अवश्य आएगी। सड़कों का अभाव उद्योगों के पनपने में मुख्य बाधक है। यदि पहल तथा दौड़–धूप करें तो आप अपने गाँव को सड़क से जोड़ सकते हैं।

जीवनयापन का अंतिम विकल्प है पलायन। रोजगार के अभाव में ही पहाड़ से पलायन जारी है। वैसे रुचि तथा योग्यता के अनुसार घर छोड़ने में हिचक कैसी! हरिऔध की कविता 'बूँद' (ज्यों निकल कर बादलों की गोद से–) यही प्रेरित करती है, पलायन कर रोजगार पाना टेढ़ी खीर है। पलायन से महानगरों में पहुँचे युवाओं को बहुत पापड़ बेलने के पश्चात कोई मामूली सा कार्य ही मिल पाता है। यहाँ पहुँच कर युवकों को जीरो से अपना जीवन शुरु करना पड़ता है। यहाँ की शैली में ढलकर पहले कुछ हुनर सीखना पड़ेगा तब कहीं जीवन यापन का जरिया बनता है। यहाँ भोजन, आवास, यातायात एवं प्रशिक्षण पर इतना व्यय हो जाता है कि घर के लिए बचत करना आसान नहीं होता। कुल मिलाकर शुरुआती दौर काँटों से भरा होता

है परंतु इन कांटों में फूल खिलने की आशा से ही पलायन की पीड़ा को सहा जा सकता है। ने ठीक ही कहा हैः 'नर होने निराश करो मन को, बस कामकरो कुछ काम करो!

♦♦♦

हम उत्तराखण्डी

छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी
नये दौर में लिखेंगे हम मिलकर नयी कहानी
हम उत्तराखण्डी हम उत्तराखण्डी.....(2)

आज पुरानी रूढ़ियों को तोड़ चले हैं
क्या देखें उस सिस्टम को जिसे छोड़ चुके हैं
चाँद के दर पर जा पहुँचा है आज जमाना
नये जगत से हम भी नाता जोड़ चुके हैं।
नया खून है नयी उमंगें अब है नयी 'उत्तरायणी'
हम उत्तराखण्डी हम उत्तराखण्डी.....(2)

आओ मेहनत को अपना ईमान बनायें
बेईमानी को राजकाज से दूर भगायें
बद्री, केदार, बागनाथ की देवभूमि को
सपनों से भी प्यारा उतराखण्ड बनायें
नया खून है नयी उमंगे अब हो नयी कहानी
हम उत्तराखण्डी हम उत्तराखण्डी.....(2)

उत्तराखण्ड के युवाओं के लिए उपलब्ध रोजगार के अवसर

रमेश चन्द्रा, Ex-I.G. &
एस॰ पी॰ पोखरियाल, EX-DIG CRPF
केशव सुयाल, DIG BSF)

निम्नलिखित आंकड़ों पर गौर करिए–

(i) भारत में पच्चीस वर्ष से कम आयु की जनसंख्या 60.5 करोड़ है।

(ii) 10 से 19 वर्ष तक की आयु समूह में 20.5 करोड़ संख्या है।

(iii) 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी जबकि अमेरिका की औसत आयु 40 वर्ष यूरोप की 46 वर्ष व जापान की 47 वर्ष होगी।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ के आँकड़ों के मुताबिक विश्व में मजदूरों की जनसंख्या में 4 प्रतिशत कमी होगी चीन में यह कमी 5 प्रतिशत होगी लेकिन भारत में इस संख्या में 32 प्रतिशत की वृद्धि ऑकी गई है।

यद्यपि अन्तराष्ट्रीय परिपेक्ष में रोजगार के बहुत अच्छे अवसर दृष्टिगोचर नहीं होते तथापि भारत में सरकारी व उद्योग धंधों में रोजगार की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि अपेक्षित है। युवाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे रोजगार के अवसरों व आवश्यक योग्यताओं के बारे में जानकारी रखें और अपने इच्छित रोजगार के लिए समय पर अच्छे दर्जे की तैयारी करें।

उपरोक्त ऑकड़ों के परिपेक्ष्य में, युवा वर्ग को रोजगारों के लिए आवश्यक योग्यता उपलबध कराने के उद्देश से केन्द्र व राज्य सरकारें, स्किल डेवलपमेन्ट की योजनाएँ आरम्भ कर रही है।

अधिकांश रोजगारों की तैयारियाँ 12वीं कक्षा के पश्चात आरम्भ की जा सकती है। कुछ ही रोजगार है जिनके लिए स्नातक या स्नातकोत्तर शिक्षा की आवश्यकता होती है। अतः रोजगार के क्षेत्र में आगामी वर्षों में सफलता के लिए युवाओं को 10वीं अथवा 12वीं कक्षा के पश्चात् ही व्यक्तिगत या संस्थागत तरीके से अच्छी तैयारी करनी आवश्यक होगी।

अवसरों की उपलब्धता

(a) केन्द्र सरकार के रोजगार :– केन्द्र सरकार में निम्न सर्विस व पदों पर भर्तियॉ होती है।

(i) केन्द्रीय सिविल सेवा, समूह अ एवं ब

(ii) केन्द्रीय कनिष्ठ वर्ग सेवा समूह स

(iii) रक्षा विभाग में थल, वायु एवं नौ सेना में सेवाऐं

(iv) केन्द्रीय सुरक्षा बलों में सेवाऐं:– बी॰एस॰एफ॰, सी॰आर॰पी॰एफ॰, सी॰ आई॰ एस॰ एफ॰, आई॰टी॰बी॰पी॰ व एस॰ एस॰ बी॰

(v) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में – ए॰ ई॰, जे॰ई॰, सर्वेयर, ड्राफ्टमैन, लिपिक सेवा।

(vi) इंजिनियर व स्वास्थ्य विभागों में सेवाऐं।

(vii) उच्च शिक्षा विभाग में पाठन, पुस्तकालयध्यक्ष प्रयोगशाला सहायक, व लिपिक वर्ग में सेवाएं।

(viii) डाक व तार विभाग में टेक्नीशियन व लिपिक वर्ग में।

(ix) रेलवे विभाग में–परिचालक, मैकेनिकल, इलेक्ट्रीकल सि. विल इंजिनियरिंग व लिपिक वर्ग में।

(x) वैज्ञानिक शोध विभाग।

राज्य सरकारों में रोजगार :–

राज्य सरकारों में मुख्यतः निम्न विभागों में रोजगार अवसर उपलब्ध है।

(i) प्रादेशिक प्रशासनिक सेवा

(ii) पुलिस सेवा

(iii) राज्य वन सेवा

(iv) राज्य शिक्षा विभाग।

(v) प्रादेशिक स्वास्थ्य विभाग।

(vi) लोक निर्माण विभाग।

(vii) राज्य बिजली विभाग।

(viii) राज्य टूरिज्म विभाग।

(ix) राज्य कृषि विभाग।

(x) राज्य सिंचाई विभाग।

पब्लिक सेक्टर अन्डर ट्रेकिंगस में :–

प॰ से॰ अ॰ में निम्नलिखित रोजगार के अवसर उपलब्ध है

(i) व्यवसायिक प्रबंधनः– मानव संसाधन, पर्सनल, वित्त, मार्केटिंग व सेल्स।

(ii) टेक्नीकल सेवाऐंः– शोध एवं निकास, डिजाईन, उत्पादन, गुणवत्ता।

(iii) कार्यालय प्रबंधन– कार्यलय सहायक, आशुलिपिक व टंकण

निजि व्यवसाय :–

निजि व्यवसायों को निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(i) सत्कार सेक्टरः– होटल व रेस्टोरैन्ट प्रबंधन, शैफ व वेटर्स, टूर आपरेटर व टूर गाईड।

(ii) थोक व्यापारः राशन व घरेलू सामान, सामान्य वस्तुऐं, कपड़ा स्टेशनरी, डेरी पोल्ट्री व बेकरी उत्पादन, दूध व जूस बार।

(iii) खुदरा व्यापारः राशन व घरेलू सामान, सामान्य वस्तुऐं, कपड़ा स्टेशनरी, डेरी पोल्ट्री व बेकरी उत्पादन दूध व जूस बार।

(iv) ट्रेड शॉपः– फोटोग्राफी, मोटर मैकेनिक, कारपेन्टी, प्लम्बिंग।

(v) सचिवीय सेवाऐंः– टाइपिंग, प्रिंटिंग, फोटोकॉपी करना, पब्लिसिंग, जिल्द चढ़ाना।

(vi) ऑर्गेनिक खेतीः– ऑर्गेनिक खेतीः ऑर्गेनिक सब्जियाँ, फल, व फूलों की खेती।

5. बॉछनीय ट्रेनिंग कोर्सः

व्यवसायिक क्षेत्र में रोजगार पाने के लिए निम्न में से कोई ट्रेनिंग

कोर्स करना वॉछनीय होगा।

(i) लोकोमोटिव, एयरोनॉटिव, मैरीन इंजनियरिंग से संबंधित डिग्री/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट कोर्स।

(ii) मैकेनिकल, इलैक्ट्रीकल इलेक्ट्रानिक्स, सिविल या इंजिनियरिंग से संबंधित डिग्री/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट कोर्स।

(iii) कम्प्यूटर सांईस से संबंधित डिग्री /डिप्लोमा/ सर्टिफिकेट कोर्स।

(iv) बेल्ड करना, मोडना।

(v) डॉफ्ट्रमैनशिप व सर्वेयर की ट्रेनिंग।

(vi) कम्प्यूटर पर टाइप करना व डाटा एंट्री करना।

(vii) व्यवसायिकता।

(viii) सत्कार क्षेत्रः– होटल व रेस्टोरैन्ट प्रबंधन, खाना बनाना व वेटर का कार्य, टूर आपरेटर व टूर गाईड

(ix) लेखा व बहि का कार्य।

(x) कम्पनी प्रतिनिधि का कार्य।

विभिन्न सेवाओं/रोजगारों के लिए योग्यता विज्ञापन व परीक्षा पद्यतियाः

विभिन्न रोजगार हेतु योग्यता, विज्ञापन की विधि, परीक्षा पद्यति के बारे में सामान्य जानकारियाँ निम्नलिखित सारिणी में दी गई हैं। ये जानकारियॉ सामान्य प्रकार की हैं। सही सूचनाएँ विज्ञ. ापनों में देखी जा सकती है।

(a) केंद्रीय सरकार के अंतर्गतः

क्र. सं.	1	2	3	4	5	6	7
	सेवा रोजगार	**प्रवेश स्तर**	**शैक्षिणिक योग्यता**	**आयु**	**विज्ञापन विधि**	**प्रतियोगिता में सम्मिलित होने की विधि**	**परीक्षा पद्धति**
1	भारत सरकार ग्रुप अ एवं ब	असिस्टेंट कमिष्नर/ असिस्टेंट एस॰पी॰ व अन्य प्रवेष स्तरीय पद	स्नातकोत्तर/ स्नातक	18 से 28 वर्ष अनुसूचित जाति व जन जाति के लिए 5 वर्ष व अन्य पिछड़ें वर्गों की छूट	श्रोजगार समाच. ार/समा चार पत्र, टेलि. विजन	आवेदन द्वारा	मुख्य परीक्षा, इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच।
2	केन्द्रीय सरकार वर्ग स परीक्षा	डेस्क ऑफिसर/ ऑफिस असिस्टेंट	स्नातक/ 10+2	18 से 28 वर्ष अनुसू. चित जाति व जनजाति के लिए 5 वर्ष व अन्य पिछड़े वर्गों के लिए 3 वर्षों की छूट	रोजगार समा. चार/ समाचार पत्र, टेलि. विजन	आवेदन द्वारा	लिखित परीक्षा, इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच।
3	सैन्य बलों में सेवाए	NDA, IMA, CDS, SSC, टेक्नीकल इन्ट्री	10+2 / स्नातक	18 से 22 वर्ष	श्रोजगार समा. चार/ समाचार पत्र, टे. लिविजन	आवेदन द्वारा	लिखित परीक्षाः सामान्य ज्ञान, निबन्ध लेखन, एप्टीट्यूड टेस्ट द्वारा' समूह कार्य व डिस्केषन, अधिकारियों के लिए, इन्टरब्यू, डॉक्टरी जॉच
	सिपाही एयरमैन सेलर	सिपाही एयरमैन सेलर	10वीं/10+2	18 से 22 वर्ष	रोजगार समा. चार/ समाचार पत्र, टे. लिविजन	ऑनलाईन रजिस्ट्रेषन पष्चात्	लिखित परीक्षा सामान्य ज्ञान, निबन्ध लेखन, एप्टीट्यूड टेस्ट, इन्टरब्यू, डॉक्टरी जॉच

4	केन्द्रीय सुरक्षा बल / अद्ध ैसैनिक बल	अधिकारी कनिष्ठ अधि ाकारी हैंड कगकर्ता स्टेबल कॉस्टेबल	स्नातक स्नातक 10+2 10 वीं	18 से 24 वर्ष 18 से 24 वर्ष 18 से 23 वर्ष 18 से 23 वर्ष अनुसू. चित जाति व जनजाति के लिए 5 वर्ष व अन्य पिछड़े वर्ग के लिए 3 वर्ष की छूट	रोजगार समा. चार / समाचार पत्र, टे. लिविजन	आवेदन से	शारीरिक मापदंड योग्यता लिखित परीक्षा इन्टरव्यू, अधिकारियों के लिए डॉक्टरी जॉच
5	केन्द्रीय कनिष्ठ सहायक	कार्यालय सहायक व समकक्ष	18 से 28 वर्ष	स्नातक / 10 +2	श्रोजगार समा. चार / समाचार पत्र, टे. लिविजन	आवेदन से	लिखित परीक्षा इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच

(ए) राज्य सरकार के अंतर्गतः

क्र. सं.	1	2	3	4	5	6	7
	सेवा रोजगार	प्रवेष स्तर	शैक्षिणिक योग्यता	आयु	विज्ञापन विधि	प्रतियोगिता में सम्मिलित होने की विधि	परीक्षा पद्यति
1	ब ग्रुप बी॰	एस॰डी॰एम, एसडीपीओ, नायब तहसीलदार, बी॰डी॰ओ॰ और अन्य पोस्ट	स्नातक	18 से 28 वर्ष सामान्य छूट के साथ	श्रोजगार समाचार / समा चार पत्र, टेलि. विजन	आवेदन से	लिखित परीक्षा इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच
2	प्रादेषिक	कनिष्ठ सेवाऐं लिपिक वर्ग तथा अन्य	स्नातक 10+2□	18 से 28 वर्ष सामान्य छूट के साथ	रोजगार समाचार / समाचार पत्र, टेलि. विजन	आवेदन से	लिखित परीक्षा इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच

3	पब्लिक सेक्टर	सहायक मैनेजर, सुपरवाईजर, मानव संसाधन पर्सनल, वित माकि. ंटिंग, सेल्स डिजाइन प्रोडक्सन, गुणवत्ता सोधन विकास, कार्यालय सहायक, आषुलिपिक टाईपिस्ट	एम॰बी॰ए॰, बी॰ टेक डिग्री/ डिप्लोमा, स्नातक, 10+2	18 से 28 वर्ष उपरी सीमा भिन्न हो सकती है।	श्रोजगार समाचार / समाचार पत्र, टेलि. विजन	आवेदन से	थ्लखित परीक्षा इन्टरव्यू, जॉच
4	स्रकारी क्षेत्र	स्हायक प्रबंधन, सुपरवाईजर, स्वागत कार्यालय, सहायक, वेटर, हाउस कीपिंग, सहायक	होटल मैनेजमेन्ट डिप्लोमा, प्रोफेसिंऐंसी सार्टिफिकेट	18 से 28 वर्ष उपरी सीमा भिन्न हो सकती है।	रोजगार समाचार/ समाचार पत्र, टेलि. विजन	कैम्पस सलेक्षन अथवा आवेदन से	लिखित परीक्षा व्यवसायिक परीक्षा इन्टरव्यू, डॉक्टरी जॉच

(ग) निजी व्यवसायः–

होटल व रेस्टोरेन्ट	वांछनीय विषय	बैकअप सपोर्ट	टेक्नीकल सपोर्ट
	1. फिक्स व यातायात के ग्राहक 2. सीजन व पूरे वर्ष का आवागमन 3. ग्राहकों की खर्च क्षमता 4. सामाग्री की उपलब्धता 5. ट्रेनिंगषुदा कर्मचारियों की उपलब्धता 6. मुख्य आफिस, हाउस कीपिंग व किचन व रेस्टोरेन्ट व्यवस्था 7. एकाउन्ट व रजिस्टरों का रख रखाव, इन्सपेक्षन व आडिट	1. मार्केट सर्वे 2. भूमि व धन की व्यवस्था 3. पक्की सड़क की व्यवस्था 4. यातायात के साधन	टूरिज्म व इंडस्ट्रीज विभाग से।

थोक व्यापार	मदों के रूप	तरीका	बैकअप सपोर्ट
	प्रोविजन्स, ग्रोसरी डेरी व बेकरी उत्पाद, खाना पकाने का तेल, सामान्य सामाग्री – नहाने व कपड़े धाने का साबुन, तेल, कीम व पाउडर, साफ–सफाई की सामाग्री, खनिज तेल, ब्छळ व कुकिंग गैस	स्माग्री को मार्केटिंग मुख्य कार्यालय से संपर्क, सुरक्षा धनाराषि को जमा करना, भवन अथवा जगह का प्रबंध, कार्य के लिए धनराषि, ट्रेनिगषुदा स्टाफ का बन्दोबस्त।	व्यवसायिक ट्रेनिंग, वित की बैकों या उद्योग विभाग से व्यवस्था
खुदरा व्यापार		व्यपारियों या डीलरों से संपर्क, सिक्योरिटी डिपोजिट का बन्दोबस्त, भवन व धनराषि का इन्तजाम, ट्रेनिंगषुदा स्टाफ	व्यवसायिक ट्रेनिंग, वित की बैंकों या उद्योग विभाग से व्यवस्था

(घ) ट्रेड शॉप

फोटोग्राफी	मदों	तरीका	बैकअप स्पोर्ट
	स्थिर व चलचित्रण डिवेल. पिंग, एडिटिंग व अलबम बनाना	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व ध नराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था
मोटर मैकेनिक	अलग–अलग प्रकार की गाड़ियों के विभिन्न असेम्ब. लिंग का सामान्य व विषिष्ट कार्य, इलैक्ट्रीकल ईधन, कूलिंग सिस्टम, तैंलों की बदली व टायर रोटेषन	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व धनराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था
बेल्डर व टर्नर	काटना व छेद करना घिसना व फिट बैठाना, खोखले व ठोस ट्यूबों को मोड़ना	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व धनराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था
कार्पेन्टरी	टलग–अलग प्रकार के आ. ैजार व उनके कार्य, काटना, चीरना व जोड़ना कील मारना फ्रेम व स्टैंड बाक्स रैक व कुर्सी, टेबल, सोफा, दरवाजे, फ्रेम व रेलिंग।	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व धनाराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था
प्लम्बिंग	काटना, छेद करना, घिसना, व फिट करना, किचन व दयलिट की फिटिंग्स, नयें टूल्स की जानकारियॉ व प्रयोग।	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व धनाराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था

सेक्रेटरिट सर्विसेज	टाइपिंगः हिन्दी व अंग्रेजी पिंटिंगः छायाप्रति : ब्लैक एण्ड व्हाइट कलर छायाप्रति करना। पब्लिसिंग : बड़ी प्रिंटिंग व पब्लिसिंग मशीनों पर काम	ITI/ट्रेड टेनिंग भवन व धनाराषि का प्रबंध	उद्योग विभाग से व्यवस्था

आर्गेनिंक खेतीः–

अनाज फलों व सब्जियों की डिमाण्ड व सप्लाई गैप को भरने के लिए जिनेटीकली मोडीफाई बीजों का बिस्तार से जेविक खेती भी व्यवसायिकता का एक नए विषय के रूप में उभर रहा है।

जैविक सब्जियॉः–	आवश्यक ज्ञान	बैकअप सपोर्ट
	मिट्टी के प्रकार व उपयोगिता, बीजो का रख रखाव, बुवाई का मौसम, सिंचाई की विवियॉ, खाद व उर्वरक, घास व वीड्स, पैराराईट व फुन्जी	भूमि व धन, सिंचाई के साधन, अच्छे बीजों की उपलब्धता, यातायात के साधन, विपणन सपोर्ट, कृषि विभाग विकास अधिकारी
फलों का उत्पादनः–	मिट्टी के प्रकार व उपयोगिता, खाद व उर्वरक पैरासाईअ व फुन्जी, खट्टे व मीठे फल, पौधे लगाने का मौसम, फूलने व फलने का मौसम, बिमारियों में दवाईयों का छिड़काव करना व लम्बे समय तक रखना, जूस व जाम।	भूमि व धन, सिंचाई के साधन, अच्छे बीजों की उपलब्धता, यातायात के साधन, विपणन सपोर्ट, कृषि विभाग विकास अधिकारी
फूलों का उत्पादन	मिट्टी के प्रकार व उपयोगिता, खाद व उर्वरक फूलों के प्रकार, बोले का मौसम, आम बिमारियॉ व उनसे बचाव, सिंचाई व डिड़काव, पैक करना व लम्बे समय तक रखना	भूमि व धन, सिंचाई के साधन, अच्छे बीजों की उपलब्धता, यातायात के साधन, विपणन सपोर्ट, उद्यान विभाग विकास अधिकारी

सामान्य तैयारियॉ :–

इस प्रकार विभिन्न सेवाऐं व व्यवसाय के लिए विषेष प्रकार की तैयारियॉ आवष्यक है। लेकिन व्यक्तित्व विकास के लिए पृथक व विषिष्ट तैयारी आवष्यक है जो निम्नवत् है

1. अपने अध्ययन के विषयों की जानकारी का विष्वास।

2. अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं की सूचना।

3. राष्ट्रीय व प्रान्तीय स्तर पर चल रहे सम – सामयिक प्रसंगं की जानकारी।

इन मदों की पूर्ति के लिए अपने अध्ययन की पुस्तकों का समय – समय पर पुनर्वलोकन, समाचार पत्र व पत्रिकाओं का सुचारु रूप से अध्ययन व सम – सामयिक विषयों पर चर्चाऐं करना व सुनना आवष्यक होता है।

♦♦♦

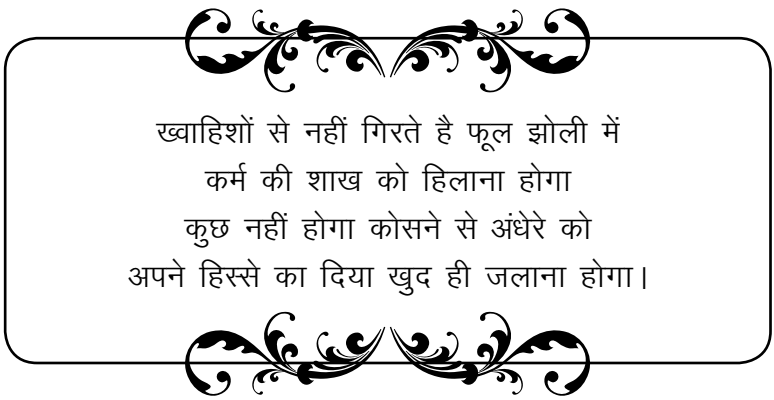

प्रतियोगिता–परीक्षाओं हेतु आवश्यक तैयारियां

कृश्न आर्य, (से.नि.) आई.ए.एस.
(पूर्व अध्यक्ष लोक सेवा आयोग)

राजा–महाराजाओं और सामन्तों के दौर में मुख्य प्रशासनिक पदों पर राजघरानों और उनके रिश्तेदारों का ही एकाधिकार होता था। इस संदर्भ में नागरिकों की योग्यता–अयोग्यता कोई मायने नहीं रखती थी परंतु आम नागरिक योग्य होने के बावजूद भी इन पदों पर यदा–कदा ही रखे जाते थे। अंग्रेजों के शासन काल के प्रारंभिक दौर में उच्च पदों पर अंग्रेज व्यक्ति ही विराजमान रहते थे। निम्न पदों पर प्रायः उनके चाटुकारों को रखा जाता था। गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया एक्ट, 1919 के लॉ–कमीशन ने सरकारी अधिकारियों के चयन हेतु एक निष्पक्ष ऐजेंसी के गठन की सिफारिस की, जो योग्यता के आधार पर सरकारी अधिकारियों का चयन कर सके। इसके आधार पर सन 1926 में प्रथम रॉयल पब्लिक सर्विस कमीशन की स्थापना हुई। स्वतंत्रता के बाद सन 1950 में भारतीय संविधान के अन्तर्गत विशेष प्रावधानों के साथ संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) एवं राज्यों में प्रदेश लोक सेवा आयोगों का गठन किया गया। संविधान के अनुछेद 16 के अन्तर्गत राजकीय सेवाओं में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, प्रदेश, निवास स्थान और लिंग के भेदभाव के बिना भारत देश के नागरिकों को प्रतियोगिताओं में भाग लेने के समान अवसरों का मौलिक अधिकार है। चयन योगताओं व समानताओं के आधार पर निष्पक्ष रूप से किया जाना आवश्यक है, ताकि किसी तरह का पक्षपात, भाई भतीजा–वाद, राजनैतिक दबाव व रिश्वत–खोरी का सहारा न लिया जा सके। संविधान के अनुच्छेद 16 (4) के अन्तर्गत सामाजिक व आर्थिक रूप से कमजोर और पिछडे समुदाय

के लोगों को सरकारी सेवाओं में उनकी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व मिल सके इसलिए पदों में अनुपातिक आरक्षण करने के लिए सरकारों को स्वतंत्रता के साथ–साथ संवैधानिक बाध्यता है, ताकि सदियों से चले आ रहे आर्थिक, समाजिक व शैक्षणिक भेदभाव और शोषण जनित पिछड़ेपन से उन्हें मुक्त कर उनको प्रगति एवं विकास का अवसर प्रदान किया जा सके और वे समाज में बराबरी तथा सम्मान का दर्जा पा सकें एवं समाज के अभिन्न अंग बन सकें। इसके अलावा सम्पूर्ण चयन प्रक्रिया में योग्ता व समानता ही चयन के एकमात्र आधार तथा मूलमंत्र हैं। संविधान में लोक सेवा आयोगों की पूर्ण स्वायता के समुचिति प्रावधान किये गये हैं।

वर्तमान प्रणाली में हर प्रकार की सेवाओं में प्रतियोगिता परीक्षाओं की अनिवार्यता निश्चित है। पब्लिक सैक्टर कम्पनियों के लिए पब्लिक इंटर प्राइजेज सलेक्शन बोर्ड के द्वारा प्रतियोगिता परीक्षओं का आयोजन होता है। बैंको के लिए भी इसी तरह के प्रावधान हैं। सार्वजनिक क्षेत्र संस्थानों व कनिष्ठ पदों के लिए स्टाफ सलेक्शनबोर्ड या सबोर्डिनेट सर्विसेज सलेक्शन बोर्ड द्वारा चयन प्रक्रिया पारदर्शी विधि से आयोजित की जाती है। प्राइवेट सेक्टर में भी विशेष योग्यता, दक्षता व कम्पनी की विशिष्ट–जरूरतों के अनुसार मैनेजमेंट ग्रेज्यूयेट व टक्नीकली क्वालीफाइड लोगों को कठिन प्रतियोगिता से गुजरना पड़ता है, परंतु मैरिट/दक्षता ही चयन का आधार होता है।

रोजगार की तलाश करने वाले युवक–युवतियों के लिए मुख्यतः निम्नलिखित सेवाओं में अवसर तलाश करने की सलाह दी जाती है–

1. **प्रशासनिक सेवा (सिविल सर्विसेज)**– प्रशासनिक सेवायें, पुलिस वन, इनकम टैक्स, सेन्ट्रल इक्सा., आडिट–एकान्टस, रेलवेज, इन्जिनियरिंग, मेडिकल, सेवा, शिक्षण, कृषि, वागवानी, आई.टी.

(कम्प्यूटर संबंधित) इत्यादि।

2. **सेना, एअर फोर्स, नेवी व अर्ध सैनिक बल)** – 'सेना वायु सेना व नेवी से संबंधित सेवाओं में (इंजिनिरिग, मेडीकल कम्यिनकेश, आर्मी सपलाई कोर, एज्यूकेशन कोर, नर्सिंग सेवायें में इत्यादि। बोर्डर स्क्यूरिटी फोर्स, सी.आर.पी.एफ, सी.आई.एस.एफ., आई.टी.बी.पी., एन.एस.सी., इन्टेलीजेन्स, आर.ए.डब्ल्यू।

3. **अधीनस्थ सेवाएं (सबोर्डिनेट सर्विसेज)**– सैक्रेटरियेट सेवायें, पी.ए., राज्य स्तर की रेवन्यू, फारेस्ट, राजकीय विद्यालयों के शिक्षक व पैरामेडिकल स्टाफ इत्यादि।

4. **सार्वजनिक उपक्रम (पब्लिक सैक्टर अन्डर टेकिंग/ सरकारी कम्पनियां)**– करीब 150 हैं, तथा राज्य स्तर पर भी होती हैं यथा इन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन, टूरिज्म कार्पोरशन, हौर्टीकल्चर डिवलप्मेंट कार्पोरेशन इत्यादि।

5. **स्थानीय सरकारी संस्थान (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट संस्थान)**– नगर निगम, जिला परिषद कार्यालय इत्यादि में उपलब्ध सेवायें।

6. **न्याय पालिका**– जूनियर ग्रेड ज्यूडिशियल अधिकारी (मुन्शिफ स्तर पर) विभिन्न उच्च व जिला न्यायालयों में लिपिक, स्टेनो टाइपिस्ट क्लास IV स्टाफ के पद।

7. **बैंक एंव बीमा क्षेत्र (बैकिंग व इन्सोरेन्स सेक्टर)**– प्रोबेशनरी आफीसर, क्लेरीकल पद एवं कैशीयर तथा सेक्यूरीट व चपरासी पद।

8. **राज्य व जिला स्तर कार्यालय**– उपरोक्त केन्द्रीय सरकार के समक्ष लगभग सभी विभागों में रिक्तियां होती हैं। जिला स्तर पर

विकास संबंधित बहुत पद उपलब्ध होते हैं।

9. **विश्व विद्यालय व अन्य शिक्षा संस्थान**– उच्च व माध्यमिक स्तर के लेक्चरर शिक्षकों के सैकड़ों पद उपलब्ध हैं जिनमें अक्सर भर्ती होती रहती है।

10. **निजि सैक्टर**– निजीकरण व वैश्वीकरण (प्राइवेटाइजेशन व गैलोब लाइजेस) के वर्तमान युग में हजारों निजी उद्योग व व्यापारिक कंपनियों ने रोजगार का बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध कराया है। जिसमें इन्जिनियर्स, मैनेजमेंट–ग्रेजुयेटस, कम्प्यूटर व इलैक्ट्रोनिक्स की शिक्षा व ट्रेनिंग प्राप्त युवाओं के लिए अपार अवसर उपलब्ध हैं प्रोडेक्शन, मार्केटिंग, सेल्स, पब्लिसीटी व एच.आर.डी में सैकड़ों प्रशिक्षित (ट्रेन्ड) युवकों की आवश्यकता है।

उपरोक्त सेवाओं के अलावा अन्य कई जगहों पर अवसर उपलब्ध हैं। अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, योग्यता तथा विशिष्ट दक्षता व स्वेच्छा, अनुभव के अनुसार रोजगार के लिए प्रयास करना उपयोगी है। परंतु परीक्षा/प्रतियोगिता हर पद व नौकरी के लिए आवश्यक है। अतः प्रतियोगिता की तैयारी के लिए निम्नलिखित मार्गदर्शी सिद्धांत उपयोगी होंगे।

प्रशासनिक सेवा परीक्षा (सिविल सर्विसेज)– रोजगार की तलाश करने वाले युवाओं में सरकारी नौकरियां सबसे ऊंची पसंद व लोकप्रिय रही हैं, उनमें से प्रशासनिक सेवायें सर्वोच्च स्थान पर हैं। प्रशासनिक सेवायें केवल रोजगार कमाने का साधन मात्र नहीं हैं बल्कि देश–प्रदेश व समाज की सेवा करने का सबसे अच्छा माध्यम हैं, गरीबों, मजबूरो व जरूरत मंदो की मदद का सबसे अच्छा साधन हैं, समाज के पिछडे और कमजोर वर्गों को शोषण व अन्याय के खिलाफ संरक्षण और न्याय दिलाने व उनके उत्थान व प्रगति का एकमात्र जरिया है। परंपरागत तरीके से प्रशासनिक अधिकारी

हमेशा सम्मान व शक्ति के केन्द्र (पावार सेन्टर) माने जाते हैं। सरकारी नीतियों के निर्धारण व कार्यान्वयन में इनकी मुख्य भूमिका रही है। सभी सरकारी नौकरियों में प्रायः जॉब सिक्यूरिटी है, समयबद्ध प्रमोशन, सपरिवार चिकित्सा, लीव–ट्रेवल–कन्सेशन व आवास व परिवहन की सुविधायें मिलती हैं और सबसे अच्छा है सेवानिवृत्ति के पश्चात पेन्शन व महंगाई भत्ता उपलब्ध है जो वृद्ध ावस्था में बहुत बड़ा सहारा है, परिवार व बच्चों पर आश्रित होने से बचाते हैं, स्वावलम्बी व सम्मानित जीवन देते हैं।

राजकीय सेवाओं में खाली हुए (गजेटेड) पदों के लिए लोक सेवा आयोग तथा नानगजेटेड पदों के लिए अधीनस्थ सेवा बोर्ड, समय–समय पर राष्ट्रीय व स्थानीय स्तर के प्रमुख समाचार पत्रों तथा आयोग के वेबसाइट www.ukpsc.gov.in में प्रकाशित किये जाते हैं जिनमें पदों के नाम, रिक्तियों की संख्या, वेतनमान, परीक्षा–पाठ्यक्रम, प्रश्न पत्रों की संख्या, परीक्षा का प्रारूप, परीक्षा शुल्क, आवेदन का प्रारूप, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व ओ.बी.सी. के लिए लागू आरक्षण आदि की संपूर्ण सूचना प्रसारित की जाती है। अतः रोजगार की तलाश करने वाले स्नातक/स्नातकोतर युवाओं को सदा सजग रहना चाहिए, और इन विज्ञप्तियों/विज्ञापनों को गौर से पढ़ना चाहिए और किसी जानकार व्यक्ति के निर्देशन में शीघ्रातिशीघ्र आवेदन पत्र भरने का प्रयास करना चाहिए। आवेदन पत्र सही भरा जाना आवश्यक है। दक्षता के आधार पर परीक्षा साक्षात्मकार में प्रयोग भाषा का विवरण ठीक से दे। फार्म में जन्म तिथि, आरक्षण की श्रेणी व उपश्रेणी, लम्बत व क्षतिजीय **अनिवार्य और विशेष–शैक्षिक अर्हताओं** को बहुत सावधानी से सही प्रकोष्टों (ब्रेकेटस) में भरना चाहिए, इनकी अनेक बार जांच करें। महिला अभ्यार्थियों व विकलांगों को प्रदेश की प्रणाली के अनुसार आरक्षण क्लेम किये वगैर आरक्षण नहीं मिल सकेगा। इस आशय के प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र

निर्धारित प्रारूप में निर्दिष्ट अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित होना चाहिए वरना यह वैध नहीं होगा। पूर्व सैनिकों व स्वतंत्रता सेनानियों के आश्रितों पर भी यह पूर्णतः लागू होता है। सभी तरह के आरक्षण सही कालम में दावा न करने पर आरक्षण का लाभ नहीं मिलेगा।

पूर्णतः भरे गये आवेदन पत्र की फोटोकापी अपने पास रखें तथा फार्म को स्पीड पोस्ट द्वारा अन्तिम तिथि से काफी पहले भेज दें अथवा कम्प्यूटर की सहायता से ऑन लाइन आवेदन करें। और उसकी प्रतिलिपि अपने पास रखें। सेवाओं का क्रमवार चयन समझदारी से करें। प्रशासनिक सेवा (सिविल सर्विसेज) परीक्षा तीन चरणों में होती है।

1. **प्रारंभिक (प्रिलिम्स) परीक्षा**– जो आवेदकों की विशाल संख्या कम करने के आशय से छटनी के बतौर ली जाती है और औब्जैक्टिव (वस्तु–परक) होती है जिसमें दो प्रश्न पत्र **सामान्य ज्ञान**– (अंग्रेजी हिन्दी में दक्षता, समान्य विज्ञान, सामान्य गणित, राष्ट्रीय (स्वतंत्रा) का इतिहास, भूगोल, राजनैतिक प्रणाली, देश की आर्थिक प्रणाली, पर्यावरण इत्यादि)। तथा दूसरा **सी–सैट** (तार्किक–कौशल; अंको की तालिका आदि का विश्लेषण (काम्प्रीहैंशन), निर्णय क्षमता, कम्यूनिकेशन स्किल, वाक–चातुर्य, अंग्रेजी का व्यवहारिक ज्ञान आदि पर आधारित प्रश्न) हर प्रश्न पत्र समय 2 घंटे; पूर्णांक 100 प्रति प्रश्नपत्र होता है। गलत उत्तर पर निगेटिव मार्किंग होती है। उत्तर OMR प्रारूप में दिये जाने होते हैं। प्राप्तांक मैरिट लिस्ट में नहीं जुड़ते हैं परंतु अगली (मुख्य) परीक्षा के लिए कट–आफ मार्क से ऊपर लाने पर ही मौका मिलता है। उत्तर सटीक व स्पीड अच्छी होना आवश्यक है। सामान्य ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत है कुल समय का 60 प्रतिशत इसे तैयार करने में लगाना चाहिए; शेष 40 प्रतिशत सी–सेट की तैयारी में। प्रतिदिन 10 घंटे पढ़ाई जरूरी है।

2. **मुख्य परीक्षा**– बैकल्पिक विषयों के प्रश्न पत्र को हटाकर मुख्य परीक्षा में नौ (9) प्रश्न पत्रों को सम्मिलित किया गया है। जो अनिवार्य है। जिनमें भाषा (सामान्य हिन्दी तथा अंग्रेजी में निबन्ध) भारत का इतिहास, राष्ट्रीय आन्दोलन (आजादी की लड़ाई), समाज एवं संस्कृति, भारतीय राजनैतिक प्रणाली, सामाजिक न्याय एवं अन्तर्राष्ट्रीय–संबंध; भारत एवं विश्व का भूगोल, आर्थिक एवं सामाजिक विकास, समान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, तथा सामान्य अभिरूची एवं आचार शास्त्र शामिल हैं। इन विषयों के साथ–साथ भारतीय संविधान व यू. एन. ओ. का गहन अध्यन आवश्य है। सतंही ज्ञान पर भरोसा न करें। विशेषज्ञों के अनुसार एन.सी.ई.आर.टी. के 10+2 स्तर की पाठ्य पुस्तकों का भली भांति अध्यन लाभदायक होगा। अनेक पुस्तकों के बजाय कुछ स्टेन्डर्ड पुस्तकों को बार–बार ध्यान से पढ़ना अधिक फायदेमंद होगा। विभिन्न विषयों में हिन्दी व अंग्रेजी में निबंध लिखने की खूब प्रक्टिस करें।

आयोग द्वारा समर्थित (एप्रूवड) पाठ्यक्रम के अनुसार सभी विषयों का गहन अध्यन करें। पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों से प्रश्न पूछने का ट्रेन्ड मालूम होगा, उसी अनुसार तैयारी करें। आवश्यक हो तो कोचिंग भी ली जा सकती हैं। जो पढ़ें उसे याद रखें, और अपने उत्तरों में सही तरीके से उस ज्ञान का प्रयोग करें।

3. **साक्षात्कार (इंटरव्यू)**– चयन प्रक्रिया का अगला व अन्तिम चरण है। साक्षात्कार, जिसके लिए रिक्त स्थानों के तीन गुना परीक्षार्थियों को मैरिट के अनुसार, जनरल, एस.सी., एस.टी. व ओ. बी.सी., श्रेणियों से वरीयता क्रम में चयन कर बुलाया जाता है। इस स्तर पर अभ्यर्थियों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, प्रभावी वार्ता कौशल, सामयिक विषयों पर आपका ज्ञान व आपके विचार एवं मत, नेतृत्व कौशल जैसी प्रतिभाओं का परीक्षण करने वाले प्रश्न पूछे जाते हैं,

जिन के जबाव तुरंत, सटीक व और प्रभावशील तरीके से दिये जाने चाहिए, घबराहट व हड़बड़ाहट में गोल–मोल उत्तर न दें। सही उत्तर न मालूम होने पर विन्रमता पूर्वक अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए अगले प्रश्न की प्रतिक्षा करें; परंतु ब्लफ करने की कदापि कोशीश न करें। पूरे वार्तालाप में स्वाभाविक व सरल बने रहें न नर्वस हो और न उत्तेजित। सुरूचिपूर्ण (न बहुत भड़कीले न बहुत डल) परिधान (ड्रेस/सूट) पहनें जो कि इस विशेष अवसर के लिए सर्वोत्तम हो, उसमें प्रेस ठीक से हो, सिलवटें न पड़ी हो। प्रवेश की आज्ञा लें, कुर्सी में बैठने के आग्रह का इन्तजार करें, उसके पहिले बोर्ड के अध्यक्ष व सदस्यों का अभिवाद करें। बैठने का पोस्चर उचित हो, कमर सीधी, सर ऊंचा, नजर चयन बोर्ड के सामने रखे, चेहरे पर प्रसन्नता की झलक हो, पर्सनेल्टी से आत्म–विश्वास भरी विनम्रता परिलक्षित हो। उत्तर में अच्छी शब्दावली का सही उच्चारण के साथ प्रयोग करें। उत्तर देने में आनावश्यक जल्दी न करें थोड़ा समझकर, सोचकर, उत्साहित होकर सटीक जबाव दें। बोर्ड के किसी सदस्य से विवाद न करें। उत्तरों में आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए। हाथों को अनावश्यक तरीके से न हिलाये तथा यदि कोई तकिया–कलाम जिसके आप आदि हों, तो भूल कर भी उसका प्रयोग न करें यथा–यानी कि, मतलब कि इत्यादि। मोबाइल फोन को बंद रखें, गला सूखने पर पीने के पानी का आग्रह कर सकते हैं। यदि किसी प्रश्न का उत्तर न जानते हों तो हतोत्साहित व उदासिन हों; न उसे अपने व्यवहार में झलकने दें। अपने प्रदेश के बारे में अधिक से अधिक जानकारी रखें, यथा मुख्य शहर, नदियां, तालाब, तीर्थस्थल व घटनायें, शिक्षा–संस्थान (यूनिवर्सिटीज एवं अन्य प्रमुख इकाईयां) एरिया, पौपूलेशन, लिटरेसी परसेन्टेज, मुख्य मंत्री, पार्टी इन पावर, इत्यादि व गरीबो, पिछड़े वर्ग के लोगों के प्रति आपका दृष्टकोण क्या और कैसा रहेगा। उनके हितों व विकास के प्रति आपके विचार व

कार्यशैली पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अपने विशेष एकाम्प्लीसमेंट, पुरस्कार, हौबीज के बारे में पूर्ण रूप से तैयार होकर जायें। चयन हो जाने पर आपकी जिम्मेदारियों, कार्यशैली आदि पर विस्तृत जानकारी रखे। अपने विचारों को स्पष्ट शुद्ध शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता जरूरी है। आपकी निष्पक्षता, कर्मठता, सत्यानिष्ठा व इमानदारी जैसे गुणों को जज करने के लिए उचित सवाल पूछे जा सकते हैं। चूंकि साक्षात्कार का कोई निर्धारित पाठक्रम नहीं होता है अतः कुछ भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं, फिर भी करैन्ट एफेयर्स से भली भांति परिचित रहें। भारतीय संविधान व राजनैतिक प्रणाली (प्रजातंत्र) संयुक्तराष्ट्र संगठन, भारत की आर्थिक प्रगति भी भली–भांति पढ़कर जायें, विश्वशांति के लिए प्रमुख खतरों की जानकारी होने से लाभ होगा, विज्ञान में आधुनिक खोजों के बारे में भी जानें प्रमुख खेलों से जुड़ी आवश्यक जानकारियाँ भी पढ़कर जायें।

अन्त में सफलता के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दें–

1. दृढ़ संकल्प हर सफलता की जड़ है और कठोर परिश्रम उस जड़ के लिए खाद और पानी। अतः उठते–बैठते, सोते–जागते यही सोचते रहें कि हमें सिविल सर्विसेज कम्बाइड एग्जाम में सफल होना है। अन्य सारे कार्य रूक सकते हैं परंतु परीक्षा नहीं रुकेगी। समय किसी का इंतजार नहीं करता, समय की कीमत और महत्व समझें। एक पल भी घूमने–फिरने, आमोद–प्रमोद, मनोरंज व विश्राम के नाम पर नष्ट न करें, समय–सारणी बनाकर योजनाबद्ध तरीके से हर विषय पर यथोचित समय दें। हर रोज 8 से 10 घंटे तक पढ़ाई करें। एकाग्रता व मानसिक शांति व संतुलन बनाये रखें। अपने संपूर्ण आत्मविश्वास से मेहनत करें तो, लक्ष हासिल कर लेगें। प्ररिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।

2. हर बात को बारीकी से पढ़े, समझें और याद रखें। हमेशा जागरूक रहें, दो–तीन अच्छे समाचार पत्रों के मुख पृष्ठ व संपादकीय को नियमित रूप से पढ़ें। प्रमुख घटनाओं को नोट करके संभालकर रखें ताकि साक्षात्कार के पूर्व देख सकें। जानकार लोगों से अहम मुद्दों पर वार्तालाप करके अपना ज्ञान व समझ बढ़ायें। टी.वी. सिर्फ समाचारों व सामयिक घटनाओं के लिए देखें। जिन विषयों में आपकी पकड़ अच्छी नहीं, उनमें अपने पुराने प्रवक्ताओं से मदद लें। उनके दिशा–निर्देश के अनुसार चलें। यदि संभव हो तो अच्छी संस्था से कोंचिंग भी ली जा सकती है। जरूरत पड़ने पर गाईडस व कम्पीटिशन मास्टर की मदद भी लें। अर्थात सफलता के हर किसी रास्ते को आजमायें ताकि आप अवश्य सफल हों।

3. एक अच्छे, खुशनुमा, प्रभावशाली, नेतृत्व–कौशल के भरे व्यक्तित्व का निर्माण और विकास करें, बोल–चाल में अच्छे हाव–भाव व आदतों से प्रभावशाली बने। ये गुण जन्मजात न होने पर भी बात–चीत, व्यवहार में अच्छे तौर–तरीकों का समावेश करके प्राप्त व विकसित किये जा सकते हैं। अन्ध विश्वास व संकुचित विचारों से उभर कर साइन्टिफिक टैम्पर का अनुकरण करें।

4. दिल में उत्साह–उमंग से भरे रहें। आलस्य व आज का काम कल पर टालने की आदत से छुटकारा पायें। आराम को हराम समझें। हमेशा कुछ विशेष कर दिखाने का दृढ़ संकल्प लें। आत्मविश्वास से भरपूर रहें, किसी तरह की हीन भावना के शिकार न बनें।

5. कम्प्यूटर का समुचित ज्ञान आवश्यक है। इन्टर्नेट में ज्ञान का भण्डार भरा पड़ा है, अपनी जरूरत की सूचना इससे निकालें। ओ.एम.आर. शीट पर काम करने का बार–बार अभ्यास करें।

6. आवेदन पत्र में भरे स्वयं के प्रति सूचना का ध्यान रखें

उसमें जो एकस्ट्रा–केरीक्यूलर एक्टीविटीज का जिक्र किया है उनके बारे में विस्तृत व समग्र जानकारी हासिल करके जायें। साक्षात्कार में उनसे संबंधित कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अतः हौबीज व पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कार्यकलापों का जिक्र सावधानी से करें। ज्यादा कार्यकलापों व हौबीज के अतिरिक्त अंक नहीं मिलते हैं बल्कि ये आपके लिए अतिरिक्त मुशीबतें ला सकते हैं, अप्रत्याशित प्रश्नों के रूप में।

7. याद रखें कि यह जीवन आपका अपना है, इसे सजाने–सवांरने की जिम्मेदारी भी आपकी अपनी है। एक बार सफलता मिल गयी तो बार–बार परीश्रम से छुट्टी मिल जायेगी। इससे न केवल आपका बल्कि पूरे परिवार का कल्याण होगा, आपकी प्रतिष्ठा चारो तरफ फैलेगी। आगे के रास्ते खुल जायेंगे, सफलता के चरम शिखर तक पहुंच सकते हैं।

प्रशासनिक परीक्षाओं में ऊपर दी गई दिशासूचक सुझाव अन्य सभी सर्विसेज में भी उतनी ही कारगर होंगी। सेना व अर्ध सैनिक बलों के लिए स्वस्थ और तन्दुरस्त शरीर आवश्यक है जिसमें लम्बाई, ऊंचाई, वजन, शीना इत्यादि पद के अनुसार होने चाहिए, विभिन्न प्रकार की दौड निश्चित समय में, हाई जम्प, लौंग जम्प, रोप क्लाइंविंग की शर्तें अनिवार्य हैं, शैक्षिक योग्यता के ही बराबर। इन्हें पार किये वगैर आगे का सफर नहीं तय किया जा सकता। इन सेवाओं में वही युवा भाग्य अजमायें जो इन गुणों से परिपूर्ण हैं। (इन सेवाओं की विस्तृत सूचना अन्यत्र दी गयी हैं अतः उस अध्याय को गौर से पढ़ें।)

न्यायपालिका से संबंधित सेवाओं के लिए लॉ में स्नातक डिग्री आवश्यक, जिसमें कानून की सभी शाखाओं की विस्तृत व सटीक (करेक्ट) जानकारी होनी चाहिए ताकि किसी विशेष स्थिति में धाराओं का सही प्रयोग किया जा सके।

बैंक सेवाओं में सांख्यकी व वाणिज्य में गणित व कॉमर्स– की स्नातक डिग्री की बरीयता होती है विभिन्न मैट्रिक्स व गणितीय गणनाओं की जनरल नौलेज व करैन्ट अफेयर्स की जानकारी आवश्यक है। भर्ती के पूर्व प्रमुख समाचार पत्रों व रोजगार समाचार में विस्तृत पाठ्यक्रम प्रकाशित किया जाता है, जिसके अनुसार ही तैयारी करें।

सरकारी कंपनियों (पब्लिक सैक्टर अन्डर टेकिंग)–में कंपनी की प्रोफाइल के मुताबिक पदों के लिए भर्ती होती है यथा– कैमिकेल, मैकैनिकल इन्जीनियर्स, एम.बी.ए. पास लोगों की तथा प्रोडक्शन, मार्केटिंग, मार्केट सर्वे, पब्लिसिटी व एच.आर.डी. में एम॰ वी॰ ए॰ लोगों को महत्व दिया जाता है। जिसमें संबंधित विषय की जानकारी पर अधिकांश प्रश्न पूछे जाते हैं। पब्लिक इन्टर–प्राइजेज बोर्ड लिखित परीक्षा व साक्षात्कार संचालित करते हैं जिसकी सूचना समय–समय पर प्रमुख समाचार पत्रों व रोजगार समाचार में प्रकाशित होती रहती है।

टीचिंग–जिन विद्यार्थियों ने सभी स्तरों पर उच्च श्रेणी प्राप्त की है उन्हें अध्यापन के क्षेत्र में सेवा करना वांछित होगा। शिक्षण के साथ बी.एड. की प्रशिक्षण करना आवश्य है। इन योग्यताओं के धारक हायर सेकेन्ड्री स्तर योग्य के प्राइमरी टीचर, टी.जी.टी. व पी.जी.टी. पदों के योग्य हैं। इन पदों के लिए लिखित परीक्षा व साक्षात्कार द्वारा ही चयन होता है। विश्व विद्यालय में लेक्चर पद के लिए सभी स्तरों पर उच्च प्रतिशत के साथ डाक्टरेट (पी एच डी) व एम फिल. की डिग्री आवश्यक है। पदों के लिए साक्षात्कार आवश्यक हैं।

निजी/प्राइवेट क्षेत्र – में रोजगार के असीम अवसर हैं, सैकड़ों क्षेत्रों में विभिन्न उद्यमियों ने उद्योग व व्यापार प्रतिष्ठान प्रारंभ किये हैं जिसमें अच्छा प्रशिक्षण उस ट्रेड में दक्षता हासिल प्रतिभावान

युवकों की अच्छी मांग हैं। तकनीकी शिक्षा के साथ में मैनेजमेन्ट ग्रेज्यूयेटस तो मालपुवे की तरह लोकप्रिय हैं। विभिन्न श्रोतों (मास मीडिया) के माध्यम से भर्तियों की जानकारी दी जाती है। जिसमें सेवा से संबंधित विस्तृत जानकारी दी जाती है। वेबसाइट पर भी जानकारी प्राप्त होती है, मात्र जागरूक रहने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में वेतन उच्च स्तर के मिलते हैं। ताकि उच्च स्तर के प्रतिभाशाली युवक–युवतियों को आसानी से आकर्षित किया जा सके। अधिकांश अच्छी कंपनियां तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों में जा कर अपनी आवश्यकता के अनुसार अच्छी श्रेणी में पास युवाओं का वहीं चयन कर ऊंचे वेतन का प्रलोभन देकर चयनित कर लेते हैं (कैम्पस सलैक्शन)।

निजी क्षेत्र कंपनियों में जगह पाने के लिए आवेदन रिज्यूमे के साथ भेजना पड़ता है जो बहुत ही आकर्षक व शक्तिशाली शब्दावली से सजा होना चाहिए, यह खुद के द्वारा खुद की मार्केटिंग है, खुद को एडवर्टाइज करना है अतः बहुत अट्रेक्टीव, हो जो उस पद को ध्यान मंह रख कर बहुत कड़क होना चाहिए। फालतू बातों का जिक्र न होकर अपने गुणो, दक्षताओं, ट्रकहपब्ल, विशिष्ट योग्यताओं, नेतृत्व व कार्यनिष्ठा के गुणों को दर्शाने वाला क्रिस्प वर्णन हो। यह विस्तृत न होकर शूक्ष्म टू–द–प्वाइंट हो जिसमें आपके सभी विशेष गुण, प्रशिक्षण, स्किल्स व अनुभव तथा अपनी शक्तियों का पूर्ण प्रयोग कर कंपनी के ओबजेटिवज व टारगेटस को पूरा करने की इच्छा दर्शाता हो। उदाहरण के तौर पर आपके रिज्यूमें में कुछ इस तरह के वाक्यों का प्रयोग करे।

– I understand you are looking for a person of adequate expertise, qualification and experience to give leadership and guidance to your project. I

could make regnificant contrition right a way.

- I am confident that my knowledge, experience & abilities would be of value to your company or organisation.
- I would be happy to make my skills could contribute fowards achiving the gooals and targets of your company / organisation.
- I assure of my maximum efforts to get your objectives.

इन वाक्यों का सही प्रयोग आपकी योग्यता, निपुणता, अनुभव का फायदा अवश्य पहुंचायेगें। आपका रिज्यूमें आपके इम्प्लौयर की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए जिसमें रिसेन्ट पास्ट से प्रारंभ कर क्रमशः पीछे के सालों के अनुभव आने चाहिए सिर्फ वही जो इस जॉब के लिए अत्यन्त रेलीभेन्ट हो।

याद रखें यह आपकी अपनी जिन्दगी है, आपका भविष्य है जिसे बनाने की जिम्मेदारी आपके अपने हाथों में है। इसे आपने ही बनाना है, साजाना है, संवारना है। हर पल कुछ न कुछ सीखिये, अपने को सुधारिये, अच्छी आदतों को अपनाइये, अपना आत्म विश्वास बढ़ाइए, नालेज बढ़ाइए, जोश में रहिए, खुश रहना सीखीये, सफलता आपकी होगी।

♦♦♦

आर्किटैक्चर से बनाएं कैरियर

अशोक सिंह

– व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में कुछ ऐसे विशिष्टि प्रकार के विषय और कोर्स भी हैं जिन्हें सदाबहार कहा जा सकता है। सदाबहार से आशय है वे कोर्स जिनकी अहमियत सदा बनी रहती है, जो एक झोंके की भांति नहीं होते कि आज उदय हुए और चंद महीनों या वर्षों बाद जिनकी प्रासंगिकता समाप्त हो जाए। अक्सर यही देखने में आता है कि युवा वर्ग भेड़चाल की मानसिकता में आकर इन पाठ्यक्रमों के महत्व को नजरअंदाज कर बैठते हैं और जाने–अनजाने गलत पाठ्यक्रम का चयन कर बैठते हैं। इस गलती का खामियाजा उन्हें पूरी जिंदगी भुगतना पड़ता है।

ऐसे ही एक खास प्रकार के पाठ्यक्रम में वास्तुकला या आर्किटैक्चर का नाम लिया जा सकता है। मानव आवास के लिए उत्तम से उत्तम परिकल्पनाओं को कागज पर ले–आउट के रूप में उतारने से लेकर उसे अस्तित्व में लाने का दायित्व इन्हीं प्रोफेशनलों के कंधों पर होता है।

छोटे फ्लैटों से लेकर गगनचुम्बी इमारतों का नक्शा बनाना, उपलब्ध भूमि का बेहतरीन ढंग से प्रयोग, भवन के प्रत्येक कमरे में प्रकाश एवं उसके हवादार होने की सुनिश्चितता आदि जैसी बारीक किंतु महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही ले आउट तैयार किए जाते हैं। इन नक्शों की पूर्व स्वीकृति के बिना शहरों और महानगरों में मकान नहीं बनाए जा सकते। ऐसे में आर्किटैक्ट के हुनर के महत्व को बखूबी समझा जा सकता है।

इस व्यवसाय के स्वरूप को देखें तो इसमें कई विधाओं का तालमेल देखा जा सकता है। इनमें कलात्मक सोच, प्रौद्योगिकी तथा रेखा

चित्रण के अलावा कल्पनाशीलता का खासा महत्व है। लकीर के फकीर या परंपरागत ढर्रे पर चलने वाले लोगों के लिए इस क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ने की गुंजाइश काफी कम होती है।

यहां एक बात और स्पष्ट कर देना उचित होगा कि आर्किटैक्ट का कार्य नक्शा बनाने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि भवन निर्माण के विभिन्न आयामों की देखरेख और कार्य समाप्ति तक की जिम्मेदारी इन्हीं पर होती है। इसलिए आर्किटैक्चर संबंधी नई जानकारियों के अलावा इन्हें भवन निर्माण की अद्यतन प्रौद्योगिकियों से भी परिचित रहना पड़ता है।

अन्य प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों की भांति इस विधा का प्रशिक्षण भी सफलता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। देश में आर्किटैक्चर की पढ़ाई काफी व्यापक तौर पर उपलब्ध है। इनमें सरकारी विश्वविद्यालयों से लेकर निजी क्षेत्र के संस्थानों तक ा आलेख किया जा सकता है। प्रमुख पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा इन आर्किटैक्चर और बैचलर इन आर्किटैक्चर मुख्य हैं। दाखिले आमतौर से चयन परीक्षाओं के आधार पर ही दिए जाते हैं। इन परीक्षाओं में शामिल होने के लिए आवेदन का गणित, भौतिकी, रसायन और अंग्रेजी विषय सहित 10+2 पास होना आवश्यक है। इंजीनियरिंग ड्राइंग की पृष्ठभूमि वाले युवाओं को चयन परीक्षा में अपेक्षाकृत थोड़ी आसानी हो जाती है। चयन परीक्षा में गणित, भौतिकी, रसायन और इंजीनियरिंग ड्राइंग विषयों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

इस पांचवर्षीय पाठ्यक्रम में बिल्डिंग के निर्माण एवं उसकी डिजाइ. निंग के अतिरिक्त बिल्डिंग मैटेरियल, टाउन प्लानिंग, सर्वे आदि के बारे में भी समुचित सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण में व्यावहारिक ट्रेनिंग पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसी कारण छात्रों को इंटर्नशिप के लिए नामी आर्किटैक्ट फार्मो

में भी पाठ्यक्रम के दौरान भेजा जाता है। इससे युवा वास्तविक कार्य परिस्थितियों से समय रहते परिचित होते हैं और इंटर्नशिप के दौरान आने वाली कठिनाइयों का निवारण वापस संस्थान में आने के बाद अध्यापमकों के जरिए करने का प्रयास करते हैं।

देश के प्रमुख आर्किटैक्चर ट्रेनिंग संस्थानों की दाखिला संबंधी विज्ञप्तियां समाचार पत्रों में अक्तूबर–नवम्बर माह से आनी शुरू हो जाती हैं। ऐसे में इच्छुक युवाओं को नियमित तौर पर प्रमुख अखबारों को दखने की आदत डाल लेनी चाहिए। इसके लिए किसी पुस्तकालय की सुविधा मिल जाए तो काफी आसानी हो सकती है। 'रोजगार समाचार नामक साप्ताहिक समाचार पत्र इसमें खासा उपयोगी हो सकता है।

एक समय था जब आर्किटैक्ट कागज के कैनवास पर ही रेखाचित्रों के माध्यम से भवन का ले–आउट तैयार करते थे, लेकिन अब कम्प्यूटर का प्रयोग इस क्षेत्र में व्यापक तौर पर किया जा रहा है। सी ए डी डी यानी कम्प्यूटर ऐडेड विज्ञाइन एंड ड्राफ्टिंग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल इस क्षेत्र में काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

बैचलर ऑफ आर्किटैक्चर के बाद उच्च अध्ययन हेतु एम टैक (आर्किटैक्चर) का पाठ्यक्रम किया जा सकता है। इसमें विभिन्न प्रकार की विशेषज्ञता आधारित विषयों का विकल्प होता है। मुख्य रूप से लैंडस्केप डिजाइन, ट्रांसपोर्टेशन डिजाइन, अर्बन डिजाइन, कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट, टाउन प्लानिंग आदि का उल्लेख किया जा सकता है। अध्यापन एवं शोध के क्षेत्र में जाने के इच्छुक युवाओं के लिए यह डिग्री फायदेमंद सिद्ध हो सकती है।

इस विशेषज्ञता के बाद रोजगार और स्वरोजगार दोनों प्रकार के अवसर हासिल हो सकते हैं। रोजजगार की संभावनाएं शहरी विकास

निकायों, केंद्रीय एवं राज्य सरकारों के विभागों, निजी कंस्ट्रक्शन कंपनियों/बिल्डरों के पास, औद्योगिक समूहों आदि में हो सकती है। बाद में स्वतंत्र कंसल्टेंट के तौर पर भी काम किया जा सकता है।

आमदनी, साख और अनुभव के अनुसार बढ़ती जाती है।

इस क्षेत्र में कैरियर निर्माण के इच्छुक युवाओं के लिए यह जान लेना भी आवश्यक है कि बेहतरीन काम करने और स्वयं को लीक से हटा हुआ दिखाने के लिए उन्हें देश–विदेश में इस क्षेत्र में हो रहे कार्यों से अवगत रखना पड़ेगा। इस क्रम में उनके लिए विदेश में काम करने के भी अवसर मिल सकते हैं।

आर्किटैक्चर पाठ्यक्रम कराने वाले देश के प्रमुख संस्थान

• इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, खड़गपुर (प. बंगाल)	• कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, गोवा
• स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटैक्चर, नई दिल्ली	• गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्किटैक्चर, लखनऊ (उ.प्र.)
• रुड़की चूनीवर्सिटी, रुड़की (उत्तरांचल)	• गोवा कॉलेज ऑफ आर्किटैक्चर, पणजी
• चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटैक्चर, चंडीगढ़	
• इन्स्टीट्यूट आफ टाउन एण्ड कन्ट्री प्लानिंग, नई दिल्ली	

♦♦♦

सफलता के राजमार्ग

(कृश्न आर्य, भा.प्र.सेवा से निवृत)

1. समय का महत्व व उपयोगिता

हर सफल व बुद्धिमान व्यक्ति ने अपनी दिनचर्या व्यवस्थित रखी और समय के हर पल का उपयोग अपने बौद्धिक (मानसिक) व शारीरिक क्षमता को बेहतर करने में लगाया। समय एक ऐसा संसाधन (रिसा. र्स) है जिससे संसार का कुछ भी संसाधन (सुख, सुविधा, सम्पदा व कीर्ति) प्राप्त कर सकते हैं। वस्तुतः समय ही जीवन है। अतः

1. दिनभर में जो कुछ भी करना है उसकी प्राथमिकता (प्रायोरिटी) के अनुसार सूची बना लें और हर काम को कम से कम समय में निबटायें। जरूरी काम सबसे पहले अन्य काम बाद में।

2. समय सारणी के अनुसार चलने से कम से कम समय में अधिक से अधिक कामकर सकेगें। अन्यथा क्या करें, क्या ना करें, इसी कन्फ्यूजन में समय व शक्ति बर्वाद हो जायेंगे।

3. आराम के नाम से आलस्य, उन्माद, मनोरंजन, खेल–तमाशे, टी.वी. व गपशप में समय बर्वाद न करें। आराम तो हराम है। जिसने समय को बर्वाद किया उसे समय बर्वाद कर डालता है।

4. किसी भी काम को आगे के लिए टालना, आज का काम कल करेंगे वाली प्रवृत्ति, अथवा अपना काम किसी और से करवाना, समय के सबसे बड़े शत्रु हैं।

5. हर रोज एकाग्रता से 10 से 20 पृष्ट पढ़कर याद कर सकें

तो एक महीने में 300 से 600 पृष्ट याद हो जायेंगे, एक साल में 3600 से 7200 पृष्ठ याद कर सकेंगे। तब कुछ भी कठिन नहीं रह जायेगा। इस सिद्धांत को गांठ बांध लें तथा इस पर नियमितता से अमल करें।

6. जवानी का समय विश्राम के नाम पर नष्ट करना घोर मूर्खता है क्योंकि यही समय है जिसमें व्यक्ति अपने जीवन और भविष्य का निर्माण कर सकता है। समय संयम (टाइम मैनेजमेनट) सफलता की निश्चित कुंजी, इसे खोने न दें यह कभी लौटकर वापस नहीं आता।

2. **कठिन परिश्रम**– समय व परिश्रम मिलकर सफलता के शिखर पर पहुंचने के राजमार्ग हैं।

1. लक्ष्य तय करने के बाद उसे हासिल करने के लिए दिन–रात संपूर्ण मनोयोग से परिश्रम करने पर सफलता अवश्य मिलेगी।

2. कार्य कितना भी कठिन हो, परिश्रम और लगन से आसान बन जाता है।

3. लक्ष्य जितना ऊंचा हो परिश्रम भी उतना ही अधिक आवश्यक होगा।

4. जीवन में हम उतना ही पाते हैं जितना उसमें पूंजी लगाते हैं यह पूंजी परिश्रम ही है। परिश्रम सबसे मूल्यवान पूंजी है।

5. अपने अतीत की गलतियों को सुधारने में जो कठोर परिश्रम करना पड़ता है, उसी से बेहतर वर्तमान और सुनहरा भविष्य बन सकता है। अतः उठो, जोगो, आलस्य का त्याग करो। परिश्रम जितना कठिन होगा फल उतना ही मीठा होगा।

यदि हम सुख, समृद्धि और सफलता के इच्छुक हैं तो हमें कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। परिश्रम के मार्ग में जो रोड़े हैं वे आलस्य, असफल हो जाने का डर, आत्मविश्वास की कमी, कमजोर स्वास्थ्य, परिश्रम करने की इच्छा की कमी। इन्हें खत्म करना पडेगा, रास्ते से हटाना पड़ेगा, तभी सफलता निश्चित हो सकेंगी। सफलता के लिये कठिन परिश्रम का कोई दूसरी विकल्प नहीं। भाग्य व भगवान भी उन्ही की मदद करते हैं जो अपने लिए कठिन परिश्रम करते हैं। परिश्रम के वगैर सफलता संभव ही नहीं है।

3. **स्वस्थ शरीर सफलता के लिए आवश्यकः**— अतः हर रोज नियमित रूप से व्यायाम, घूमना, दौड़ना, प्राणायाम व योग का अभ्यास जरूरी है। भोजन मे फल, सब्जियां, दालें, मांस, मछली अंडा आदि का सेवन, स्वच्छ जल, शुद्ध हवा का सेवन अत्यावश्यकहै। तम्बाकू हर रूप में— बीडी, सिगरेट, हुक्का—चिलम, पान मसालों—पान व खैनी के रूप में एकदम वर्जित है। तम्बाकू के सेवन से फेफड़े, गले, व मुंह का कैन्सर होता है, टी.बी., दिल की बीमारी अवश्यमभावी हैं, प्रकृति के तमाम पदार्थों में से सिगरेट का धुंआं एकदम अप्राकृतिक है। फेफड़े शुद्ध हवा से आक्सीजन लेकर खून की सफाई करने के लिए हैं। शुद्ध हवा के स्थान में सिगरेट का घुंआ खून को दुषित करता है और सैकडों बिमारियों को आंमत्रित करता है। अतः तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में वर्जित है। भूल कर भी इसका सेवन न करें व बीडी, सिगरेट पीने वालों के आसपास न जायें, क्योंकि उनके द्वारा छोड़ा धुआं आप भी सांस में अन्दर लेते हैं। तम्बाकू सेवन में ध ान का बड़ा नुकसान होता है, एक आंकलन के अनुसार पूरी जिन्दगी में व्यक्ति 50 लाख से 1 (एक) करोड़ तक तम्बाकू प्रोडक्ट्स व उनसे उपजी बीमारियों के इलाज में खर्च करता है। इससे यदि फल, सब्जी

व अन्य पौष्टिक पदार्थ लें तो सारे परिवार के स्वास्थ्य को फायदा होगा। शराब, अफीम, गांजा, चरस आदि भी उतनी ही या उससे भी अधिक खतनाक हैं।

सेना व अन्य सैन्य बलों (आर्म्ड फोर्सेज) में जाने के इच्छुक युवाओं के लिए अच्छा डील–डौल व स्वस्थ शरीर का होना वांन्छनीय है, चुस्त, तन्दुरूस्त युवाओं को ही प्राथमिकता दी जाती है।

प्रभावशाली व्यक्तित्व व नेतृत्व कौशल (लीडरशिप स्किल)

प्रतिस्पर्धा भरी दुनियां में विजयी होने के लिए प्रभावशाली व्यक्तित्व अत्यन्त आवश्यक हैं। इसके लिए एक खुशमिजाज, मनोहारी, जोशीला औरों को तुरंत प्रभावित करने की कला से प्रभावी व्यक्तित्व बनाना होता है। आत्म विश्वास, मानसिक परिपक्वता, शारीरिक दृ ड़ता (मजबूती) और वाकपटुता ऐसे गुण हैं जो सभी को आकर्षित कर लेते हैं।

1. व्यक्तित्व जन्म जात गुण नहीं है, जो विरासत में मिलता हो, न ही अकस्मात, अभूतपूर्व बुद्धि और संयम पर आधारित है।

2. व्यक्तित्व कुछ विशेष प्रयासों, अच्छी आदतों, अच्छे तौर–तरीकों सकारात्मक दृष्टकोण आशावादी सोच, उत्साह, आत्मविश्वास जैसे गुणों द्वारा प्राप्त व विकसित किया जा सकता है।

3. किसी व्यक्ति विशेष का इस पर एकाधिकार नहीं होता, ना ही यह वंशानुगत होता है। इसे सीखा जा सकता है और विकसित किया जा सकता है। निरंतर प्रयास व आत्मविश्वास आवश्यक है।

4. निरंतर प्रयास, लगन, दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर इसे प्राप्त

किया जा सकता है आत्मविश्वास से इसे विकसिति कर सकते हैं।

5. साकारात्मक सोच विकसित करें और उसे अच्छी दिशा में लगायें।

6. सदा जोश में रहें और अन्य लोगों में भी जोश भर दें। औरों को भी आगे बढ़ने व तरक्की करने की प्रेरणा दें, कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत न हारें।

7. सबको मिलाकर एक संगठन का निर्माण कर सबसे उत्कृष्ट कार्य करवा सकें, खुद भी कठिन परिश्रम का उदाहरण प्रस्तुत करें।

8. नेतृत्व कौशल में अपने अनुभव, ज्ञान व समझदारी से अन्य लोगों का मार्गदर्शन कर सकें। जरूरत मन्द लोगों की मदद के लिए आगे बढ़ें।

9. किसी प्राकृतिक विपदा से निबटने व राहत पहुंचाने में अग्रगामी बनें। गांवों में रास्ते बनवाने, शौचालय बनाने, बारिश के पानी का संरक्षण (वाटरहार्वेस्टिंग) व वनाग्नि (जंगल फायर) में समाज के लोगों को प्रोत्साहन कर इन कार्यों को सफलता पूर्वक करवा सकें। ये अनुभव व गुण न केवल गांव शहर में लोगों के बीच आपका मान सम्मान वरन रोजगार प्राप्त करने में भी विशेष मदद करेंगे।

इन्ही गुणों व प्रतिभाओं का क्रमिक विकास कर आप सामाजिक कार्यकर्ता, नगर पालिका बोर्ड, ग्राम पंचायत व जिला परिषद के पदों को प्राप्त कर सकते हैं। कालान्तर में राजनैतिक नेता बन कर विधायक व सांसद बन कर समाज व देश की सेवा कर सकते हैं।

छोट–छोटे समूहों से प्रारंभ कर बड़ी जन सभाओं में बोलने की आदत बनायें, धारा–प्रवाह बोलने की प्रतिभा अत्यन्त लाभदायक होगी, इसे विकसित करने का प्रयास स्कूल, कालेज, यूनीवर्सिटी से प्रारंभ करे दें। जहां भी बोलने का अवसर मिले, हिम्मत करके बोलना शुरू कर दें, समूह व विषय के अनुसार संबोधन व भाषण का सार होना चाहिए। यदि आपको अवसर नहीं दिया जा रहा है तो समारोह के अध्यक्ष से आज्ञा लेकर अपने विचार जन समूह के सामने रखने का साहस करें, न डरें, न घबरायें।

6. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानसिक क्षतिज का विस्तार

हम जिस समाज व माहौल में जन्मे, पले और बडे हुए हैं, बिडम्बनावश वह पुरानी सोच, धारणा परम्पराओं व कपोल–कल्पित धारणाओं से अधिक ग्रसित है, जो वैज्ञानिक कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं। जहाँ एक ओर दुनियां चांद–तारों तक पहुंचने की दौड में जुटी है हम अभी तक सदियों पुरानी रूढ़ियों, प्रथाओं व अन्ध विश्वास के अंधेरे में भटक रहें हैं। भावी पीड़ी का विकास वैज्ञानिक विचारों व सोच के ऊपर आधारित होना आवश्यक है वरना हमारे युवा कूपमंडूक (कुंए के मेंढ़क) बन कर रह जायेंगें। पुरानी परंपराओं, प्रथाओं को नये सिरे से वैज्ञानिक विश्लेषण कर आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के सांचे में परखें, जो सही उतरें, उनको स्वीकार करें अन्यथा उनका त्याग करें। हमारे प्रदेश में कई व्यर्थ की प्रथायें विज्ञान के इस युग में भी प्रचलित हैं जो हमे पीछे धकेल रही हैं यथा–देवी देवताओं को खुश करने के लिए मंदिरों में पशु–बलि, भूत पिशाच भगाने के लिए जागर लगाना, समाज के कुछ वर्गों व महिलाओं का मंदिरों में प्रवेश वर्जित, ऊंच–नीच का भेदभाव, कर्म कांडो का प्रचलन, ज्योतिष द्वारा वैवाहिक संयोग का निर्धारण, तांत्रिकों का वर्चस्व, पाप–पुण्य की कपोल–कल्पित परिभाषायें इत्यादि ऐसी प्रथायें हैं जो विज्ञान द्वारा प्रमाणित नहीं की जा सकती हैं अतः तर्कहीन और समाज के कुछ

वर्गों ने अपने सुख, आराम व स्वार्थ सिद्धि व जीविका के लिए सैकडों साल पहले बनाये थे जो आज के युग में हास्यास्पद हैं, तर्कसंगत नहीं हैं, इनके पीछे गहरे स्वार्थ छिप हैं, जिन्हे अब बेपर्दा कर समाज से उखाड़ फैकना चाहिए तभी हमारे युवा आज के युग में आगे बढ़ सकेगें। पाप धोने के लिए शदियों से चली आ रही गंगा स्नान की परंपरा हास्स्पद लगती है क्योंकि पाप कोई शरीर पर चिपकने वाला पदार्थ तो है नहीं जिसे सिर्फ गंगाजल से स्नान करने पर ही धोया जा सकता हो। गंगा स्नान से स्वर्ग प्राप्ति की प्रथा भी भ्रामक है, यदि ऐसा होता तो गंगा में पलने वाली मछलियां, कछुए, घडियाल सबसे पहले स्वर्ग के हकदार होते। गंगा में अस्ति विषर्जन से स्वर्ग की प्राप्ति हो या न हो गंगा का प्रदूषण अवश्य बढ़ता है। अन्ध विश्वास और धर्म एक दूसरे के विपरीत हैं, इनका अन्तर समझें। विचारों को खुले व निष्पक्ष मस्तिष्क से परखें यदि इस कसौटी में जो प्रथायें खरी न उतरें उन्हें मस्तिष्क से निकाल फेंके, वैज्ञानिक सोच व ज्ञान को अपनायें। मस्तिष्क की क्षमता व शक्ति को बढ़ाया व विक. सित किया जा सकता है। आधुनिक विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक अल्वर्ट आइन्स्टाइन की मानसिक क्षमता जो अधिकतम मानी गयी है, कुल क्षमता का 10 प्रतिशत ही आंकी गयी है। विशेष विधियों, चिन्तन–मनन व एकाग्रता से मानसिक क्षमता को विस्तृत करें।

7. कम्प्यूटर (आई.टी.) प्रशिक्षण– यह युग इन्फार्मेसन टेक्नोलॉजी का है। आई॰टी॰ का प्रयोग हर क्षेत्र में आवश्यक हो गया है, अतः कम्प्यूटर से संबंधित सारी जानकारी व उसके प्रयोग की विधि की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। किसी ख्याति प्राप्त संस्था से आई.टी. की विस्तृत जानकारी लेनी अनिवार्य है, इसके वगैर किसी भी क्षेत्र में सफलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जिस तरह से भी संभव हो कम्प्यूटर संबंधी प्रयोगात्मक ज्ञान लेना ही चाहिए।

8. **अंग्रेजी का ज्ञानः**– रोजगार के क्षेत्र में अंग्रेजी का विशेष महत्व है। दुनियाभर के ज्ञान के लिए अंग्रजी का भरपूर ज्ञान होना आवश्यक है। अंग्रेजी पाश्चात्य वैज्ञानिक ज्ञान का झरोखा है जिसके वगैर कोई भी आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान, विशेषकर आई.टी. सुविधाओं का फायदा पूर्ण रूप से नहीं उठा सकता। स्थानीय/राज्य सरकारों की सीमित और सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी की उपेक्षा कर नवयुवकों–युवतियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। परंतु युवाओं को येन–केन प्रकारेण अंग्रेजी का गहरा ज्ञान हासिल कर अपने भविष्य की खुद रचना करनी होगी।

दिनचर्या में परिवर्तन– जीवन में यदि कुछ करना चाहतें हैं, बनना चाहते हैं तो पुरानी गल्तियों की पुनरावृत्ति न करें।

1. सूर्योदय से पूर्व (5 बजे) हर हालत में विस्तर छोडने की आदत डालें। (अपने पिताजी से मुझे सिर्फ यही आदत वि. रासत में मिली और बाकी सब कुछ इस अकेली आदत से प्राप्त हुआ।)

2. लम्बी–चौड़ी पूजा–पाठ में समय बर्बाद न कर एक पल के लिए सच्चे दिल उस परमपिता परमेश्वर का ध्यान करें जिसने हमें और शेष जगत को बनाया है और उसको चला रहा है। उसका धन्यवाद करें। यह जीवन भगवान का वर्दान है अतः उसका धन्यवाद करें।

3. नित्यकर्मों (मल–मूत्र त्याग व स्नान) से निवृत होकर सरल व्यायाम (कसरत) प्राणायाम, ध्यान (मेडीटेसन) नियमित तरी. के से प्रतिदिन आधा घंटा अवश्य करें, यह स्वास्थ्य की कुंजी है। यदि चाहें तो खुलें में 1–2 कि॰ मी॰ तक दौड़ लगायें।

4. सुबह एक– दो लीटर गुनगुना पानी पीना लाभदायक होगा,

चाय नहीं।

5. किसी एकांत स्थान में आराम से बैठकर कम से कम 2 घण्टे तक अपने पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकों का एकाग्रता से अध्ययन–मनन करें।

6. नाश्ते में फल, सब्जी रोटी–पराठा, अथवा दलिया, पोहा खायें, मैगी व ब्रैड नहीं, उपर से दूध–छांछ, लस्सी अथवा चाय पीयें।

7. नाश्ते के पश्चात दाँत अवश्य मलें ताकि दांत नष्ट न हों और मुंह से दुर्गन्ध न आये।

8. स्कूल, कॉलेज व दफ्तर जाने के लिए साफ सुधरे कपड़े सलीके से प्रेस करे हुए पहने, न भड़कीले हों ना ही अशिष्ट।

9. तथासंभव पैदल चलें, तेज चलें, सावधानी से चलें, दुर्घटना से बचें। प्रकृति, जीव–जन्तुओं–पक्षियों को देखने का आनन्द लें।

10. स्कूल कॉलेज दफ्तर से छुट्टी होने पर शीघ्र घर वापस आयें घुमने–फिरने व गप–शप में समय बर्वाद न करें। समय अमूल्य है।

11. हाथ मुंह धोकर कपडे बदलें, चाय नास्ता करने के उपरान्त यदि थके न हों तो पुनः 2 घंटे अध्यन करे, पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तकों का।

12. थोड़ा चहल–कदमी करने निकलें परंतु शीघ्र वापस आकर हाथ–पैर धोकर रात्रि भोजन कर लें। साथ ही टी. वी. में मुख्य समाचार भी देखें, सीरियल व फिल्में न देखें, लत पड़

पड़ जायेगी।

13. शीघ्र ही परीक्षा को ध्यान में रखकर पुनः अध्यन करने बैठें।

14. रात्री 10 बजे विश्राम/सोने के लिए चले जायें (7 घंटे की नींद लें)

15. सोने से पूर्व दांत मलना न भूलें वरना दांत सड़ जायेगें और समय से पहिले गिरने लगेंगे। मसूड़ों की मालिश भी अवश्य करें।

इस क्रम को नियमित रूप से अमल करने पर आपके जीवन में नयी शक्ति, स्फूति और नयी आशाये उत्पन्न होंगी और सन्तोष प्राप्त होगा। अभीष्ट लक्ष्य को पाने में सफलता मिलेगी।

♦♦♦

वख्त आपका है, चाहो तो सोना बनालो
और न चाहो तो सोने में गुजार दो। (Choice is yours)

राजनीति एक शानदार कैरियर

रमेश चन्द्रा, Ex-I.G. (CRPF) एवं
कृष्ण आर्य, भा.प्रा.सेवा

क्या आपको अन्दाजा है कि भारतीय संसद के सदस्य यानी कि सांसदों (एम.पी.) के वेतन, भत्ते व सुविधायें क्या–क्या हैं? अगर नहीं तो जानिये।

– सांसदों यानी एम.पी. का, कुछ समय पहिले का वेतन, प्रतिमाह 50,000 रूपये था जो आयकर से मुक्त है (टैक्स फ्री)

– संसद का सत्र यदि चल रहा हो तो 2000 रू. प्रतिदिन का सिटिंग अलाउन्स जिसकी वार्षिक सीमा 2 लाख रूपये है, चाहे सदन की कार्यवाही चल रही या स्थगत के कारण नहीं, परंतु दैनिक भत्ता तो मिलेगा ही।

– अपने संसदीय क्षेत्र का भत्ता 45,000 रू. प्रतिमाह यानी पूरे वर्ष में 5,40,000 रु. मिलते हैं।

– घर से एयर पोर्ट, रेलवे स्टेशन या सड़क से अन्यत्र यात्रा करनी पडे तो प्रति किलोमीटर 16 रुपये का यात्रा भत्ता मिलता है।

– रेल यात्रा के दौरान ए.सी. प्रथम श्रेणी व हवाई जहाज से यात्रायें मुफ्त होती हैं। (यात्रा कूपन मिलते हैं) यह सुविधा परिवार (पत्नी व बच्चों) को साल में 75000 रु. तक सरकार के खर्चे पर और 1 असिसटेन्ट के लिए 40,000 प्रतिवर्ष तक सरकार द्वारा देय है। कार्यकाल के पश्चात् भी रेल यात्रा मुफ्त उपलब्ध है।

– दिल्ली में टाइप VI टाइप VII के फ्लैट अथवा बंगला बिना किराये के, जिसे फर्निस करने व सजावट के लिए 1,50,000 तक सरकरा द्वारा देय है

– 3 टेलीफोन का प्रयोग 1,50,000 काल्स प्रतिमाह बिल्कुल मुफ्त है।

– बिजली 50,000 यूनिट तक व पानी 4000 किलो लीटर मुफ्त उपलब्ध है।

– इन सबके ऊपर सांसद राशि 2 करोड प्रतिवर्ष, अपने निर्वाचन क्षेत्र के विकास कार्यों के लिए जो सांसद की इच्छा अनुसार ही खर्च किये जा सकते हं

– अपने कार्य काल में 5 लाख रूपये तक का बैंक लोन लिया जा सकता है।

– पार्लियामेन्ट सत्र के चलते सांसदों को कैन्टीन सुविधाओं में 5 रू. थाली खाना, 50 पैसे प्रति कप चाय व अन्य खाद्य सामग्री भी बहुत सस्ती मिलती है।

– ये वेतन व भत्ते की राशियां बढ़ाई जा सकती हैं क्योंकि इन पर कानून बनाने का अधिकार खुद सांसदों के पास है।

– इन सबके अतिरिक्त रेलवे–हवाई यात्रा, सरकारी अतिथिगृहों में रात्री–विश्राम, सरकारी ऐजेंसियों द्वारा निर्मित घरों के आवंटन में उन्हें अन्य के मुकाबले वरीयता मिलती है।

– सबसे बड़ी सुविधा है आजीवन पेन्शन की जिसके लिए कोई न्यूनतम अवधि निर्धारित नहीं है और पेन्सन की राशि अच्छी खासी होती है।

– इन सबसे भी बड़ी बात है कि हमेशा प्रसंशको व समर्थकों से घिरे रहते हैं। सरकार के निर्देशों द्वारा जन प्रतिनिधियों को सरकारी अधिकारियों द्वारा हर प्रकार की मदद व सम्मान दिया जाना वांछनीय है।

राज्य स्तर पर विधायकों को इसी प्रकार के वेतन, भत्ते व सुविधायें मिलती हैं जो थोड़ा कम होते हैं। जिला परिषद, ब्लाक लेवल काउन्सिल व पंचायत के स्तर पर भी इसी प्रणाली के मुताबिक जन प्रतिनिधियों को वेतन भत्ते मिलते हैं। यही कारण है कि कई राजनैतिक नेता अन्धाधुंध पैसा खर्च कर, छल–बल जाति–धर्म, क्षेत्र, भाषा का सहारा लेकर चुनाव जीतना चाहते हैं और गलत तरीकों का प्रयोग करते हैं। भारतीय लोकतंत्र की कुछ गम्भीर चुनौतियां हैं, कुछ बाहरी ताकतों से, जो देश में दहशत, अव्यवस्था फैलाकर अस्थिरता की स्थिति पैदा करना चाहती हैं। परंतु भीतरी ताकतें भी हमारे लिए उतनी चिन्ताजनक हैं यथा राजनीति में अपराधी लोगों व प्रवृतियों का प्रवेश, चुनाव में सम्प्रदायकता, धर्मवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, बाहुबली, गुन्डे बदमाशों, धन लोलुप, दलालों, विचौलियों का वर्चस्व। चुनाव प्रक्रिया को धोखा देकर बूथ कैपचरिंग, रिगिंग व वोटरों को डरा धमका कर वोट प्राप्त करना; ताकि कम योग्यता वाले, बेइमान प्रत्यासी को जिताया जा सके। ऐसे प्रत्यासियों ने अपने पद का दुरूपयोग कर भारतीय प्रजातंत्र के ढांचे को चरमरा दिया है। लोकतंत्र एक नैतिक व्यवस्था का नाम है जो भारत से लुप्त हो रही है। लोक प्रशासकों व जनप्रतिनिधियों को सच्चे अर्थों में जनता के प्रति जवाब देह होना चाहिए, प्रशासन में पारदर्शिता हो, हर प्रकार की असमानता को खत्म कर अमीरी–गरीबी या जातीय ऊंच–नीच की असमानताओं को समाप्त कर एकता व अखण्डता की भावना को प्रबल किया जाना चाहिए, क्योंकि एकता में ही शक्ति है। प्रतिभाशाली

व्यक्तियों को उचित दायित्व सौंप कर जन कल्याण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए न कि अपने स्वार्थ व धन लोलुपता को। चुनाव के लिए उच्च शिक्षा व नैतिक चाल–चलन को अनिवार्य बनाया जाये। अपराध में लिप्त लोगों को चुनाव लड़ने की इजाजत ही न दी जाय। सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय एवं विकास कार्यों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने वाले युवाओं को चुनाव में मौका देना चाहिए।

समय बदल रहा है, जनता में जागरूकता आ रही है, फलतः शीघ्र ही देश की राजनैतिक और चुवाव प्रणालियों में बदलाव आना निश्चित है। पढ़े लिखे व योग्य, ईमानदार लोगों को यह कह कर डराया जाता रहा है कि राजनीति गन्दा नाला है, चुनाव में सब कुछ झौकना पड़ता है, फिर भी जीत निश्चित नहीं, राजनीति घर फूंक तमाशा देखने जैसा हैं। अब समझ में आ गया है कि यह उन कम पढ़े लिखे अथवा अनपढ़ नेताओं द्वारा फैलाया डर है जो छल–कपट, धन– बल व भ्रष्टाचार के बल पर चुनाव जीतते हैं, जो जानते है कि ईमानदार और योग्य व्यक्ति चुनाव जीत कर राजनीति में आ गये तो छल–कपटी, अयोग नेताओं को सर छुपाने को भी जगह नहीं मिलेगी। राजनीति के महान पंडति आचार्य चाणक्य ने ठीक कहा है कि यदि पढे–लिखे व ईमानदार व्यक्ति राजनीति में नहीं आयेंगे तो आपको अयोग्य और कुटिल प्रवृति के लोगों को अपने ऊपर राज करने देंगे, यानी योग्य लोगों व प्रजा को अयोग्य व बेईमान लोगों द्व ारा निर्धारित नीतियों का दंश (कुफल) भोगना पडेगा।

ऐसे नेताओं को बनाने की जिम्मेदारी भी समाज को लेनी पडेगी। परिवारवाद का समर्थन न करते हुए ऐसे युवाओं को प्रोत्साहन व पहल दी जानी चाहिए जो निडर हों, साहसी हों, सच्चाई का साथ देने वाले हों, समाज के दुख–सुख में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हो, प्राकृतिक आपदा में पीडितों की मदद करने मे आगे हों। ऐसे वयस्कों

को प्रोत्साहित व प्रशंसित किया जाय, उनका हौसला बढ़ाया जाय। कुछ लोग जन्म–जात नेतृत्व के गुण लेकर पैदा होते हैं उनमें उत्. साह, उमंग, जनसेवा, निडरता, लोगों को सामूहिक कार्यों के लिए एकजुट करने के गुण होते हैं। परंतु कुछ अन्य लोग प्रयास करने पर, एक विशेष अनुशासन, दिनचर्या व स्वभाव का पालन करते हुए नेतृत्व के गुणों को न केवल प्राप्त कर सकते हैं बल्कि उन्हें विक. सित और परिमार्जित कर सकते हैं। प्रभावशाली व्यक्तियों के गुणों को अपना कर, नेतृत्व के गुणों के बारे में बिस्तार से पढ़कर और आत्मसात कर (अपने में समाहित कर) के अच्छे नेता बनना संभव है।

अच्छे नेता बनने के कुछ गुण व उन्हें प्राप्त करने के आसान तरीकों का वर्णन नीचे किया जा रहा है जिनके बल पर आप भी शीर्ष नेता बन सकते हैं और एक सफल जीवन गुजारते हुए मान–सम्मान, दौलत और नाम कमा सकते हैं। अतः राजनीति आपके लिए भी एक शानदार कैरीयर हो सकता है।

– सर्वप्रथम नेता में साहस व आत्मविश्वास कूट–कूट कर भरा हो। हीन भावना का त्याग करना होगा।

– नेता को अपने साथ और समर्थन पाने के लिए अनुयायी (फ़ौलोवर्स) बनाने चाहिए क्योंकि कोई भी व्यक्ति बड़ा काम व बदलाव एक संगठन/समूह के जरिये ही कर सकता है।

– नेता को जनसमूह के बीच घुल मिल कर रहने में जरा भी संकोच नहीं होना चाहिए अन्यथा वह जनता का विश्वास नहीं प्राप्त कर सकता, समर्थन तो दूर की बात है।

– नेता को जन समूह व समर्थकों को प्रभावित करने के लिए भाषण देने की कला में निपुण होना चाहिए। अतः अपने स्कूल से प्रारंभ करें कि कक्षा में सवाल पूछे, सुबह एसेम्बली

में समाचार व आज का विचार पढ़ने के लिए खुद पहल (बौलंटियर) करें। इससे समूह का डर खत्म होगा।

– सफलवक्ता बनने के लिए स्कूल कालेज में होने वाली डिबेट (वाद–विवाद) प्रतियोगिता में बढ़–चढ़ कर भाग लें। इससे स्टेज का डर खत्म होगा।

– प्रारंभ में घबराहट होगी, गला सूख जायेगा, जुबान चल नहीं पायेगी, सामने भीड में आलोचना के डर से पैर कांपने लगेंगे, पर परवाह नहीं, इन सब से जीत हासिल करें।

– डेलकार्नेजी के ''पब्लिक स्पीकिंग की कला पुस्तक'' का बार–बार अध्यन करें। डिबेट के बिषय को समझ कर उस पर प्राप्त विस्तृत जानकारी जमा करें। फिर उन्हें पांइन्टस में उनकी गम्भीरता व गहराई के क्रम में क्रमबद्ध करे। प्रारंभ संबोधन की औपचारिकता से कर बिषय की भूमिका, विषय पर उपलब्ध विचार एवं तथ्यों के बल पर विषय के पक्ष विपक्ष में अपने विचार, जोश पूर्वक रखते हुए अन्ततः विरोधियों के तर्कों को काटते हुए अपनी बात पूरे यकीन से रखें व श्रोताओं का समर्थन प्राप्त करें।

– अपने व्यक्तत्व के समय सहज रहे, नर्वस न दिखें, पूर्णतः संयत रहें, शरीर व हाथों को अनावश्यक तरह से न हिलाये। हाथों का मूवमेन्ट विषय की गंभीरता को बढ़ाने व श्रोतों पर विशेष प्रभाव डालने के लिए ही करें।

– वक्तव्य के बीच में चुटकले, शेर–ओ–शायरी, शूक्ष्म कविता इस आशय से बोलें, कि इनसे आपके तर्कों और तथ्यों को बल मिले, अतः ये मेल खाने वाले ही हो ताकि श्रोता पूर्णतः आपकी बात से सहमत व प्रभावित हो उठें और तालियां

बजाने लगें।

– समय सीमा का ध्यान रखें, वक्तव्य में से अनावश्यक बातें निकाल दें और समय, परिस्थिति के अनुरूप ही विषय को छोटा या बड़ा करें।

– आवाज में उतार–चढ़ाव होना वांछनीय (डिजायरेबल) है। सारगर्मित तथ्य व तर्क देते समय आवज को चढ़ायें अन्यथा सामान्य रखें।

– अपनी बात का श्रोताओं पर अपेक्षित (डिजायरेबल) असर डालने के लिए प्रभावशाली शब्दावली का प्रयोग करे, हल्की बात का कोई असर नहीं पड़ता।

– पूरे समय चेहरे से प्रसंन्नता व आत्म विश्वास का परिचय दें/प्रदर्शन करें।

अतः एक अच्छे नेता बनने के लिए वाकपटुता प्राथमिक गुण है। आप क्या हैं वह आपके बोलने के तरीके से ही पता चल पायेगा अतः इसमें कुशलता अनिवार्य है।

नेता गिरी अथवा नेतृत्व लोगों में प्रभाव डालने का दूसरा नाम है। कुछ पल की मुलाकात कुछ ऐसी हो कि अनन्त तक अमिट छाप छोड जाय। यह आपके बात व्यवहार व वार्ता कौशल से निर्धारित होता है। बोल–चाल के साथ–साथ हावभाव भी प्रभावशाली होने चाहिए। आपके पूरे व्यक्तित्व से आत्म विश्वास जोश, उमंग व खुश मिजाजी फूटनी चाहिए, जिसमें अन्य लोगों के लिए उचित सम्मान व आदरभाव हो। आप लोगों का आदर किये बगैर उनसे आदर प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

अच्छे नेता के लिए कठोर आत्म–अनुशासन व ईमानदारी आवश्यक गुण हैं। महान लीडर्स जानते हैं कि उनकी पहले नम्बर की जिम्मेदारी है उनका अपना अनुशासन और व्यक्तिगत विकास (आत्म

विकास)। अगर वे स्वयं का नेतृत्व नहीं कर सकते तो वे दूसरों का नेतृत्व भी नहीं कर सकेंगे। हर अच्छा काम खुद से शुरू होना चाहिए। अतः खुद को अनुशासन व कठोर परिश्रम में ढालने से ही अच्छे नेतृत्व की शुरूआत होती है। अच्छे लीडर के लिए ईमानदार होना भी आवश्यक है अन्यथा आपके समर्थक और अनुयायी आप पर विश्वास नहीं करेंगे और आपके साथ नहीं रहेगें। ईमानदारी सफलता के लिए महान गुण और सफलता की आवश्यक सीड़ी है। ईमानदारी आपने साथ और अन्य लोगों के साथ जरूरी है। कभी भी स्वार्थबश अपने फायदे के लिए ईमानदारी का साथ छोड़ा तो नेतृत्व के सपनों का महल ढह जायेगा, तब सभी योजनायें धरी की धरी रह जायेंगी।

राजनैतिक नेता के लिए देश की प्रशासनिक व राजनीतिक प्रणाली का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है, केन्द्र/राज्य व जिला स्तर पर प्रशासन किस तरह काम करता है, प्रशासन के कितने अवयव हैं और उनके कर्तव्य व अधिकार क्या हैं और उनकी सीमायें क्या होती है; की जानकारी जरूरी है। भारत के संविधान में निहित अधिकारों व कर्तव्यों का विवरण जानना बहुत जरूरी है। मूल अधिकारों में अभिव्यक्ति की आजादी को ठीक माने में जानना चाहिए, इसका दुरूपयोग न करें। विधायिकी, कार्यपालिका, व न्यायपालिका की शक्तियों व सीमाओं की जानकारी रखें ताकि एक का दूसरे के कार्य क्षेत्र में हस्तक्षेप न हो और प्रशासन में शांति व सौहार्य बना रहे, किसी से टकराव न हो।

राष्ट्रीय व प्रदेशीय स्तर पर राजनीति में भाग लेने के इच्छुक व अभिलाषा रखने वाले प्रत्यासियों के लिए इन संस्थाओं की कार्य प्रणालियों (पार्लियामेंन्टरी प्रोशीजर्स) की जानकारी बहुत लाभदायक होगी अन्यथा इसे सीखने–समझने में कार्यकाल के प्रारंभ के कई माह लग जाते हैं।

चुनाव आयोग के अधिकारों व प्रत्याक्षियों के कर्तव्यों की जानकारी अपेक्षित है। नौमिनेशन में होने वाली गलतियों से सावधान रहें। किसी प्रकार की गल्तियों का फल आगे तक भोगना पड सकता है। अपनी व्यक्तिगत सूचनायें, चल–अचल संपत्ति का विवरण, चुनाव में खर्च का व्यौरा समझ बूझ कर ही दें। चुनाव में अनैतिक तरीकों के प्रयोग से बचें, आप सैकड़ों नजरों के केन्द्र में हैं। रिप्रजेन्टेशन ऑफ पीपल्स एक्ट की बारीकीयों को पढ़ें और समझें और उनका उलंघन करने से बचें।

अतः प्रयास शुरू कर दें स्कूल की प्रेयर सभा से कॉलेज की डिबेट से, महाविद्यालय या विश्व विद्यालय के यूनियन के चुनाव लड़कर। इन सबसे चुनाव लड़ने की रणनीति का पता चलने लगेगा। हर बार हर साल चुनाव में भाग लें। चुने जाने पर अपने वार्ड, निर्वाचन क्षेत्र का भरपूर ध्यान रखें बार–बार जायें लोगों के दुख–सुख में शामिल हो, क्षेत्र के लोगों की परेशानियों पर बोर्ड की मीटिंग में पुरजोर बहस करें उन्हें दूर कर लोगों की शाबासी लें। कुछ समय तक अनुभव प्राप्त कर किसी अच्छी पार्टी से जुड़ कर विधान सभा का चुनाव लड़े। चुनाव में नैतिकता का साथ न छोड़ें। अपना एक कोर ग्रुप बना कर क्षेत्र के प्रमुख लोगों से मिलें, बात–चीत करें और उनका समर्थन प्राप्त करें। इस चुनाव के अनुभव का फायदा संसद के चुनाव में उठाये, बस पहुंच गये अपने शिखर पर।

♦♦♦

पर्यटन न कि पलायन

डा॰ हेमलता उनियाल, एवं कृश्न आर्य,
पूर्व पर्यटन आयुक्त, त्रिपुरा

स्थितियाँ यदि अनुकूल हों तो कोई भी दीन–हीन नहीं बनना चाहेगा और न ही कोई पलायन करना चाहेगा। भागना यानी पलायन करना चाहे परिस्थितयों से हो, इरादों से हो या फिर गाँवों से हो, दुष्कर ही है। बेहतर कल के अर्थ में शायद इसे श्रेयस्कर भी कहा जा सकता है, लेकिन तब इसकी मूल जड़ें उखड़ें नहीं बल्कि सिंचित होती रहें।

उत्तराखंड में पलायन आज एक विकट स्थिति बन चुकी है। आंकड़े बताते हैं कि उत्तराखंड बनने के बाद से इनमें 2.80 लाख घरों पर ताले लग गऐ हैं और 23 लाख लोग गाँव छोड़ चुके हैं। गांवों से जो एक बार शिक्षा व रोजगार के लिए निकला और शहर में जिसने पैर टिका लिया, उसने फिर गाँव की ओर मुड़कर नहीं देखा। लखनऊ, दिल्ली पंजाब, हरियाणा, जयपुर, चंडीगढ़ गुजरात और मुबई आदि शहरों में उतराखंडी बड़ी संख्या में हैं और विभिन्न काम धन्धों में मस्त होकर रहते हैं। देश में यहां तक उतराखंड के लोग फैले हुए हैं। इस स्थिति में शहर भरते गए और गाँव खाली होते गए । बेहतर होता कि शहर में एक अच्छी स्थिति बना चुका व्यक्ति गाँव से थी किसी न किसी रूप में जुड़ा रहता। साल में दो–चार बार आने से उसके घर के रास्ते तो कम से कम साफ होते जहाँ झाड़ियों ने एक नया रूप ले लिया है। यदि बंजर भूमि में किलिप्टस, पौपलर या नीम के पौधों लगा दिये जाते, तो कालांतर में इनसे अच्छी आमदनी मिल सकती है। इस दिशा में गंभीरता से कार्य किया जाना चाहिए। गाँवों

में आज मात्र बुजुर्ग ही रह गऐ हैं या वे लोग जो निकटतम शिक्षा या अन्य किसी व्यवसाय से जुड़े है। सुंदूर जिलों में करीब 3,600 गाँवों का अस्तित्व खत्म होने के कगार पर है, ऐसा माना जा रहा है।

उत्तराखंड का एक वर्ग ऐसा भी है जो खेती बाडी करना चाहता है। अपने पूर्वजों द्वारा बनाये गऐ खेतों पर बीज बोना और फसलें लहलहाना चाहता है किंतु बंदर, सुअर, सैल आदि जंगली जानवरों ने स्थिति चिंताजनक बना दी है। इन जानवरों द्वारा उनकी मेहनत नष्ट कर दी जाती है। कई महीनों की मेहनत को उजाड़ने में ये अब सिद्धहस्त और आक्रामक हो गए हैं। अब न इन्हें कुत्तों का भय रहा न इंसानों का। स्थिति यह है कि झुंड में आ रहे इन जानवरों से कुत्ते भी लगे हैं। घरों के भीतर इनका वेखौफ प्रवेश आमबात हो गई है।

पर्यटन की दृष्टि से चार धाम यात्रा के अतिरिक्त भी ऐसे पर्यटकों की बड़ी संख्या है जो अपने निजी वाहनों से दिल्ली, चंडीगढ़, मुरादाबाद, रामनगर, मेरठ, लखनऊ आदि षहरों से दो–तीन दिन की पिकनिक मनाने के लिए नैनीताल, मसूरी, देहरादून घूमते आते हैं। पर्यटन उत्तराखंड की आर्थिक स्थिति सुधारने का एक अच्छा साधन बन सकता है, बशर्ते यह आमोद–प्रमोद तक सीमित न रह कर धार्मिक आत्मा, सांस्कृतिक तथा प्रकृति प्रेम, साहसिक यात्रों आधारित, प्रदुषण राह हो। पर्यटकों को उत्तराखंड के अन्य पर्यटक स्थलों की जानकारी देना, वहाँ रहने , खाने व ट्रासपोर्ट की व्यवस्था का विस्तार किया जाना अभी भी शेष है। यहां धार्मिक पर्यटन चार धाम यात्रा के अलावा हेमकुड, रीठा साहब, पिरानकलियर, देवी ध ूरा, नारायण स्वामी आश्रम, हरिद्वार ऋषिकेश, जागेश्वर, पाताल भुवनेश्वर बैजनाथ, पूर्णागिरी मंदिर आदि हिमक्रीडा स्थल (ओली), पिंडारी ग्लेशियर, नैसगरिक सौंदर्य स्थल (फूलों की घाटी) स्वर्ग की छटा लिए हुए, नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान तथा नंदा देवी अमयरणय

गंगोत्री ग्लेशियर, कार्बेट राष्ट्रीय वन्य जंतु उद्यान, राजाजी वन्य जंतु उद्यान; झील और तालों की श्रृंखला में सात ताल, भीम ताल, नैनीताल, नौकुचिया ताल, हरीशताल, केदारताल) नानक मत्ता टेहरी डैम। पँच प्रयाग (देव प्रयाग, रूद्र प्रयाग, कर्ण प्रयाग, नंद प्रयाग, तथा विष्णु प्रयाग), पुराने पर्यटन स्थल (मसूरी, देहरादून, धनोल्टी, हरशिल, लैंसडाउन, न्यूटिहरी श्रीनगर, ऋषिकेश, हरिद्वार, नैनीताल, रानीखेत, अल्मोड़ा कौसानी, चौकोड़ी, चंपावत, पिथौरागढ़ मुक्तेश्वर, भीम ताल, राम नगर) प्रमुश है। ऋषिकेश में रिवर रैफ्टिंग, नैनीताल, नौकुचिताल, टेहरी डैम में नौकुचिताल, टेहरी डैम में नौका विहार का अद्भुत आनंद, अल्मोडा का नंदादेवी मेला, देवीधूरा बग्वाल (पत्थर प्रहार) मेला, नैंनीताल का ग्रीष्म तथा शरद उत्सव सैलानियों की भारी भीड़ आकर्षित करते हैं।

उत्तराखंड में प्रकृति प्रदत्त वे सभी संसाधन है जो एक आदर्श पर्यटन प्रदेश के लिए आवश्यक है और जो अन्य प्रदेशों में उपलब्ध नहीं है। अतः तमाम संभावनों को साकार करना हम सबका उद्देश्य होना चाहिए। गाँवों में मिलने वाल पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद और कहाँ मिल सकेगा भट–गहत के डुबके चुड़कानी, लाल चावल का भात, चौलाई–पालक राई पतों की हरी सब्जी जख्या का तड़का का बगार खीरे का चटपट रायता, भंगीरे की चटनी स्वाद की एक दूसरी ही, दुनिया में जे जाते हैं। इन्हें लोकप्रिय करने की जरूरत है। गांवों में साफ सुथरे घरों में शौचालय की सुविधा के साथ अतिथि विकसित किये जाने चाहिए। इस तरह पर्यटकों को ग्रामीण जीवन की भी जानकारी मिल सकेगी।

इतनी अनेक संभावनाओं में युवक युवतियों के लिए जिविकोपार्जन के लिए बहुत अच्छे अवसर है। होटल, पर्यटन उद्योग के मुख्य स्तंभ है। होटल मैनेजमेंट की ट्रेनिंग के लिए सैकड़ो अवसर है। इनमें

वेटर, वेलबौय, मेनटेनेंस तथा सफाई स्टाफ होटल से लगे टूरिस्ट गाइड, ड्राइवर, टूर औपरेटर, ट्रैवल एजेंट (टिकिट बुकिंग) के अवसर उपलब्ध है। स्थानीय भोजन बनाने में महारथ हासिल युवाओं को भोजनालय खोलना चाहिए। हरेक पर्यटन स्थल के आसपास कुछ युवा मिल कर स्थानीय संगीत, लोक–गीत तथा लोक–नृत्य की टोलियां बनाएं जिसमें सुमधुर ध्वनि तथा लय वाले गीत और नृत्य प्रस्तुत करने को तत्पर होने चाहिए। वे पर्यटकों से पेमेंट के आधार पर उनके मनोरंगज के लिए लोकगीत, लोकनृत्य आदि का आयोजन हर रोज करें। स्थानीय होटलों से भी इस बारे संबंध बना सकते हैं ताकि नियमित आमदनी मिलती रहे।

सरकार की सक्रिय भूमिका के बिना पर्यटन का लोकप्रिय होना असंम्. भव है। सरकार गांवों तक पक्की सड़क बनाऐं, गाँवों में अतिथिगृह और शौचालयों की सुविधा उपलब्ध कराए तो ग्रामीण पर्यटन पनपने लगेगा। ग्रामीण परिवेश से परिचित कराने से पूर्व कुछ सावध ाानियां बरतनी आवश्यक होंगी, जैसे पर्यटकों के साथ धोखाधड़ी, पर्यटकों ठगी जैसी घटना न हों और ना ही दुर्व्यवहार हो। उसी प्रकार पर्यटकों को सचेत कराया जाए कि वे गांव में किसी प्रकार की अभद्रता तथा मर्यादित व्यवहार न करें। न नशा करके गांव का माहौल खराब करें।

आजकल पौली हाउसों में फूल और सब्जियां उगाने का बहुत अच्छा चलन चल पड़ा है। युवाओं के लिए पर्यटन के विकास के साथ इन कार्यों से अच्छी आमदनी मिल सकती है। कटफ्लावर, मौसमी सब्जियां मसरूम आदि की खपत बहुत है। पर्यटक फूलों की पौध भी खरीद कर ले जाते हैं। इस व्यवसाय में न जमीन ज्यादा लगती है न मशीनरी खाद–बीज और मामूली मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। भीमताल, पदमपुरी इत्यादि स्थानों में इनकी बहुतायत है।

पलायन के फलस्वरूप बंजर पड़ी जमीनों में वृक्षारोपण करके कागज उद्योग, घरेलू लकड़ी की समस्या तथा भूस्खलन की समस्याओं से निबटा जा सकता है। ग्रामीण युवा घर बैठे जीविकोपार्जन कर सकते हैं। अच्छी नस्ल की गाय–भैंस से दूध–दही की बिक्री करके अच्छी आमदनी अर्जित करना संभव है। स्थानीय अनाजों, फल तथा सब्जियों की आजकल भारी मांग है। इनकी आपूर्ति करके भी आमदनी कमाई जा सकती है।

♦♦♦

सफलता के लिए परिश्रम और भाग्य दोनों
की जरूरत बराबर है है
जैसे बैंक लॉकर की दो चाबियाँ होती है; एक आपके पास और दूसरी बैंक मैनेजर के पास। आपकी चाबी आपका परिश्रम है और मैनेजर की चाबी आपका भाग्य। जब दोनों मिलते हैं तभी सफलता का लॉकर खुलता है, वरना नहीं खुलेगा।

रंगमंच और रोजगार

(जहूर आलम, निदेशक युगमंच, नैनीताल)

रंगमंच या नाटक का मूल आधार अभिनय है। हर व्यक्ति में अभिनय की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। अभिनय का इतिहास मानव सभ्यता के इतिहास जितना ही पुराना है। आदिम काल में जब बोलियाँ या भाषा नहीं थी, तब भी अभिनय कला थी। मानव अपनी भावना और इच्छाओं को अपने हाव–भाव या तरह–तरह की आवाज़ों के ज़रिए ही प्रकट करता था। छोटे बच्चे के हाव भावों को हम आज भी इसके सटीक उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

अगर हम आने समाज में देखें तो किसी भी व्यक्ति की अभिनय इच्छा की पूर्ति के लिए सबसे सुलभ अवसर रामलीला होता है। जहाँ वह राम की 'वानर सेना' या रावण की 'राक्षस सेना' का हिस्सा बन कर अपनी इस अभिनय इच्छा को पूरी करता है। आज के सभी बड़े अभिनेता इस बात को स्वीकार करते हैं कि उनके अभिनय का पहला सोपान रामलीला ही रही है।

अब आइए सबसे पहले उत्तराखंड में रंगमंच की पृष्ठभूमि और इतिहास पर सूक्ष्म दृष्टि डाल लेते हैं। उत्तराखंड के कण–कण में मनोरम संस्कृति के रंग बिखरे पड़े हैं। यहाँ लोक–नाट्यों की परम्परा बहुत प्राचीन है। स्थान–स्थान पर होली, रामलीला, जातें (यात्राएं), पांडव नृत्य, मुखौटा नाटक, खेल परम्परा, पंडवानी शैली, भड़ौली, राधाखंडी, स्वांग, रम्माण, हिलजात्रा, होली ठेटर, भड़, हिरन–चित्तत आदि और मेले–ठेले व कौथीक के अवसर पर होने वाली अनेक लोक–नाट्यों की रंग–रंगीली शैलियाँ विद्यमान हैं।

यहाँ के केदारखंड, गढ़वाल क्षेत्र में कालीमठ के समीप कविल्ठा गाँव में महाकवि और नाटककार कालीदास का जन्म दिन प्रतिवर्ष 15

जून को बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। अनेक विद्धानों, आचार्य मागीश विद्यालंकार, डॉ. शिवानंद नौटियाल और डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' आदि का यह विचार है कि कालीदास का जन्म यहीं हुआ था।

दूसरी ओर मानसखंड अर्थात् कुमाऊँ में नरेश रूद्रचंद्र देव सन् 1566 में सत्तारूढ़ हुए। उन्होंने सन् 1582 में 'उषा रागोदया' नाटिका की रचना की और 'ययाति चरित्र' आदि नाटक संस्कृत में लिखे। विद्वान नित्यानंद मिश्रा के अनुसार ''यह सुखद आश्चर्य है कि राज्य व्यवस्था में व्यस्त होते हुए ही साहित्य प्रेमी राजा रूद्रचंद्र ने उत्कृष्ट संस्कृत भाषा में साहित्य रचना की और नाटक लिखे।''

कलांतर में उत्तराखंड के नाटकों की गौरवशाली परंपरा को हमारे अग्रेजों ने न केवल आगे बढ़ाया बल्कि उत्तराखंड का नाम देश और विश्व स्तर पर रोशन किया। इनमें से कुछ सांस्कृतिक मनीषियों का ज़िक्र करना समीचीन होगा। इनमें मोहन उप्रेती, वृजमोहन, शाह, राजेंद्र धस्माना, वृजेंद्र लाल साह, लेनिन पंत, नईमा ख़ान उप्रेती, उर्मिल थपलियाल, गिरीश तिवाड़ी 'गिर्दा', बी.एम. बडोला, गोविंद चातक, प्रेम मटियानी आदि है। वर्तमान पीढ़ी के भी कई रंगकर्मियों का योगदान उत्तराखंड के रंगकर्म को संवंर्द्धित करने में बहुत महत्वपूर्ण रहा है। दर्जनों रंगकर्मी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली व अनेक अन्य नाट्य प्रशिक्षण संस्थानों के लिए चयनित हुए और उनमें से कई रंगकर्मियों ने नाटकों को ही अपना ओढ़ना–बिछौना व जीविकोपार्जन का ज़रिया बनाया।

उत्तराखंड के रंगकर्म को वर्तमान पीढ़ी के जिन रंगकर्मियों ने आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान किया है उनमें उल्लेखनीय नाम डॉ. डी. आर. पुरोहित, डॉ. सुवर्ण रावत, जूहर आलम, डॉ. एहसान बख्श, श्रीष डोभाल, ललित पोखरिया, सुरेश काला, महावीर रव.

ांल्टा, संगम बहुगुणा, निर्मल पांडे, राकेश भट्ट आदि हैं। इन रंगकर्मियों ने उत्तराखंड के नाटकों को देश स्तर पर एक नई पहचान दिलाई है और लोक–नाटकों में नये–नये प्रयोग कर उत्तराखंड के लोक–नाटक का एक नया चेहरा और पहाड़ी नाटकों का अपना एक अलग लोक मुहावरा तलाशने की भी कोशिश की है।

कला और रंगमंच से शुरू में कोई भी व्यक्ति शौकिया तौर ही जुड़ता है। फिर धीरे–धीरे उसे इसमें आनंद आने लगता है और फिर कुछ लोग कला में ही जीने लगते हैं। रंगमंच और अभिनय में उत्कृष्टता के लिए बहुत मेहनत और लगन की जरूरत होती है, और शिखर तक पहुँचने के लिए जुनून की हद से गुज़रना पड़ता है। इसमें ऐसे ही लोग कमयाब होते हें जो इसे अपना ओढ़ना–बिछौना और मक्सद बना लेते हैं। परिपक्व होने पर इसको प्रोफेशन बनाने के तमाम रास्ते खुल जाते हैं और तब आप एक बेहतर व सुसंस्कृत समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं। इसी संदर्भ में किसी विद्वान ने कहा भी है कि ''संस्कृतिकर्मी दुनिया के सबसे बेहतर लोग होते हैं।''

थियेटर से जुड़े लोग काम के किसी भी क्षेत्र में जाएं, वे हर जगह सफल रहेंगे क्योंकि नाटक में दुनिया की सभी कलाएं और विषय समाहित हैं। रंगमंच व्यक्तितत्व के विकास में बड़ा योगदान करता है एवं दुनिया और समाज की समझ पैदा करता है, दृष्टिवान और परिपक्व बनाता है, लेकिन इसके लिए ईमानदारी एक जरूरी शर्त है। पेशेवर अभिनेता या रंगमंच कला को पेशे की तरह चुनने से पहले, प्रतिभा के साथ–साथ समुचित ट्रेनिंग और विषय के अभ्यास की जरूरत पड़ती है। इसे किसी समझदार नाट्य–गुरु और किसी बेहतर इतिहास वाली नाट्य मंडली में प्रवेश लेकर पूरा किया जा सकता है। जिस प्रकार कुम्हार कच्ची मिट्टी को खूबसूरत आकार

देता है, उसी तरह गुरू भी किसी बच्चे या युवा को गढ़कर सही दिशा देता है ताकि वह कैरियर भी बनाए और समाज के प्रति अपना कर्तव्य भी निभाए।

किसी गुरु या नाट्य मंडली से आधारभूत और प्रारंभिक अक्षर–ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद आप देश भर में फैले अभिनय और नाट्य व फिल्म संस्थानों में प्रवेश ले सकते हैं। इनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एन.एस.डी, दिल्ली, भारतेंदु नाट्य अकादमी (बी. एन.ए), लखनऊ, जामिया मिल्लिया, दिल्ली, भोपाल नाट्य विद्यालय, गढ़वाल विश्वविद्यालय में एम. ए. थियेटर आदि संस्थानों में प्रवेश लेकर आप अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं और एक प्रोफेशनल अभिनेता और रंगकर्मी बन सकते हैं। यहाँ मैं नैनीताल की नाट्य संस्था युगमंच का उदाहरण देना चाहूँगा जिसकी स्थापना चालीस वर्ष पूर्व सन् 1976 में स्वनामधन्य मोहन उप्रेती, ब्रजेंद्र लाल साह, लेनिन पंत, बी..एम. शाह, गिरीश तिवाड़ी (गिर्दा), डॉ. शेखर पाठक जैसे प्रतिभावान और नामी–गिरामी सांस्कृतिक दिग्गजों ने की थी। युगमंच से अभिनय का अक्षर–ज्ञान लेकर 18 कलाकार राष्ट्रय नाटय विद्यालय (एन एस डी), 4 भारतेंदु नाट्य अकादमी (बीएनए), लखनऊ, 8 फिल्म संस्थान (एफ टी आई आई), पुणे और दर्जनों अन्य राष्ट्रीय संस्थानों से दीक्षित होकर थियेटर व सिनेमा के चमकते सितारे बने। इनमें मुख्य निर्मल पांडे, ललित तिवारी, ज्ञान प्रकाश, सुमन वैद्य, गोपाल तिवारी, सुनीता चंद, नीरज साह, सुदर्शन जुयाल, ईशान त्रिवेदी, सीमा बोरा, राजीव कुमार (निदेशक फिल्म डिवीजन, भारत सरकार) आदि हैं।

युगमंच के अलावा पहाड़ी पृष्ठभूमि के अन्य कलाकारों में हिमानी भट्ट, दीपक डोबरियाल, हेमंत पांडे, सुधीर पांडे, तिगमांशु धूलिया आदि तमाम कलाकारों का मूल आधार रंगमंच ही रहा है। देश–विदेश

में पहाड़ की पहचान बनाने वाले प्रमुख रंगमंच कलाकारों में बी. एम. शाह ने रंगमंच को ही अपना जीवन समर्पित कर दिया था। वे नैनीताल से रंगमंच की शुरूआत करने वाले राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच (1963) के विद्यार्थी थे और उन्होंने सन् 1982 से 1985 तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक के पद को सुशोभित किया। इसी प्रकार मोहन उप्रेती पर्वतीय कला केन्द्र के खेवनहार और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में प्रोफेसर के पद पर रहे। पहाड़ के ही ब्रजेंद्र लाल साह, लेनिन पंत, गिरीश तिवाड़ी गिर्दा, प्रेम मटियानी आदि दिग्गजों ने भारत सरकार के गीत और नाटक प्रभाग में सेवाएं दी। राजेंद्र धस्माना, नईमा ख़ान उप्रेती, उर्मिल थपलियाल, मोहन थपलियाल, बी.एम. बडोला, दीवान सिंह बजेली आदि तमाम ऐसे बड़े नाम हैं जिन्होंने पत्रकारिता और सेवा में रहते हुए अभिनय और रंगमंच को जीवन समर्पित किया है।

जैसा कि मैंने पहले भी अर्ज़ किया है कि रंगमंच आपकी समझ को विकसित करता है, तर्क शक्ति को बढ़ाता है, परिपक्व दृष्टि और पूरे व्यक्तित्व का विकास करता है, जो आपके भविष्य के लिए बहुत सहायक होता है। इसका जीता–जागता उदाहरण यह है कि मेरे साथ कुमाऊ विश्वविद्याल में नाटक करने वाले दर्जनों मित्र आज आई.ए.एस., आई. एफ.एस., आई.आर.एस., डाक्टर, इंजीनियर और देश के सरकारी व गैर सरकारी बड़े–बडे पदों पर सेवारत हैं। अगर आप में अभिनय की ललक है, रंगमंच के लिए प्यार है तो आप भी इस क्षेत्र में अपना भविष्य बना सकते हैं।

♦♦♦

परंपरागत कृषि से उन्नत कृषि की ओर

– डा॰ डी॰सी॰ उप्रेती पूर्व प्रोफेसर अमेरीटस
–कृश्न आर्य, पूर्व संयुक्त सचिव (कृषि मंत्रालय)
– डा॰ हेमलता उनियाल सामाजिक
कार्यकर्ता एवं लेखिका

यह तो निश्चित है कि हमारे पूर्वज महापराक्रमी रहे होगें जिन्होंने घने जंगलों को साफ कर बेहद ढ़ालू ऊबड–खाबड़ चट्टानी पहाडों को काट कर सुंदर सीढ़ीनुमा खेत बनाए, और उन खेतों में सभी प्रकार के आनाज, तिलहन, दलहन, सब्जियों, फल और जानवरों के चारे रसोई में ईधन के काम आने वाले वृक्षों की खेती की होगी।

पहाडों में परंपरागत तरीकों से खेती करना एक बड़ी मजबूरी है, जो कुछ लोगों की नियति बन गयी है। पहाड़ों में न तो कोई मिल–कारखाने हैं कहीं कोई बडे रोजगार मेहनत–मजदूरी की सुविधाऐं हैं; न उनके पास समुचित पूंजी है कि कोई व्यापार कर सकें, नहीं कोई विशेष दक्षता है कि उन्हें अपना कारोबार शुरू कर स्वरोजगार चला सके। बचपन से पारंपरिक खेती यानी हल–बैल, गोबर की खाद, बारिश से सिंचाई और खुद के बनाये घरेलू बीजों के प्रयोग का ही अनुभव व दक्षता प्राप्त है। अतः न चाहते हुए भी वही पुराने तरीके से खेती करते रहते हैं। और खाली समय में मे. हनत मजदूरी करके अपना गुजारा करते हैं। अब आवश्यकता है कि पर्वतीय क्षेत्रों की परंपरागत खेती व बीजों को आधुनिक प्रगतिशील अविष्कारों से मिलाकर नए प्रयोग किये जायें, नए आयाम शुरू किए जाए और कृषि के साथ–साथ पशुपालन–मुर्गीपालन, बागवानी, फल–फूलों तथा औषधीय जड़ी–बूटी को मिलाकर पर्वतीय कृषि को एक लाभदायक, स्वरोजगार तथा जीवकोपार्जन योग्य परियोजना में बदला जाए।

नई सोच पर अमल करना आवश्यक है। कृषि परियोजना को लाभकारी बनाने के लिए यथासंभव सरकार, जिला रेवेन्यू प्रशासन; कृषि विभाग सिंचाई विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, गांव पंचायत, बैंकों तथा गांव की किसान जनता को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए ताकि व्यवधानों के होते हुए भी हम आधुनिक कृषि पद्यति का लाभ किसानों तक पहुंचा सकें। इस प्रक्रिया में पढ़े लिखें परंतु बेरोजगार युवक–युवतियों को अवश्य शामिल किया जाए। सरकारी विभाग तथा अधिकारी प्रेरक व पथप्रदर्शन का कार्य करें और सबका कल्याण, सबकी उन्नति के निम्न बिंदुओं को समझकर सबको दिलोजान से प्रेरित करें और सबसे सहयोग की अपील करें। सबको बताएं कि पांच अंगुलियां मिल जाएं तो मजबूत मुठ्ठी बन जाती है अन्यथा अंगुलियां कमजोर ही बनी रहती हैं।

सर्वसम्मित से यह तय किया जाए कि गांव के शिखर/चोटी में जंगल हो जिसमें स्थानीय वनस्पति व जंगली फल काफल, घिंगारू आदि के वृक्ष हो तथा बीच–बीच में वाटर हार्वेस्टिंग के लिए कच्चे गड्ढे खोदे जाने चाहिए। इससे गांव के पानी के स्रोत सदाबहार रहेंगे तथा भूस्खलन में कमी आयेगी।

आम सहमति बनाई जाय ताकि गांव की जमीन को इस तरह अदला–बदली करें कि एक व्यक्ति की जमीन एक साथ हो सके। रेवेन्यू विभाग के अधिकारी सबको समझा बुझाकर चकबंदी की तरह का कुछ प्रबंध करें। किसी के साथ पक्षपात न करते हुए हरेक को अच्छी व उपजाऊ जमीन का बंटवारा न्याय संगत तरीके से हो। अधिक से अधिक लोगों की जमीन आसपास एक जगह पर हो सके।

कृषि विभाग के कार्यकर्ता तथा अधिकारी उस गांव की मिट्टी का परीक्षण करवा कर उपयुक्त प्रकार की खादों तथा प्रमाणित बीजों

का प्रबंध करके अपने गोदाम में रखें कि कब और कितनी मात्रा में खाद और बीज बोने चाहिए, वे किसानों को सलाह दें। और उन्हें ये उपलब्ध करायें। अच्छी उपजाऊ भूमि में गेहूं, धान, मंडुवा, सब्जी आदि की खेती और कम उपजाऊ भूमि में दलहन, तथा तिलहन की खेती करने की सलाह दें। इन फसलों की उन्नत किस्मों के बीज भी उपलब्ध कराए। समय–समय पर खेतों में जाकर निरीक्षण करें और भूल सुधार करवाएं।

लीड बैंक किसानों को जरूरत के मुताबिक कर्जा देने की व्यवस्था करें। कर्ज समय पर मिलना आवश्यक है अन्यथा वे खाद–बीज समय पर नहीं खरीद पाऐंगे तो फायदे की जगह नुकसान होगा। आवश्यक औपचारिकता समय से पहले करवा लेनी चाहिए।

किसान अपने, हल, बैल तथा कृषि में प्रयोग होने वाले अन्य उपकरण ों को समय पर तैयार रखें। यदि पावर–टिलर किराये पर लेना है तो उसकी बुकिंग अग्रिम तौर पर कर लें। यदि कृषि कार्य में मजदूरों की आवश्यकता हो, तो पहले से इंतजाम करके रखे। घर के स्वस्थ व तंदुरूस्त सदस्य खुद ही अपनी खेती में हाथ बंटाएं और यथाशक्ति निराई–गुडाई में पूरी तरह भाग लें।

हर किसान वर्षाऋतु से पहले ही अधिक पानी के निकास के लिए नालियां और पानी खेतों में रोकने के लिए कंट्यूर बंड बना कर रखें ताकि आवश्यकतानुसार पानी रोका जा सके तथा अनावश्यक पानी निकास नालियों से निकल जाए। खेत के सबसे ऊंचे भाग में कुछ गड्ढे बारिश के पानी को जमा करने के लिए बना कर रखें। इन्हे वाटर–हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर कहते हैं जो बहते पानी को रोक कर रखते हैं ताकि वारिश में कमी होने पर इनसे मदद मिल सके।

कृषि में अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए किस फसल के बाद

कौन सी फसल उगाई, जाए इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। पहा. डों के लिए अनुसंधान एवं परीक्षण के पश्चात यह पाया गया है कि फसल इस प्रकार हो– सोयाबीन के बाद गेहूं, अथवा मंडुवा (रागी); सोयाबीन मिश्रित खेती के बाद गेहूं की फसल बोई जाए। धान (चावल) की खेती के बाद गेहूं तथा मटर बोने से अधिक उपज प्राप्त होगा। मंडुवा (रागी) के बाद सरसों लगाने से फायदा होगा। नदी घाटी की सिंचित भूमि में इस फसल चक्र को अपनाने पर आमदनी 2 से 3 गुना बढ़ सकती है। धान की दो से तीन फसलें एक वर्ष में ली जानी चाहिए। कम अवधि में तैयार होने वाली किस्में बोई जाए। फसल चक्र से भी पैदावार में फायदा होता है। हर वर्ष एक ही फसल न बो कर बदल–बदल कर फसलें बोई जाऐं।

दलहनी फसलों की जड़ों की गांठें वायुमंडल की नाइट्रोजन से खाद बनाती है। अतः दलहनी फसलों के बाद बोई जाने वाली फसल को खाद की कम जरूरत होती है। फसल काटने के फौरन बाद पर हल चला कर उसे जमीन के भीतर दबा देना चाहिए ताकि वह खाद में परिवर्तित हो जाय। यह नमी को भी सोख कर रखती है। भारत सरकार के कृषि अनुसंधान केंद्र हवालबाग (अल्मोड़ा) एन.बी.पी.जी. आर, गलाट (भवाली) और गढ़वाल में पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के केंद्र रानी–चौरी (गढ़वाल) में पहाड़ के लिए उपयुक्त बीजों की किस्में तैयार कर रहे हैं जो अधिक उपज देती है और कीट एवं सूखा के लिए प्रतिरोधक भी होती हैं। इन केंद्रो से संपर्क बनाए रखें और इन उत्तम किस्म के बीजों से कृषक अपनी आमदनी बढ़ायें। बा. गवानी के क्षेत्र में चौबाटिया (रानीखेत) मुक्तेश्वर, पौड़ी और श्रीनगर में अनुसंधान केन्द्र हैं जो फल–फूलों के बीज तथा पौध तैयार करते हैं; उत्पादकता और गुणवत्ता में ये राष्ट्रीय स्तर के हैं।

गांव की जिन जमीनों को लोग छोड कर बाहर चले गये हैं उन्हें

बंजर न रहने दिया जाए अन्यथा उनमें जंगली झाडी, कुरी (लेंटाना कामराना) तथा गाजर घास (पार्थेनियम) पूरी तरह जम जाएंगे। पार्थेनियम के बीज राक्षस की तरह फैल रही है जिसे मारने में जितनी बूंद–खून की गिरती है उतने नए राक्षस, पैदा हो जाते थे। यह फसलों की दुश्मन तो है ही इसके सफेद फूलों से निकले बारीक बाल सांस के साथ फेफड़ों में जाकर मनुष्यों तथा जानवरों में दमा, रक्त कैंसर, एनीमिया तथा एलर्जी पैदा करते हैं। लैंटाना बहुत तेजी से फैलने वाली जंगली झाडी है जो अगर काटी और जलाई न गई तो पूरी जमीन में फैल जाती है और जंगली सुअरों तथा तेदुओं को दिन में छिपने में मदद करती है। वे रात में निकल कर फसलों व छोटे जानवरों व बच्चों के लिए घातक सिद्ध होते हैं। इन झाडियों को हर ग्रीष्म ऋतु से पूर्व काट कर सूखने दें और मई जून के महीनों में आग लगा कर जला दे। इन खेतों में गड्ढे खोद कर बरसात शुरू होते ही तेज गति से बढ़ने वाले पेड़ों जैसे पोपलर तथा यूकिलिप्टस के पेड़ लगा दें जो 4–5 साल में पेपर मिल वाले ले जाते हैं, बची हुई टहनियाँ चूल्हा जलाने के काम आती है । कागज मिल वाले इनकी अच्छी कीमत देते हैं। अतः बैठे, बिठाए हजारों रूपयों की आमदनी हो सकती है। इन के बीच–बीच में नीम, गुलमोहर, सिलवर ओक के पेड़ भी लगा सकते हैं। कुछ खेतों में जानवरों के भोजन के लिए भी खड़ीक के पेड लगाएं।

आटा–चावल के आसान तरीके से प्राप्त हो जाने के कारण मोटे अनाजों को हेय नजर से देखा जाने लगा है लेकिन इन अनाजों में बहुत पौष्टिक तत्व कैल्सियम, जिंक, प्रोटीन, तथा विटामिन बहुतायत से पाएं जाते हैं। इनका बाजार मूल्य बहुत है। यदि गोबर की खाद का प्रयोग कर पैदा किया गया है तो ये अनाज आर्गनिक फूड के नाम से बहुत उंची कीमत पर बिकते हैं। अतः इन्हें यदि भोजन के

लिए नहीं तो बेचने के लिए नकदी फसली के रूप में उगाएं और अच्छी आमदनी प्राप्त करें। मंडुवा (रागी) लाल–चावल, गहत, दाल; मक्की का आटा, मशरूम,, भट्ट, पहाड़ी खीरे आमदनी के बहुत अच्छे साधन हैं इनका फायदा उठाएं। भुने भुट्टे भी खूब बिकते हैं।

समग्र कृषि उत्पादन प्रणाली

ऊपर के प्रकरणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि मात्र खाद्यानों की खेती संपूर्ण जीविकोपार्जन के लिए काफी नहीं है और आर्थिक रूप से स्वसमर्थित नहीं है। अतः खेती के साथ फल–फूलों की बागवानी, पशुपालन, मुर्गीपालन, वनपादपों की खेती, औषधीय जड़ी–बूटीयों की खेती तथा पौली–हाउस पद्धति से फूलों जड़ी–बूटियों, फलों तथा सब्जियों की उन्नत किस्मों की खेती, कटफ्लावर्स, टमाटर तथा मशरूम की खेती को शामिल किया जाना चाहिए। यों तो वर्षों के अनुभव तथा ज्ञान–विज्ञान की प्रगति के कारण पर्वतीय किसान अपने आप से भी इन प्रयासों को आजमा रहे हैं, फिर भी इन उपायों का उल्लेख करना आवश्यक है।

उपाजऊ भूमि तथा सिंचित भूमि में गेहूं, धान, रागी (मंडुवा) मौसमी सब्जियों की खेती की जानी चाहिए। कम उपजाऊ भूमि में दलहन फसलों की खेती की जानी चाहिए। दालों के कीट–पतंगों का आक्रमण बहुत होता है अतः उनकी रोकथाम के सारे उपाय अपनाने चाहिए। मध्यम श्रेणी की भूमि तिलहन खास तौर पर सरसों, तिल, सूरजमुखी, उगाने के लिए प्रयोग करें। मंडुवा (रागी) के खेतों में कौनी, भंगीरे और लोबिया के बीज डाल कर मिश्रित खेती का फायदा उठाया जाना चाहिए। धान की कम अवधि वाली किस्में उगाई जायें ताकि साल में कम से कम तीन फसलें ले सकें। खीरों की उपज के लिए, मचान की व्यवस्था करें जिसमें वे लटक कर सुरक्षित रहेंगे। चिडियों के प्रकोप से बचने के लिए टीन कनस्तर

बजाने की व्यवस्था करें। जंगली जानवरों से फसलों को बचाने के लिए कंटीली झाडियों और कंटील तारों की घेरबाड़ करें तथा रात में जगह–जगह आग जलाते रहें।

पशु पालन में गाय, बैल बकरी पालने से खेत जोतने, खाद, दूध, दही, मक्खन, घी तथा मांस की समस्या हल हों जाएगी। जानवरों के लिए पौष्टिक चारा जौ, जई आदि उगाई जाय। और दुधारू पशुओं को बाजार में उपलब्ध पौष्टिक चारा भी खिलाया जाय। बीमारी की हालत न पैदा होने दें। पानी साफ पिलाए और उनके गोठ की नियमित सफाई करें। नस्ल सुधारने के लिए वैट्रीनरी तथा पशुपालन विभाग द्वारा स्थापित कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों का प्रयोग करें। अच्छी नस्ल की गायें अधिक दूध देती हैं। उन्नत चारे तथा प्रजनन की सही सुविधाए भैंसों तथा बकरियों के लिए भी प्रयोग करें।

मुर्गी पालन से मांस तथा अंडे मिलेगें जिन्हें खुद के प्रयोग से बच जाने पर हाट– बाजार में बिक्री करने से नकद धन कमाया जा सकता है। मुर्गियों का दाना घर पर ही बनाया जा सकता है और बाजर में भी आसानी से मिल जाता है। दाना पौष्टिक हो, पानी साफ प्रयोग किया जाए, उनके कटघरें को नियमित रूप से पानी से धोकर सफाई की जानी चाहिए। मुर्गियों में रानीखेत फ्लू नाम की बिमारी से बचने के लिए आवश्यक टीकाकरण करवा लेना चाहिए।

जलवायु तथा मिट्टी के गुणों के अनुसार फल तथा फूलों की खेती की जाए। ऊंचे और अति ठंन्डे क्षेत्रों में सेब, नाशपाती, प्लम की खेती की जाए उच्च उत्पादकता वाली पौध लगाना आवश्यकता है ताकि अच्छी उपज मिल सके। आडू खुमानी, अनार, संतरा, कम ठंडे तथा कम उंचाई वाले क्षेत्रों में लगाए जाए। केला, आम, लीची, तथा नींबू आदि तलहरटी में अच्छी तरह उगते और फलते हैं। सेव, नाशपाती की सही समय पर प्रूनिंग (छंटनी) करानी पडती है। और

खास किस्म के कीट नाशक का समय पर छिडकाव करना अत्यंत आवश्यक है। इन फलों की मार्केटिंग की कोई समस्या नहीं होती।

कुछ विशेष सब्जियां और फूलों की उन्नत किस्मों की पौध लगाने के लिए पौलीहाउस पद्धति का उपयोग हो रहा है। इसके फायदे ये हैं कि ठन्डे तथा गर्मी का प्रभाव नहीं पडता, कीटाणु तथा कीट पतंगे नुकसान नहीं पहुंचा सकते। कम जमीन तथा कम खाद बीज व कम पानी की जरूरत पड़ती है। पौलीहाउसों में उच्च कोटि के मौसमी तथा बेमौसमी फल–फूल व सब्जियों की शुद्ध पौध प्राप्त होती है। जिनकी बिक्री थैलियों में ही शीघ्र तथा काफी ऊंची कीमत में हो जाती है। पौलीथीन की थैलियों या गमलों में उत्तम खाद डाल कर बीज बोए जाते हैं। जिन्ह यों ही बेच दिया जाता है और अगले सीजन के बीज नए पौलीबैग तथा गमलों में बोए जाते हैं। यदि पौध को बढ़ने दिया जाए तो फूल तथा सब्जियां प्राप्त होती हैं। बाजार (होटलों) आफिसों में कट फ्लावर्स तथा आर्गेनिक सब्जियों के रूप में बिक्री की जाती है। इस प्रणाली का प्रशिक्षण देने के लिए कई ऐजेन्सी कार्यरत हैं।

पौलीहाउसों में ही अंधेरे कक्ष का विशेष प्रबंध करके बटन मशरूम जिनकी खपत बडे होटलों के रेस्टोरेंट तथा आम ढाबों में बहुत है, उगाए जा सकते हैं जो बहुत फायदे की खेती मानी जाती है। मशरूम की खेती अवश्य की जानी चाहिए क्योंकि प्रोटीन का अच्छा स्रोत है।

जंगलों में प्राकृतिक तरीके से उगने और फलने वाले फलों में ''काफल'' मुख्य मौसमी फल है जो मई–जून के बाजार में आता है। हिसालू, किल्मोड़ा, बेडू, जून–जुलाई माह में बाजार में लाये जाते हैं। मधुमेह (डाईविटीज) में बहुत फायदे मंद है। बुरास से बनाया अर्क (रस) खून साफ करने तथा धमनियों में रूकावट हटा कर हृदय रोग

के लिए उत्तम टॉनिक बताया जाता है। जिसकी बिक्री हाथों–हाथ होती है। इन प्राकृतिक फल–फूलों का दोहन कर किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। परंतु इनका विस्तार भी करना चाहिए। इस दिशा में विशेष प्रयास किये जायें।

हिमालय क्षेत्र, विशेषकर उत्तराखंड औषधीय पौधों व जड़ी–बूटियों के लिए प्राचीन काल से प्रसिद्ध रहा है। इनका दोहन बहुत तेजी से हो रहा है। इन्हें यदि बचाया न गया तो ये शीघ्र ही लुप्त हो जाऐंगी। जंगलों में तथा घरेलू भूमि (खेती के बाद बची–खुची भूमि) में इनकी वैज्ञानिक तरीके खेती की जाए जिससे किसान इन जड़ी–बूटियों व पौधों को तो जीवित रख ही सकते हैं, इनसे अच्छी आमदनी भी प्राप्त कर सकते हैं। इनका प्रयोग जीवनोपयोगी औषधियों में (आयुर्वेदिक दवाओं में) बड़ी मात्रा में हो रहा है। इनको उगाने तथा दोहन की विस्तृत जानकारी देने के लिए आयुर्वेदिक संस्थान सदैव तत्पर रहते हैं। पतंजलि के हरिद्वार स्थित मुख्यालय में सारी जानक. ारी व सुविधायां उपलब्ध हैं। किसान इन पौधों की खेती से अपनी आमदनी में वृद्धि कर सकते हैं। अनेक सौंदर्य प्रसाधनों में एलोवेरा पौधे की बहुत आवश्यकता होती है। घर के चारों तरफ तथा आंगन के किनारे–किनारे कुछ गमलों में एलोवेरा के पौधे लगा दिए जाएं और उसमें हररोज पानी दिया जाए तो इसकी मोटी–मोटी पत्तियां सालभर निकलती रहती हैं। उन्हें काटकर बाजार में बेचा जा सकता है। और घर में खुद के प्रयोग में भी लाया जा सकता है। इसका सेवन अच्छे स्वास्थ्य तथा सौंदर्य के लिए गुणकारी है।

सरकार तथा निजीकंपनियों को इन उत्पादों की बिक्री की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। गांवों की सहकारी समितियों तथा महिला स्वयं सेवी–समूह इन कामों का दायित्व ले सकते हैं। अनाज और सब्जियों तथा फलों के भंडारण की व्यवस्था भी आवश्यक है।

फलों के संरक्षण के उपकरण तथा प्रोसिसिंग सुविधाएं जगह–जगह स्थापित की जाएं।

इंसान के बस में तो सिर्फ परिश्रम करना है। फल तो भगवान देता है। यह कहावत पहाड में खेती–बाडी के व्यवसाय में अक्षरसः सत्य होती है। किसान जिस–तिस तरह से हल–बैल खाद बीज व पूंजी का प्रंबध करके खेती में अपनी जान लगा देते हैं। पर जरूरी नहीं कि अंतिम फल (फसल) सन्तोषपूर्ण ही हो। पर्वतीय प्रदेश की जलवायु की विषमताएं अप्रत्याशित हैं कभी बरफ, तो कभी ओले, पाला, कमी अतिवृष्टि कभी अनावृष्टि (सूखा), कहीं क्लाउडबर्स्ट तो कहीं बाढ़ व भूस्खलन हर वर्ष की बात हो गयी है। इन प्राकृतिक आपदाओं में किसान अपना सब कुछ खो बैठते हैं। ऐसी स्थिति में आपदा प्रबंधन विभाग/बोर्ड/प्राधिकरण ही किसानों के जख्मों में राहत का मरहम लगा सकते हैं। नुकसान की भरपाई तो नहीं हो सकती परन्तु यदि नुकसान का शीघ्र आंकलन करवा कर राहत राशि तुंरत दी जा सके तो आहत किसानों को अपने पैरों पर खडे होने की हिम्मत आ जाती है और आत्महत्या की आशंका टल सकती है। राहत राशि में कुछ हिस्सा किसानों के परिवार के गुजारे के लिए (कम से कम 3 माह के लिए) हो और बाकी आगामी फसल के लिए हल जोतने, खाद–बीज खरीदने के लिए पर्याप्त हो। बैंक की किस्तों को टाल दिया जाए अगली फसल के तैयार होने तक। सरकारी की मदद से लोग फसल बीमां की राशि भी जल्दी से जल्दी चुकाई जाए तो प्रभावित किसानों को एक बार फिर जीवन यापन के साध ान जुटाने में मदद मिलेगी। विपदा में सबसे जरूरी है, सरकार और उसके विभागों तथा संस्थानों की उपस्थिति और उनकी सदभावनाएं जिससे उन्हें लगे कि मुसीबत के क्षणों में सरकार का सहारा तो है।

उत्तराखंड सरकार की तरह की अन्य स्वयं–सेवी संस्थाएं इन क्षणों

में क्रियाशील हो जाए और तमाम स्रोतों से हर प्रकार की मदद जमा करके प्रभावित परिवारों तक पहुंचाएं। संकट के दिनों में ग्रामीण जनता के बीच जाकर उन्हें हिम्मत बंधाएं। सबसे आवश्यक यह है कि सरकार द्वारा पारित राशि पूरी की पूरी प्रभावित किसानों के खाते में जाए, सरकारी कर्मचारी और बिचौलिये उसका दुरूपयोग अपने स्वार्थ के लिए न करें। राशन की दुकानों द्वारा जमा खोरी और कालाबजारी कर किसानों की मुश्किलों को और न बढ़ने दिया जाए।

कृषि विश्वविद्यालय और आई.सी.ए.आर. संस्थाओं को विशेष सक्रिय होना चाहिए। वे किसानों को वाटरशेड मैनेजमेंट प्रणाली के काम में मदद करें और इसके फायदे बताएं। समग्र कृषि प्रणाली ऐसे समय के लिए सर्वोचित है। यदि फसलों को नुकसान हुआ है तो बागवानी, पशुपालन, अथवा मुर्गीपालन तथा पांली–हाउस तो बचे रहेंगे। उन से नुकसान का प्रभाव कम किया जा सकेगा। सीमित भूमि और संसाधनों को ध्यान में रख कर समग्र कृषि प्रणाली के सभी साधनों और उपयोग का प्रयोग के हिसाब से खेती के साथ अन्य सहायक क्रियायें पशुपालन, मुर्गीपालन, फल–फूलों व जड़ी–बूटीयों की खेती अथवा पौलीहाउस प्रणाली को अवश्य अपनायें इस तरह प्राकृतिक आपदा का प्रभाव कम हो सकेगा।

पर्वतीय किसानों के उत्पादों को मुख्य बाजारों तक पहुंचाने के लिए मोटर मार्ग उपलब्ध हो। गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं जगह–जगह पर उपलब्ध हो। गांव के स्कूल अच्छी स्थिति में हो जिनमें अध्यापक नियुक्त किये जाए जो नियमित रूप से स्कूलों में पढाऐं, बिजली और पीने के पानी की उचित व्यवस्था करना सरकार व स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी है, वे उसे पूरा करें। यदि जीवन की मूलभूत सुविधायें गांवों तक पहुंच जाए तो फिर पलायन होगा ही क्यों?

आवश्यकता है मानसिकता बदलने की। सरकार अपने अधिकारियों

और कर्मचारियों के काम की लगातार समीक्षा करें उन्हें दूर दराज के गांवों में जाकर किसानों से बात–चीत करने को वाध्य करें वहां जिन सुविधाओं का अपेक्षा हैं तुरंत उपल्बध कराऐं। सिंचाई की यथासंभव व्यवस्था कराऐं, विधायकों को क्षेत्र में भेजकर जनता की परेशानियों को दूर करने का दायित्व दे, और उनके काम की भी समीक्षा हो। हर काम के लिए लोगों से पैसा लेना बंद करवाएं। पूरे उत्तराखंड में चल रहे भ्रष्टाचार का तांडव बंद करवाएं, भ्रष्ट अधिकारियों को ट्रांन्सफर का लाभ न देकर उन के विरूद्ध सख्ती से पेश आएं। जनता का विश्वास पुनः प्राप्त करें। उत्तराखंड को एक विकसित प्रदेश बनाने की प्रभावी योजना बनाये। मात्र कुर्सी बचाने की जिद्दोजेहत बंद हो कुछ ठोस काम हो। गरीबों, असहाय, पिछडे वर्ग के लोगों पर विशेष ध्यान दें। सबका विकास हो तथा वन तथा भू–माफिया से मुक्ति मिले। नशा मुक्त उत्तराखंड बनाने के सफल प्रयास किए जाए यदि प्रशासन सुधर जाए तो लोग अपनी मातृभूमि, अपना गांव व घर, जमीन, जंगल, क्यों छोडेगें।

इतनी शुद्ध हवा, इतना मीठा पानी , इतनी हरियाली छोड़कर दूषित हवा, पानी और दूषित वातावरण में क्यों कोई जाएगा। अपना गांव न छोडें, यहां रह कर खेती–बाड़ी, पशुपालन मुर्गीपालन, फल, सब्जी, दूध, घी और काफल, हिसालू, किल्मोड़ों का स्वाद लेते रहेगें। ये अन्यत्र आपको कहां मिलेगें? पहाडों को और सुंदर तथा स्वच्छ बनाये ताकि देश के कोने–कोने से लोग यहां आए। इन पर्वत शिखरों, नदी–नालों, फल, फूलों यहां के खानपान और सांस्कृतिक विधाओं का आनंद लेने हर वर्ष आते रहे। यह देव भूमि है। यहां चार धाम हैं, दर्जन भर झीलें हैं, औली में शीत कालीन खेल (स्कीईंग), पैराग. लाइडंग व रिभर राफ्टिंग की सुविधाए हैं।

नवयुवकों को घर छोडने के बजाय गांव में बसने की बात सोचनी

चाहिए। आप कृषि के साथ अन्य काम धंधो से पर्यटन, छोटे–मोटे उद्योग, फुट प्रोसेसिंग, फल–फूलों की नर्सरी जानवरों के फूड लिए उन्नत चारे के स्टोर खाद–बीज के भंडार खोल सकते हैं गांव की उपज को जमा करके आगे बाजारों में बेचने की व्यवस्था कर सकते हैं। पलायन से कुछ हासिल नहीं होगा। कृषि यंत्रों को किराये पर देने तथा कार्पोन्टरी, लोहार का काम, मोबाइल रिपरिंग का कारोबर करके जीविका मजे से चला सकते हैं। आपकी मेहनत आपके साथ है। जो अवश्य ही गाँवों में रंग लायंगी।

♦♦♦

संघर्ष ही इंसान को जीना सिखाता हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है– ''कोई फरिस्ता तुम्हारे आँसू पौछने नहीं आयेगा कोई फरिस्ता तुम्हें अंगुली पकड़ कर सफलता तक नहीं ले जायेगा अगर कोई इन्सान आपकी मदद कर सकता है तो वो आप हैं। खुद आप ही वह इन्सान है जो सबसे बेहतर तरीके से जानते हैं। खुद को मरने मत दीजिए। उठिये, देखिये आपकी मंजिल आपका इन्तजार कर रही है।''

फूड टैक्नोलॉजी में छिपा भविष्य

अशोक सिंह

भारतीय संस्कृति में क्षेत्रीय आधार पर व्यंजनों की भरमार है पर इस व्यस्त जिंदगी के कारण इनका स्वाद ले पाना दूभर होता जा रहा है। कम से कम समय में कुछ बना लेता और खाने का ट्रेंड दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। आजकल की चलती भाषा में इस इंस्टेंट फूड के नाम से भी जाना जाता है। इसमें पिज्जा, नूडल्स, बर्गर, सैंडविच, चिप्स, सॉफ्ट ड्रिंक्स, फ्रुट जूस, प्रोसेस्ड फूड एवं फ्रोजन फूड का खासकर उल्लेख किया जा सकता है।

मात्र चंद वर्षों पहले तक भारत जैसे कृषि प्रधान एवं विकासशील देश में इस प्रकार के खान–पान का ज्यादा प्रचलन नहीं हुआ करता था। पर आज फास्ट फूड एवं इसी प्रकार के जंकफूड हमारी जिंदगी का अहम् हिस्सा बन चुके हैं। विकसित देशों से आई यह आहार संस्कृति खासकर युवाओं और कामकाजी मध्यम वर्ग के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसी का नतीजा है बहुराष्ट्रीय फास्ट फूट चेन की शाखाओं का भारतीय शहरों में पैर फैलाना। इसी की देखा–देखी भारतीय फूड कंपनियों ने भी फास्ट फूड श्रृंखलाओं का विस्तार करना शुरू कर दिया है। दुनिया भर में हजारों करोड़ रुपए का कारोबार सिर्फ इसी क्षेत्र में देखा जा सकता है।

देश में शीघ्र खराब होने वाली सब्जियों और फलों की समुचित परिरक्षण व्यवस्था के अभाव में हर साल हजारों करोड़ के ये खाद्य पदार्थ नष्ट हो जाते हैं। जबकि विकसित देशों में इनके प्रसंस्करित डिब्बाबंद उत्पादों के तैयार किए जाने से इस प्रकार की स्थिति का कृषकों और उत्पादकों को सामना नहीं करना पड़ता। ऐसे में सहज कल्पना की जा सकती है कि ग्रामीण स्तर तक ऐसी तकनीकों के

प्रचार–प्रसार से न केवल इन बहुमूल्य खाद्य पदार्थों को लंबे समय तक परिरक्षित अवस्था में रखा जा सकता है बल्कि कृषकों की आमदनी भी बढ़ाई जा सकती है।

बी.एस.सी. (फूड टेक्नोजॉजी) से लेकर फूड साइंस और फूड इंजीनियरिंग सरीखे विषयों में इस प्रकार के विशिष्ट प्रशिक्षण उपलब्ध हैं। फूड इंजीनियरिंग के क्षेत्र में पारंगत युवाओं का दायित्व ऐसी मशीनों और उपकरणों का अभिकल्पन करना व तैयार करना है जिनके इस्तेमाल से खाद्य परिरक्षण संभव हो सके। इन मशीनों की मांग न सिर्फ फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में बड़े पैमाने पर है बल्कि बड़े होटलों और फॉस्ट फूड चेन में भी इनकी उपयोगिता देखी जा सकती है। यह तो हुआ हार्डवेयर पक्ष। इसके अलावा प्रयोगशाला स्तर पर भी फूड प्रिजर्वेशन विशेषज्ञ बड़ी संख में नई तकनीकों के ईजाद में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस स्तर पर आहार सामग्री की रासायनिक संरचना की जांच कर उनके लिए उपयुक्त परिरक्षक रसायनों का पता लगाना और लंबे समय तक स्वाद व ताजगी को बनाए रखने जैसी विधियां शामिल हैं।

बैचलर्स स्तर का पाठ्यक्रम करने के बाद एम. एम–सी और पी. एच–डी. सरीखी डिग्रियां भी इस क्षेत्र के हासिल की जा सकती हैं। पाठ्यक्रमों के अनुसार विषयों का चयन करते हुए विशेषज्ञता सुनिश्चित की जा सकती है। पश्चिमी देशों की तुलना में हमारे देश में इस ओर अब तक अधिक ध्यान नहीं दिया गया है पर इस प्रकार की बर्बादी पर अंकुश लगाने के साथ निर्यात बाजा में प्रसंस्करित आहा मे क्षेत्र में हिस्सेदारी बढ़ाने की दृष्टि से भी इस विधा के महत्व पर ध्यान दिया जाना आवश्यक हो गया है।

जहां तक ऐसे पाठयक्रमों में दाखिले की बात है तो अमूमन जीव. विज्ञान तथा अन्य विज्ञान विषयों की शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं

को ही प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार के सर्टिफिकेट स्तर के पाठ्यक्रम दसवीं के बाद भी चंद संस्थानों में आयोजित किए जाते हैं। दाखिले चयन परीक्षा के आधार पर विशेष तौर से बैचलर्स डिग्री स्तर के पाठ्यक्रमों में दिए जाते हैं। पाठ्यक्रम के दौरान खाद्य प्रौद्योगिकी के विविध आयामों के अतिरिक्त इनके पोषक मान के संरक्षण, पररक्षण की विधियों, प्रसंस्करण की अत्याधुनिक तकनीकों, सुरक्षित डिब्बाबंदी के तरीकों, इनके परिवहन आदि पर भी प्रकाश डाला जाता है।

रोजगार की संभावनाएं सरकारी क्षेत्र की कंपनियों के अलावा निजी क्षेत्र की कंपनियों में भी तलाशी जा सकती है। प्रमुख कंपनियों में मदर डेयरी, अमूल, कैडबरी, ब्रिटेनिया, निरुलाज, मॉर्डन, डी एम एस, एपीडा, इत्यादि का जिक्र किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त बड़े होटलों और रेस्त्रां में भी रोजगार के अवसर प्रशिक्षित युवाओं के लिए कम नहीं है।

कृषि कार्यकलापों की पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले युवा इस प्रशिक्षण का उपयोग स्वरोजगार हेतु भी कर सकते हैं। वे चाहें तो अपने कृषि उत्पादों के अलावा आस–पास के कृषकों के उपज के परिरक्षण के कार्य को अपने हाथों में लेकर आय सृजन के लिए एक अतिरिक्त रास्ता भी अपने लिए खोज सकते हैं। बाद में प्रोसेसिंग कर इन उत्पादों की स्वयं मार्केटिंग करने के बारे में भी सोच सकते हैं।

इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा हासिल करने वाले युवाओं के लिए अनुसंधान एवं अध्यापन के विकल्प भी उपलब्ध हो सकते हैं। दक्षता हासिल करने वालों के लिए विदेशों में रिसर्च एवं रोजगार के अवसर भी हासिल हो सकते हैं।

फूट टैक्नोलॉजी पर आधारित पाठ्यक्रम संचालित करने वाले प्रमुख संस्थान	
साहू जी महाराज यूनीवर्सिटी, कानपुर (उत्तर प्रदेष)	गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर (पंजाब)
एस एन डी टी यूनीवर्सिटी, मुम्बई (महाराश्ट्र)	दिल्ली विष्वविद्यालय, दिल्ली
संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टै. क्नोलॉजी, लोंगोवाल, संगरूर (पंजाब)	गाविन्द बल्लभ पंत यूनीवसि. र्टी, पंतनगर (उत्तरांचल)
सेंट्रल फूट टैक्नोलॉकिल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर (कर्ना. टक)	गुरु जम्बेष्वर यूनीवर्सिटी, हिसार (हरियाणा)

♦♦♦

जीत उसी की होती है जिसमें, मौर्य, धैर्य, साहस,
सत्य और आस्था। निष्ठा होती है।

Be an Employer rather than an Employee

Gajendra Singh Rawat
B.ScEngineering (Civil), DCE
Ex- CMD: Hythro Power Corpn. Ltd.

People from the state of Uttarakhand have done well in area of employment/job as career. They have done extremely well in the areas such as military and para military forces, police and civil services. Though I have no data to support my observation but I find that Uttarakhandies have had a quantum jump in this area during the last about three decades. About a century back people from Uttrakhand and especially from hilly areas never thought that the business could be a career option. So much so the girl's parents would be reluctant to matrimonial proposals from the boys who did not have regular jobs and were self-employed. Unfortunately, same thinking continues till date and not many people have taken business as their career or are willing to take risk & venture for self- employment or entrepreneurship.

I have chosen to write on subject because I have had an experience of being an employee as well as an employer. After having done engineering from Delhi College of Engineering in 1978, I started working in government sector as class -I officer . Soon I switched over to public sector where I worked for about 12 years. While in service I was famous as workaholic officer but I always

thought that most of my efforts were going waste. This used to result into frustration and therefore even after having earned three quick promotions I decided to quit my job and start something of my own. I chose to start the work which I had already learnt during my service period of 12 years. The business I chose related to Electrical Engineering, which I knew the most. Beginning with a small annual turnover of rupees 29 lacs in 1991, the company reached to a level where it's an annual turnover exceeded rupees 372 crores. I would not say that the entire journey was very smooth but what I can say with certainty is that the challenges faced gave me huge confidence and made me stronger to meet the hurdles which ultimately paid high dividends in form of business growth.

The job as a career has its own advantages of providing more security but at the same time it is far less challenging and has very little to offer as incentive for hard work. There may be more chances of failure in business but at the same time if we succeed, the incentives in form of increased wealth are much higher. Economic prosperity of it's people is very important for any community or for state and this can come mainly from entrepreneurship. For instance the Jain community in India prefers business over any service including high profile services such as IFS, IAS, IPS etc. The individual growth contributes to the community growth and subsequently to the growth of state and ultimately to national growth.

When we think of starting something of our own, normally we start worrying about the finances. The people having money can choose to set up capital extensive business. However, there are number of businesses which can be started with very little or almost nil capital. One should always choose a business where there are no financial strains. Also one should choose a business where one is most conversant and comfortable with the job. For instance choosing the high tech business without self knowledge could be counter productive, especially when there is shortage of money that is needed for hiring knowledgeable employees. Age of the person wanting to start business is also an important factor. Unless it is a knowledge or experience based business for the beginners or a business to be performed as freelancer, one should not start any capital extensive business after attaining the age of 50 years or more because in case of failure (in capital extensive business) such step may result into loss of savings which otherwise were meant for the old age.

Any business which maybe as small as shop keeping or bigger one involving setting up of own factory or establishing an enterprise in service sector can be started depending upon the experience and capital in possession. There are number of businesses which can be started as freelancer, which require almost no capital. A design engineer/professional, a doctor, an insurance agent, an architect or a software expert need

to know their job and should possess knowledge about the market available for them or for their product. All these businesses require almost zero capital. There are number of business options in service sector, where the enterprise can be started almost with no capital but can be finally grown into a multi crore company. For instance the works such as housekeeping, homemade gourmet food, maintenance of machines/equipment, pest control, gardening/ plantation, security services, manpower supply, manpower placement, performing outsourced jobs, childcare homes, consultancy, event planning, app-development, training and grooming of personal for domestic help, home made beauty products, making and selling of detergents, branding and selling of organic foods etc. can be started with almost no capital and can be turned into multi crore business. There are number of success stories of such businessmen. For example Nirma, MDH masala and the Mumbai dabbawala are some of the success stories of people who started with hardly any capital but created business empire for them.

The Government of India has recently started Start-Up programme for entrepreneurs having new ideas. Those who have new marketable service or product in mind and find it difficult to implement the ideas and translate into business are given free training by the government and are also provided initial finances. Such Start-Up entrepreneurs even have the option of patenting their products at much less fee so that they could reap the benefits of ideas. Therefore, people with new ideas have

an excellent opportunity to start their own business for which lots of help is available from the government. Similarly there is another programme of Government of India which is called Stand -Up and is meant for STs/SCs who have enterprising skills and are wanting to start their own business. Under this programme also the facilities such as free training and initial financing is available for STs/SCs.

Daily, weekly and monthly monitoring of business activities is very important. Unless we fix daily, weekly, monthly and yearly targets/milestones we cannot grow our business. Therefore, physical and financial targets should be fixed and these should be monitored on daily, weekly, monthly and yearly basis. Any shortfall in achieving physical or financial targets should be made good by putting extra efforts. Best energy should be put to recover money from the debtors/clients so that fund shortage does not become reason for slow growth.

Unless one create reasonable financial reserve, it is difficult to grow the business and take it to next level. Good financial planning, being reasonably miser in initial phase of business, good track record of paying government taxes are very important for growth of any business. Banks, Private Equity companies and other flnancers are very comfortable while lending money or dealing with enterprises having good track record of paying their taxes with sincerity.

I want to record here that having good human resource

is as important as having good finances. In fact, good employees can create wealth for the company even without adequate finances being put at their command. On contrary, incompetent employees cannot create any wealth for company even if lot of finances are put at their disposal.

Above suggestions may be more useful for Uttarakhandies residing in plain areas of tarai region and for the people living in cities. For the Uttarakhandies living in hilly districts and wanting to start their own business, I have written another article on migration from Uttarakhand and my suggestions to fight the problem. Several suggestions for self employment have been given, which may please be gone through.

I would therefore again advise my fellow Uttarakhandies to come forward into the business and be self employed or an employer rather than being an employee. Your step in this direction and your success story would motivate people around you to take similar step and the day will not be far when economic prosperity would travel across the state.

♦♦♦

Small business through Entrepreneurship -An opportunity in Uttarakhand

K R Arya

"Startup India" is a revolutionary scheme that has been started to help the people who wish to start own business. These people have ideas and capability, so that government will give them support to make sure that they can implement their own ideas and grow Success of this scheme will eventually make India, a better economy and a strong nation. (Prime Minister, Narendra Modi, January 2016).

Entrepreneurship has assumed greater importance in recent years in view of the fact that it can create and provide job to major chunk of population. Alternatively, more job can be created through entrepreneurship development by setting up of more enterprises in newer areas by exploring new market opportunities and investment. The emerging environment has thrown ample opportunities for providing a quantum boost to entrepreneurship and small business activities provided that emerging threats can be combated effectively through innovation and competitiveness.

Entrepreneurship development and training are the key elements for small business development for the first generation entrepreneurs, particularly the youth. It is an

important means for economic empowerment of poor people through wealth creation.

In Uttarakhand (UK), there are ample entrepreneurial and investment opportunities in some sectors such as tourism, travel & transport, hospitality, supply chain of food, fruit, herbal (medicinal & health food) processing & marketing, cold storage & warehousing, construction & maintenance of roads & highway, plantation & orchid, Organic Foods & vegetables, horticulture, arts & crafts and many more areas. The demand for herbal medicines & health care food, organic food, floriculture, horticulture products is very high at national and international market that offer thousand crores Rupees of business opportunity in small scale sector for the state.

The state domestic product of Uttarakhand grew almost with 7-8% with the support of industrial package of Central Govt, during initial years of the state. During these years, the state and ample opportunities grow with reasonably strong economy with more focus on the areas of its strength and opportunities, particularly in hilly areas. The timely investment in these areas could have been done in rightsizing the infrastructure creation and creating enabling environment for the people to start job oriented small business/micro enterprises in MSME sector. The sector is considered very vibrant with a potential of creating more jobs for youth at their locations that enhance local prosperity. Further the growth of 7-8% has not been distributed evenly among

its population through well designed policy instrument with effective distribution management channel and well-grounded schemes. Broadly these two factors have a cascading effect on growing economy, particularly, on employment generation and livelihood activities of people living in hilly and remote areas that has led migration problem for now and will be impacting the economy negatively in future.

The frequent natural calamities are another problem that has caused irreparable damage to its people, economy and environment. It is also a fact that such factors also have been negating Government's efforts of development initiatives. Despite concerted efforts, it is not being restored with fast pace. The recoupment period is so long that it is repeated with subsequent calamity in next location and the cycle goes on. The repeated disruption and dislocation of life and resources have shaken the confidence and socio-economic life of people.

As per projections, the working age population of UK would be more than 84 lacs by 2022 that would be available for various job. The unskilled lot will be in more miserable condition as they will not find jobs in other states as well.

The jobless growth and lack of opportunity for small business, jobs, good education, better infrastructure and amenities etc. comparable to other states, have been missing all together in present scenario in the state. The joblessness is so acute now that only 39% (approx.)

population is residing in the hills and are surviving on money-order economy and on their resources and the rest are settling down in foothills of state or moving out of state. The phenomena is on and there is constant thinning out of its population and talent resource.

The State Govt, has been taking a number of measures from time to time to address these problems that remains an unfinished agenda due to frequent changes in leadership and affecting the efficiency of on-going programs and schemes.

About 60% population lives (at the bottom of the socio-economic hierarchy) in difficult terrain, sloppy hills, inaccessible bordering areas frequently hit by natural calamities, where development efforts have hardly changed the economic life of people. It required sustained and dedicated efforts on the part of state leadership with the active involvement of environmentalists, experts and civil society. While promoting entrepreneurship for small businesses, the vision, mission and objectives of scheme should be amply clear with well defined, outcome based achievable targets in respect of all stakeholders.

For example, in case of small business/enterprise, the prospective entrepreneurs should be provided information about ESDPs Itraining, & training provider, schemes providing cheaper credit, technology sourcing, marketing facility and linkages, hand holding & mentoring support etc. Moreover the manufacturing enterprise

should be competitive, location specific, using latest technology & resources etc., as comparative advantages that reduces transaction cost which is a major deterrent in making profit in manufacturing activities in state like Uttarakhand. In Uttarakhand small business are highly unorganized and scattered in structure that carries higher transaction costs whereas in other states like Gujarat, Maharashtra, these are highly organized and competitive. Without government support and regular mentoring of business activities including its marketing tie ups, small businesses are not profitable and sustainable in the state. This is the single most reason for not developing small businesses in the state.

Thus Culsterisation of business activities in product specific villages such as medicinal plants processing, food & fruits crops processing & packaging (health food, Potato, Giner, Tomato & other vegetables), Organic food will not only reduce the transaction cost but will improve the quality of products and its acceptability at market place. District-wise food-park may be setup through cluster centric approach. Further to reduce the cost of production, Common Facility Centers (CFS) may be set up in the area villages for encouraging local craft & artisans' items where raw materials and traditional skills are available. These CFCs may be linked to state marketing agencies for pushing the sale of products.

The govt, should have an emphasis on creating an enabling environment that improve skill, technology,

infrastructure, ease of doing business, tax reforms and curve the leakages in the delivery system. Such efforts will act as enabler to attract large investment needed particularly for entrepreneurship & skill development programs and startup business as envisaged by our Prime Minister in January 2016. Once it is done, more investment will be pouring along with new entrepreneurs.

Entrepreneurship should be debated as an alternative approach to poverty, unemploy ment, managing fragile environment & degra dation of cultivable land etc.

It should explore alternative models of development that percolates down to poor people to take care of their needs and aspiration that can be met ultimately through job creating and sustainable livelihood. The approach has been overlooked under the shadow of World Bank model of growth, which is difficult to implement in Uttarakhand unlike other states.

For fast and efficient of goods & services to and forth, there is an urgent need to shift our approach to the "bottom of the pyramid", as the market theories accepted this fact that wealth can also be created simultaneously while helping the poor to move out of poverty ('.Fortune at the bottom of pyramid"- C K Prahalad). We need to revisit all these local resources with new market based approach from new business prospective and develop new business models through entrepreneurship routs with integrated approach. However, it should be ensured that

these models should be socially acceptable, financially sustainable, technically feasible, encomically viable and further these need to be supported by backward and forward linkages schemes with new focused approach.

The World Bank's models, we adopted for the country in Nehru era, have top down approach of development has given a mixed response, rather these are absolutely failing in the state like Uttarakhand for the simple reason that one cap does not fit to all. Earlier we accept this fact, better we are.

The infrastructure for technical and skill education was among the issues that has been attributing inconsistently for skill formation and small businesses in the state and lastly has negative consequences on employment opportunities. The state intervention is also required in policy initiative, organizational preparedness, and infrastructure to study modern business and entrepreneurship courses. State government so far has not been able to set up its own state level Entrepreneurship Development Institute (EDI) that conducts its own skill & entrepreneurship programs as per its needs and priority. Such institutions are the assets for the state which provides skilled manpower not only to the state economy but to the whole nation. It conducts research in newer areas of business; prepare project profiles, new models, project reports, diagnostic study of dying arts & crafts of state and its revival.

Initiatives for entrepreneurship development by Govt, of India:

Entrepreneurship as a tool for employment generation finds an important place in all schemes of thing of integrated projects/ schemes of Central govt, and is being handled by more than 22 Ministries/Deptts at national level by following different corresponding channels at state level to reach out to youth/beneficiaries that assist them in grabbing business opportunities at field level through entrepreneurship development and training. In addition, three National level institutes have been mandated as apex level trainers for entrepreneurship development, enterprise creation and allied activities. In addition, MSMEs (earlier known as SISIs) and state and national level Industrial Development corporation (SIDCs), banks and other training agencies/institutions in private sector are engaged in imparting training to prospective entrepreneurs. In order to meet state-wise training requirement of local people on the subject, one Entrepreneurship Development Institute and one Technical Consultancy Organization (TCO for project development) have been set up almost in every state except Uttarakhand. In addition at state level, Directorate of Industries (DICs) is responsible for implementing MSMEfs and other schemes/programs.

With the creation of new Ministry of Skill & Entrepreneurship Development (MSED), the Govt, of India has given ESDP training a top priority in Nations's

schemes of things. National Skill Development Mission (NSDM) was launched officially by Prime Minister on 15.7.15, with many inputs, on the occasion of world skill day. Following schemes at national level have been dedicated totally for job and enterprise creation through employment/self-employment rout.

National Policy on Skill Development and Entrepreneurship 2015 was implemented to create a culture of innovation and entrepreneurship for sustainable livelihood and businesses.

Prime Minister Kausal Vikas Yojana (PMIKVY) :

The scheme is being handled by newly created Ministry i.e. Ministry of Skill Development & Entrepreneurship. It's a mega scheme for skill development training, assessment and government certification that will help youth to secure jobs for a better earning and bright future. NSDC has been mandated with the task of bridging the skill gap both in public and private sector. A multi-faceted approach of engaging various agenciees for making the skill education a grand success, in terms of its effectiveness, as a tool for employment generation is surely going to benefit the masses.

Prime Minister Mudra Yojana (PMMY) :

Financing is one of foremost requirement of any business. Towards fulfilling this, under this scheme MUDRA Bank has been set up. Three types of loan would bd

disbursed under three following categories to budding entrepreneurs, viz. Shishu upto 50000/-, 2. Kishore up to Rs. 50001-5.00 lacs, and 3. Tarun Rs. 5.0 -10.0 lacs.

Micro, Small & Medium Enterprises (MSMe)'s promotional Package for MSME development. These schemes/package are implemented through its extended offices/agencies in each state or state Govt. Dte. of Industries, who can provide the details of the package.

Prime Minister Employment Generation Scheme (PMEGS) : The scheme was introduced by Ministry of MSME long back for self-employment generation for youth in rural areas. KVIC has been implementing this scheme through its field officers in every state and the districts.

Deen Dayal Upadhyaya-Gram Kausal Yojana (DDU-GKY) : A placement linked skill scheme of M/o Rural development for poor rural youth was introduced with a target to assuring of at least 75% placement after training. DDU-GKY generally routs its programs through state Skill Missions with in State Livelihood Rural Mission (SLRM).

StartUpIndia & StandUp India business programms : It is an entity, incorporated or registered in India for less than 5 years before with less than Rs 25 crore thousand in any preceding years, will be eligible for hefty concessions, if new product/service driven by technology or intellectual property. To catalyze institutional credit

to entrepreneurs for innovation or commercialization of products, a loan ranging from Rs. 10.0 lacs to 100 lacs would be made available under StantUp India program. Ease of doing business means cutting short procedures that include online registration, single window system and simplifying mandatory procedures.

Micro level alternative models in Uttarakhand (few examples): In Globalist era, a new structure of enterprise operations are emerging with the combination of global parents and local small enterprises that has provided opportunity for franchising, joint venture, Public-private Partnership mode of operation. These models are working very well in rural entrepreneurship and generating employment and income for rural people.

Federation of SGHs Model: The three tier model eliminates the middle man from the business chain and farmers get their good share in new model joint venture. Entrepreneurship in Pulses, organic food etc may be encouraged to organize in three tiers SHGs federation model with the financial support of bank. These two set of activities would be done by three distinct entities viz. farming group, packaging group and marketing agencies/NGOs. These activities would be done by creating two sets SHGs business models. They will be linked to bank for micro finance provided by bank under SHG-Bank linkage program. There would be a distinct Packaging - SHGs to procure (example, pulses, organic foods etc) from Farmer - SHGs or from individuals

and they would clean/dry, pack and label these items in suitable bags and supply them to super market or marketing company like Reliance, Pepsi, McDonald etc. with prior arrangement. The model is unique and replicable in rural areas as middle men have no role.

2. JLG Company as a marketing Model:

Non-seasonal vegetable such as Potato, Ginger, Tomato, Bean, Gourd, Brinjal etc. are heavily grown in hills and have its own competitive advantages to sell it other parts where these can be sold at higher price. This is the best source of income from unseasonal vegetables grown only in hills if the women are organized in joint liability group (JLG) to access bank credit and training support. JLG group company will collect, store, pack and supply these items to big companies like Reliance, Pepsi, Metro Stores etc having marketing access to metors. This alone can change yielding and selling pattern of poor in hilly areas with high return impacting the economic scene in hills.

3. Joint venture between Farmer group & large companies Model: These small business/enterprises need to be properly linked to larger markets or marketing companies such as big bazar, Reliance fresh, Metro stores, ITC etc, who are having large network of marketing. A proper due diligence process will ensure long sustainability and partnership between farmers and large companies. Such joint venture will also facilitate

a supply chain from farmer to consumer (F-C) through these companies who would sell the locally manufactured products or produce, where the demand exists (Example Pepsi Co had a tie up with local potato farmers in Bihar, farmers had earned better and regular income from their land). Such enterprises will be competitive, sustainable, earn better return for farmers and create more jobs for youth.

Initiatives required at state level

To make entrepreneurship a success, a comprehensive campaign is required to raise the tempo among people. Funding may be mobilized from various schemes of Govt, of India. Entrepreneurship involves the community, family, trainers, entrepreneurs, industry, local government, Panchayat, financial institutions etc. to work together.

- An integrated package is needed with govt. initiatives that consists of industrial policy (tax benefits), ease of doing business environment (faster clearances), creating opportunities (Area specific investment) backed by the state policy by providing financial assistance, incentives, training, counseling, scholarship, rewards etc. These schemes are already available with huge funding for all stakeholders with Govt, of India. Efforts may be made for procuring fund, convergence of various schemes of Central & state Govt., design different models and to give more

focus at implementation level to get quality and better results. Companies' Act 2013 provides huge fund from profit making companies for many community activities, including skill training that can be availed by state govt.,/NGO etc. under Corporate Social responsibility (CSR) activities.

- Start teaching entrepreneurship as an optional subject at school level and make it a core subject in business schools, including topics relating to business ethics, success stories, enterprise management, scaling up of business.
- Training-cum-Incubation Centre for different sectors needed to be set up by state Govt, in every university and industrial estate/district and to develop feasible business models at the incubation stage.
- New entrepreneurs need hand-holding and mentoring support even before and after establishing their units to stay in the business and further growth. These Udyamitra will give them hand-holding support and work under facilitating agencies like companies/Trust/NGOs. These Udyamitra will be trouble shooters at core and get in touch with all agencies to create enabling environment and business culture.
- Young persons may be encouraged, guided and motivated for setting-up of micro enterprises by

availing loan under PM MUDRA Yojana (PMMY). Now it is a good opportunity to set up large number of micro enterprises which can be set-up for youth/ students/women/dropouts providing livelihood to them.

- A MSME facilitation Centre and an Entrepreneurship guidance Centre may be set up at state capital (Dehraun & Haldwani) in Public-private partnership (PPP) mode. These should be managed by Ex-Serviceman or by a retired person of Para-military force with proper MOU arrangement.
- A code of Udyamimia may be created District-wise under well designed scheme that can be ramified slowly down stream. They will be multi-skilled and will have multiple roles in rural Entrepreneurship. Apart from motivating Entrepreneurs in setting up business they will link beneficiary to Bank for loan through Bank Correspondent (BC), who would in turn facilitate loan requirement of business from mode of RBI.

Table of Employment / self-Employment oriented Schemes at a glance (Whom to approach at fiew level)

(K. R. Arya, Former Member, Public Service Commission, U.K. & D.G., NIESBUD, Govt. of India)

s N	Schemes Description	Central Ministries/ Agencies	State Govt./ Implementing agencies	Target group	Whom to contact
1.	PMKVY*. It is mega scheme for employment generation through skill training, validation of courses, Govt, certification for entry into job market with better salary package.	M/o Entrepreneurship & Skill Development through NSDC/ SSCs (35)	State Govt/Vocatio nal Training Partners (VTPs)	Unempl oyed Youth, No age limit	NIESBUD Office Dehradun/ NGOs registered with SSC
2.	DDU-KVY**. It aims to impart Skill & place-ment to rural youth/BPL families	M/o Rural Develop-ment	State Livelihood Mission	Rural BPL youth, age 35 years	TSA empanelled at state & distt levels
3.	PMEGP[A]. Scheme is meant for generating employment in rural & urban areas through setting up Micro-enterprises	M/s MSME	Khadi Gramo-Udyog Commission/ Board (KVIQ/KVIBs /DIC	Youth, age-above 18 yrs.	KVIC/ KVIB Regional office Dehradun, Almora
4.	STEP[AA]. Assistance provided in any economic activity for imparting skill for employability/ entrepreneurship.	M/o Women & Child Development	State Women Ds/ NGOs	Unemplo yed women, Age-16 yrs. & above	Distt. Welfare office/empa nelled NGOs.

5.	DY-NULM+. To access gainful self-employment and skill wage employment leading to better livelihood to urban homeless/jobless.	M/o Housing & Urban Poverty Alleviation	State livelihood Mission/ SU -LB	Slum Youth	TSPs(itis/ Polytechnic s)/NGOs empaneled.
6.	PMMY++.Through MUDRA Yojana, collateral free Loan assistance on early terms for setting up business/enterprise to youth through banks. The maximum loan limit is 10.00 lac under the scheme.	M/o Finance Deptt. of Financial services.	All commerical/s cheduled banks including RBBs, NBFCs etc	Three categories of youth Shishu, Kishor, Tarun	Banks, RRBs, MFIs, NBFCs at district level
7.	MSME Development Package. To enhance the competitiveness of MSME by way of capital subsity easy credit, technology, market, training, participation support, incentives etc	M/o Micro, Small & Medium Enterprises DC	Directorate of Industries	Existing units are eligible. Investment limit as applicable to micro, small & medium	DIC in each district
8.	Scheme for Grant in aid to Voluntary Organizations for vocational training/skill development to SC youth enabling them to start income generation activities.	M/o Social Justice & Empowerment	Voluntary organizations	SC Yough up to 35 years age	Distt. Welfare office/V Os/NG Os
9.	Skill development training scheme in electronics and allied activities with certification and validation that encourages placement/ self-employment	Deptt. of Electronics	National Institute of Electronics & information Techn-ology (NIEIT)	Youth	Empanell ed training agencies with NIEIT

10	Skill development Initiative (SDIP) Program. To train Dropouts, school leavers, ITI graduates in vocational training, so as to make them employable in industry.	M/o Skill & Entrepreneurs!™ Development through DGET	DGET	School Dropouts, School Leavers at least 8th standard Artisan /Craft man possessing Skills	Distt Labour Office, Vocational Training Providers (VTP)
11.	Deen Dayal Upadhya Hath-kargha scheme	M/o Textile	State Handloom Cor.	Artisan/Craft man possessing Skills	

* Prime Minister Kausal Vikas Yojana.

** Deen Dayal Upadhya Kausal Vikas Yojana

Program can be written as programme as we are following British English

A Prime Minister Employment Generation Program

AA Support to Training & Employment Program

+ Deen Dayal - National Urban Livelihood Mission

++ Prime Minister Mudra Yojana

GENERAL INSURANCE AS JOB PROVIDER

Kanti Ballabh Dhaulakhandi
MA, (Public Admn.) & LLB (Special)

INTRODUCTION:

India has the world's second largest youth population as per latest UN report. The youth population below the age of 35 years is itself to the tune of about 45% of the total population. The developing countries with large youth populations could see their economies soar, provided they invest heavily in the youth's education, health and protect their rights. India has an edge over other super powers that it has a large youth population that can help them grow in near fliture. lt is a million dollar question for the country that majority of our youths are in search of jobs and they are forced to migrate from their villages to urban areas as there is no job opportunity available to them. It is well known fact that most of youths who are without a job, are due to low standard of education, poor awareness about developing trend in the various industries, unawareness about the power of Internet, which results in greater unemployment threat to our youth and the nation as a whole. They need to understand the power of internet which can be leveraged to find any information that will help them succeed. The youth especially in the rural areas need to be made aware about the Internet and ways they can connect to the internet.

In the competitive market landscape, it's highly important that the youth is made aware of the opportunities that exist within various industries will help them find a suitable job. The Insurance business is one of the fastest growing sector in India and thus provides a lot more job opportunities as compared to other sectors within the country. In this chapter the main focus on job opportunities that exist in Insurance sector and detailed procedures/ guidelines about those opportunities especially within the Public Sector Companies also known as "Government Insurance Companies" have been given.

BACKGROUND OF GENERAL INSURANCE BUSINESS:

In 1972 with the General Insurance Business (Nationalization) Act, General Insurance Business was nationalized with effect from 1st January, 1973. The General Insurance Companies transact all class of general insurance business such as- fire, motor vehicles, burglary, personal accident, marine, engineering insurance (Erection of Power Houses, Industries/ Factories, Machinery Breakdown, Contractors All Risk (CAR) Policy for construction of Industries, roads, tunnels etc.) and Miscellaneous types of insurance policies (medi-claim, cattle, agriculture pump sets, fisheries, Shopkeepers, Householders, Nagarik Suraksha, Overseas Mediclaim etc.) are broadly main policies being issued by 107 Insurance Companies prior to passing of "General Insurance Business (Nationalization) Act in 1972. These 107 Insurance Companies were amalgamated and

grouped into four Companies, known as "Govt. Insurance Companies", namely (i) National Insurance Company Ltd., (ii) The New India Assurance Company Ltd., (iii) The Oriental Insurance Company Ltd.; and (iv) United India Insurance Company Ltd. The General Insurance Corporation of India (GIC) controlled by Ministry of Finance, Govt. of India was incorporated as a Company in 1971 and the above mentioned four Insurance Companies were put under it who commenced general insurance business with effect from 1st January, 1973.

The process of re-opening of the Insurance Sector had begun in the early 1990. In 1993, the Government of India set up a Committee known as "Malhotra Committee" to propose recommendations for reforms in insurance sector. The objective was to complement the reforms initiated in the financial sector. The Committee submitted its report in 1994 wherein among other things; it recommended that the private sector be permitted to enter the insurance industry. It also stated that foreign Companies may be allowed to enter into the business by floating Indian Companies, preferably a joint venture with Indian partners.

The Insurance Regulatory and Development Authority (IRDA) was constituted as an autonomous body to regulate and develop the insurance industry on the basis of recommendations of the " Malhotra Committee Report" in 1999. The IRDA was incorporated as a Statutory Body in April, 2000. The key objectives of

IRDA include promotion of competition in the market so as to enhance customer satisfaction through increased consumer choice and lower premiums, besides ensuring the financial security of the insurance market.

At present there are 29 General Insurance Companies, including Export Credit Guarantee Corporation of India Ltd. (ECGC) and Agriculture Insurance Corporation of India Ltd., operating in the country, details of which are given below:

LIST OF GENERAL INSURANCE COMPANIES

I. PUBLIC SECTOR UNDERTAKING (PSU)

National Insurance Co. Ltd.
http://www.nationalinsuranceindia.com

2. The New India Assurance Co. Ltd.
www.newindia.co.in

3. The Oriental Insurance Co. Ltd.
http://www.orientalinsurance.org.in

4. United India Insurance Co. Ltd.
http://www.uiic.co.in

AGRICULTURE GENERAL INSURANCE CO. LTD. AND ECGC GENERAL OF INDIA

1. Export Credit Guarantee Corporation of India Ltd.
https://www.ecgc.

2 Agriculture Insurance Co. of India Ltd.
www.aicofindia.com

II. PRIVATE GENERAL INSURANCE COMPANIES

1. Bajaj Allianz General Insurance Co. Ltd.
http://www.bajajallianz.com

2. ICICI Lombard General Insurance Co. Ltd.
http://www.icicilombard.com
3. IFFCO Tokio General Insurance Co. Ltd.
http://www.iffcotokio.co.in
4. Reliance General Insurance Co. Ltd.
http://www.reliancegeneral.co.in
5. Royal Sundaram General Insurance Co. Ltd.
http://www.royalsundaram.in
6. Tata AIG General Insurance Co. Ltd.
Website: www.tataaiginsurance.in
7. Cholamandalam MS General Insurance Co. Ltd.
http://www.cholainsurance.com
8. HDFC ERGO General Insurance Co. Ltd.
http://www.hdfcergo.com
9. Star Health and Allied Insurance Company Ltd.
http ://www. starhealth. in
10. Apollo Munich Health Insurance Company Ltd.
http://www.apollomunichinsurance.com
11. Future Generali India Insurance Company Ltd.
http://www.futuregenerali.in
12. Universal Sompo General Insurance Co. Ltd.
http://www.universalsompo.com
13. Shriram General Insurance Company Ltd.
http://www.shriramgi.com
14. Bharti AXA General Insurance Company Ltd.
http://www.bharti-axagi.co.in
15. Raheja QBE General Insurance Company Ltd.,
http://www.rahejaqbe.com

16. SBI General Insurance Company Ltd.
http://www.sbigeneral.in
17. Max Bupa Health Insurance Company Ltd.
http://www.maxbupa.com
18. L&T General Insurance Company Ltd.
http ://www.ltinsurance.com
19. Religare Health Insurance Company Ltd.
www.religarehealthinsurance.com
20. Magma HDI General Insurance Company Ltd.
http://magma-hdi.co.in
21. Liberty Videocon General Ins. Co. Ltd.,
http://www.libertyvideocon.com
22. Cigna TTK Health Insurance Company Ltd.
Tel No. 022-61703600
23. Kotak Mahindra General Insurance Co. Ltd.
Tel No.+91-22-61660001 Fax:+91-22-67132401

JOB OPPORTUNITIES IN PUBLIC SECTOR INSURANCE COMPANIES

There are good opportunities of different types of job with the Insurance Companies which can be seen on their above mentioned websites. The broad guidelines for eligibility criteria for recruitment to different classes (Class-I, Class-Ill i.e. Assistants and guidelines for appointment of Agents on commission basis) is also given below for information of youth seeking jobs. However, detailed information may be obtained from website of concerned Insurance Companies.

I. ELIGIBILITY CRITERIA FOR RECRUITMENT TO THE

POST OF ADMINISTRATIVE OFFICERS (SCALE-I)

a. Qualifications

The qualification and eligibility criteria for Scale-I Officers (Generalists & Specialist) cadre in PSU Companies will be almost similar but recruitment shall be made by individual Company. The proficiency in Computer is also required, therefore due weightage will be given in the final selection. The final selection shall be made on the basis of shortlisting online test, written test, performance in Group Discussions and interview, therefore it is very important to be careful in attempting each questions. However, the eligibility criteria will be as under:

Sl. No.	Discipline	Qualification
1	Accounts	Chartered Accountant (ICAI) / B. Com / M. Com
2	Legal	Graduate in Law,
3	Generalist	Graduate *in* any stream.
4	Actuaries	Post Graduate Degree in Mathematics / Statistics /Science Or Graduation and pass in at feast 04 papers of the examination conducted by Actuarial Society of India
5	Marketing	MBA (Marketing / Sales)

b. AGE LIMIT.

Minimum : 21 years

Maximum : 30 years

Relaxation in upper age limit: Schedule Caste/Scheduled Tribe : 5 years

Other Backward Class (eligible for reservation):3 years

Person with Disability : 10 years

Ex-Servicemen/Disabled Ex-servicemen : Actual period of service rendered in the defence forces + 3 years (8 years for disabled Ex-servicemen belonging to SC/ST) subject to a maximum age limit of 45 years.

Note:

(a) In case of a candidate who is eligible for relaxation under more than one of the above categories, the age relaxation will be available on a cumulative basis subject to the maximum age not exceeding 45 years.

(b) Candidates seeking age relaxation will be required to submit copies of necessary certificate(s) and produce the original certificate(s) for verifications.

DEFINITION OF EX-SERVICEMEN (EXSM):

(i) Only those candidates shall be treated as Ex-servicemen who fulfil the revised definition as laid down in Govt. of India, Ministry of Home Affairs, department of Personnel & Administrative Reforms Notification No.36034/5/85 Estt.(SCT) dated 27.1.1986 as amended from time to time.

(ii) DISABLED EX-SERVICEMEN (DISXS): Ex-servicemen who while serving in Armed Forces of the Union were disabled in operation against the enemy or in disturbed areas shall be treated as DISXS.

SELECTION PROCEDURE:

The selection shall be on the basis of shortlisting of the candidates based on their written test, competitive online examination and performance in Group Discussion and interview.

OLINE TEST:

i. FOR GENERALISTS:

The detailed procedure/instructions can also be seen in the website of individual PSU Insurance Companies. However, the criteria for online test shall be as per following breakup:

s No	Name of Test	Type of Test	Total Questions	Maximum Marks
1	Test of Reasoning	Objective	40	40
2	Test of English Language	Objective	40	40
3	Test of General Awareness	Objective	40	40
4	Test of Quantitative Aptitude	Objective	40	40
5	Test in English Language comprising of Essay, Precise and Comprehension,	Descriptive	3	Essay: 15 Precise: 10 Comprehension: 15

ii. FOR SPECIALISTS:

The exam for specialist positions may exactly be same as that for generalists, except that it has an additional test to test candidate's knowledge of their field as under:

S. No.	Name of Test	Type of Test	Total questions	Maximum Marks
1	1 Test of Reasoning	Objective	30	30
2	Test of English Language	Objective	30	30
3	Test of General Awareness	Objective	30	30
4	Test of Quantitative Aptitude	Objective	30	30
5	In Specialist stream, an additional test to assess technical & professional knowledge in the relevant discipline	Objective	40	40
6	Test in English Language comprising of Essay, Precise and Comprehension,	Descriptive	3	Essay: 15 Precis: 10 Comprehension: 15

The minimum qualifying marks in the online test will be - 60% for General/OBC and 50% for SC/ST.

Negative Marking and Sectional Cut off:

- The exam may have standard negative marking procedure for wrong answers, l/4th of the allotted marks will be deducted for each wrong answer.
- The objective and descriptive English Test will be conducted only through online mode.
- The total marks of the examination will be 200.
- For Descriptive English Test, questions will be displayed on the computer screen.
- Answers are to be typed using the keyboard.

- v The candidates will get 45 minutes to answer the questions.
- v The candidates will be required to obtain a minimum score for each section of objective test separately for short listing for the Descriptive paper evaluation/Interview.

INTERVIEW:

The candidates will be called for interview before the "Interview Committee" from the list of successful Candidates, made on the basis of marks obtained from the online test etc.

Documents to be carried at the time of Examination:

1. Valid Call Letter for the respective date and session of Examination.
2. Photo -identity proof (as specified) in original, bearing exactly the same name and other information as it appears on the call letter/ application form.
3. Photocopy of the above photo-identity proof.

APPLICATION FEE:

As required by the Insurance Company, the application fee will be available on their website.

II. ELEGIBILITY CRITERIA FOR RECRUITMENT OF ASSISTANT GRADE-III CADRE

a) Age Limit: Minimum 18 years and maximum 26

years.

Note: The upper age limit will be relaxed as under: 5 years age relaxation is given for SC/ST and 03 years for OBC (eligible for reservation)

b) Educational Qualification: Candidates should have Graduate from a recognized University or HSC/Equivalent (XII pass) examination with 60% marks (50% for Ex-servicemen, SC/ST and Persons with Disabilities); and the candidate should have passed in English as one of the subjects at SC/ HSC/Intermediate/Graduation level.

SELECTION PROCEDURE

All eligible candidates should apply before the last date for registration of application, as per notification given by the Insurance Company.

All candidates will have to appear for online examination, thereafter; candidates will be shortlisted and will be called for Interview and Computer Proficiency Test.

(ii.) Final selection will be made on the basis of performance in the Online Examination, Interview and Computer Proficiency Test taken together.

Merely satisfying the eligibility norms do not entitle a candidate to be called for online examination/Computer Proficiency Test/Interview

APPLICATION FEE

As per prescribed by the Company. Please see the website.

PAYMENT OF FEES ONLINE MODE:

The application form is integrated with the payment gateway and the payment process can be completed as per instructions on the screen.

HOW TO APPLY FOR RECRUITMENT TO THE CADRE OF ASSISTANT GRADE-III?

Candidates are required to apply online from the website of the concerned Insurance Company as per prescribed date and time.

INSTRUCTIONS FOR APPLYING ONLINE:

Before applying online, candidates must have valid email id & password

Log on to the website

Click on apply online which will open a new screen

For Registration, choose the tab "Click here for New Registration" & enter Name, Contact details and Email-ID

Candidates must note down the provisional registration number & password

Fill all mandatory details of application form

Click on "Final Submit" Button

Take a print out of online application for future use

- For more details like age limit, educational qualification, selection process, application fee, how to apply and other instructions, click on the links given by the Insurance Company.

SELECTION PROCESS

The candidates will be selected on the basis of their performance in online/written examination and personal interview.

For more knowledge about the written exam, interview and other guidelines, the candidates can check the official website.

(Ill) INSURANCE AGENCY AND ELEGIBILITY CRITERIA FOR BECOMING AN INSURANCE AGENT:

Background

The general insurance business is available in rural as well as urban areas and to educate the people about various types of insurance policies beneficial and fit for their trade and business. In rural area, non-traditional business such as Cattle, Agricultural Pump-set, Individual and floater Mediclaim, Overseas Mediclaim, Shopkeeper, Householder, Nagarik Suraksha, Personal Accident and Janata Personal Accident Policy etc. are the need of hours and security against financial losses.

The Insurance Agency can be taken by any person, as per eligibility criteria from the nearest office of any of the General Insurance Company/Life Insurance Company operating in his/her area. The Agent gets remuneration in the form of "agency commission" Which differs from one policy to another, on the insurance premium procured by him/her.

QUALIFICATIONS AND OTHER ELEGIBILITY CRITERIA FOR APPOINTMENT OF AN INSURANCEAGENT

There is a lot of earning potential in this field which depends on procurement of insurance premium by the Agent. The requirements as per IRDA for licensing of Insurance Agents are briefly:-

QUALIFICATIONS

The applicant should possess the minimum qualification of a pass in 12th Standard or equivalent examination conducted by any recognised Board/Institution, where the applicant resides in a place with a population of five thousand or more as per the last census, and a pass in 10th Standard or equivalent examination from a recognised Board/ Institution if the applicant resides in any other place.

PRACTICAL TRAINING

The applicant will have to complete 100 hours training in general insurance business from an approved Institution. This will be 150 hours for agents seeking a licence for both life and general insurance. The requirement for training is 50 hours in case the applicant possesses any of the following qualifications:

- ❖ Associate/Fellow of the Insurance Institute of India, Mumbai;
- ❖ Associate/Fellow of the Institute of Chartered Accountants of India, New Delhi;

- Associate/Fellow of the Institute of Costs and Works Accountants of India, Calcutta;
- Associate/Fellow of the Institute of Company Secretaries of India, New Delhi;
- Associate/Fellow of the Actuarial Society of India, Mumbai;

Master of Business Administration of any Institution / University recognized by any State Government or the Central Government; or Professional qualification in marketing from any Institution / University recognized by any State Government or the Central Government. For such agents seeking life and general insurance (composite) licence the training period will be 70 hours.

EXAMINATION

After completion of practical training, the applicant has to pass a pre-recruitment examination which is conducted by the Insurance Institute of India, Mumbai. (Full details available on the IRDA website www.irdaindia.org

If the candidate meets the minimum qualifications please visit the office of any General Insurance Company's nearest to the candidate's residence (Divisional Office/ Branch Office/Regional Office). The addresses of Insurance Companies are given in the websites of the concerned Insurance Company.

The candidates interested to work as Insurance Agent may approach the Officer In-charge of any Insurance

Company nearest to them and give an application on plain paper. After a preliminary scrutiny and brief interaction with the candidate, concerned officer would proceed with the application based on suitability. The Training would be arranged by the office at a nominal charge. The fees for the licence is fixed by IRDA (currently Rs.250/-).

WHO ARE COMPOSITE AGENTS?

They are the one who sells both life and general insurance policies. Eligibility criteria is the same as that of Insurance Agents but they have to appear for one more test conducted by the IRDA.

PERSONAL SKILLS

This is a field which offers opportunities to people with varied personalities. Skills like sincerity, hard work, presence of mind, confidence, ability to persuade others and commitment for service towards the clients, decide the growth of a person in the insurance field. Organizing skill, systematic approach, quick grasping ability. Good communication skills and an analytical brain is beneficial for good Agents. For being a successful Insurance Agent, the most vital skill required is to have ability for convincing people. They must be self- confident, outgoing, helpful, social and should be able to communicate with people at different levels.

The above mentioned guidelines/details are in respect of PSU General Insurance Companies only and full criteria/

procedures may be checked- up again on their respective websites. It is also advisable to go through websites of Private General Insurance Companies/Life Insurance Companies operating in India for different types of job available with them. There are ample job opportunities in other Public Sector Organizations such as Banks, Life Insurance Corporation of India, Oil Companies-Indian Oil, Bharat Petroleum, Hindustan Petroleum etc. details of which are also available on their websites and our youth can take full advantages of this information. Further there are job opportunities in Defence Sector- Indian Army, Navy and Air Force, therefore their sites may also be seen for deciding the career. The youth who wants to appear in examinations, may go through Books available for Competitive Examinations such as Recruitment of POs in Banks, Administrative Officers in LIC and other Public/Private Sectors as per their suitability.

♦♦♦

Life and time are world's lest teachers
Life teacher us the use of time and
Time teacher us the value of life

Veterinary Science and Animal Husbandry As Job Options

Shri K. Arya, I.A.S (Retd),
Ex-Chairman
Uttarakhand Public Service Commission

Veterinary and Animal Science is important to India as the Human and Medical Sciences. Its application to a predominantly Agrarian society is beyond description. In view of the size of the land holdings getting smaller and smaller with increasing population, cost of agricultural inputs going up higher and higher and the water for irrigation becoming scarce, the Agriculture alone cannot be a viable proposition to meet the full requirement of the farmers. Mixed farming consisting of Agriculture, Horticulture, Animal Husbandry, Fishery can be the only viable combination. The investment in Agriculture and Horticulture is much more where as, with low investment in Animal Husbandry activities the returns can be more, hence, more profitable. India has done wonderfully well in creating its special place in the world in production of milk and milk products, poultry, mutton and egg production.

Animal Husbandry activities do not require large areas of land, nor is a huge investment required, hence are best suited to the small and marginal farmers, therefore, ideal for Hill people and backward and non-industrial areas.

Animal Husbandry activities involve low cost technology

unlike in Agriculture e.g. Tractors, Tubewells, Harvesters, hybrid seeds and Seed drills. The poor farmers and landless agricultural labourers can ideally pursue Animal Husbandry programmes.

Animal Husbandry activities provide large scale employment to women and children in the rural areas. These do not require very high level of tech. skills. The farmers of weaker sections can practice the Animal Husbandry schemes and tech. support could be provided by the Veterinary services in the Govt. sector or private sector. Thus men can pursue Agriculture and the women can be engaged in Animal Husbandry schemes, both contributing to the family income for a better living.

Animal Husbandry activities have great prospects and potential for faster growth of economy in rural areas. The milk production has a ready market for any quantity. The Broiler production, the egg production, the mutton and pork have great demand in the cities and towns and have opened great promise and prospects for future. The availability of animal products has improved the health and neutrient aspects of the general masses.

In the villages, efforts are needed to upgrade the local non - descript animals by cross breeding through an efficient network of Artificial Insemination (A.I.) centres. This can be done by the Government Department but much better by private veterinary doctors and their clinics. The next generation of animals will be high yielding

variety there by increasing the profitability through improved productivity.

5. In the State of Uttaranchal the Animal Husbandry activity is of immense economic importance. As the land is not fertile, not irrigated, hence rainfed, no fertilizer can be used in large quantity and no improved seeds and implements can be used, hence Agricultural operations can not be profitable not even enough for subsistence. Therefore, Animal husbandry is an ideal alternative and ideal supplement to Agriculture and Horticulture. Veterinary scientists can play a very crucial role by providing necessary Veterinary services and extension services. Can start some model units with Bank loans and Government assistance Need not queue up for the Government jobs, which are few and far between but start Veterinary clinics and mobile dispensaries to provide the much needed Veterinary services and consultancy to the farmers. Quality fodder and feed units are another area where Veterinary graduates can do much better.

♦♦♦

Every new morning is destiny's way of talling you, that your purpose in life is yet to be fulfilled.

LEGAL COURSE- A CAREER PLANNING FOR YOUTH

Kanti Ballabh Dhaulakhandi
MA, (Public Admn.) & LLB (Special)

The 12th class is very crucial and important as well, in deciding career prospects of a child. It is well known fact that every students want to get best available job in Multinational Companies (MNCs) and Govt. Departments but only few select the courses according to their capability after the crucial class i.e. 12th standard examination. In the Uttarakhand State, we do not have renowned Coaching Centers, as available in Metro Cities, with the result our youth are deprived with getting through in higher studies such as : (i) Engineering; (ii) Medical; (iii) Commerce; (iv) Computer ; (v) Professional Course; and (vi) Defence Forces etc. There is scarecity of any guidelines for our youth studying in 10th and 12th standard. This is the only reason for not getting opportunities to get admission in the above mentioned Higher Study Examinations.

PROFESSIONAL COURSE- LEGAL.

The different types of Professional Courses are available all over the country including the Uattrakhand State and those are mainly:- (a) Legal (Advocate or Law Officer) (b) Chartered Accountant (CA) (c) Finance and Commerce (d) Fashion, Product and Graphic Designing etc. But the Professional Course – Legal, being a respectable

professional degree course is selected for the benefit of students who are studying in 12th class or have qualified Graduation or Post Graduation with minimum 50% marks can seek admission in various renowned Law Colleges either in Uttarakhand or nearby States, like U.P., Delhi, Himachal Pradesh as convenient to the students. The guidelines and other detailed admission process are being given below for the benefit of such students who are studying in 12th Class as well as who have passed Degree Course i.e. B.A, B.Sc., B.Com. There are two options for taking admission in LL.B. Course, firstly 5 years Law Course after qualifying 12th Class, secondly 3 years course after completing Graduation or Post Graduation, as the case may be. The admission to LL.B. Course is done only on the basis of qualifying in the "Entrance Examination Test"taken by the respective Law Colleges.The details of eligibility criteria, procedures for admission to Law Course i.e. LL.B. degree are given for information of the candidates:

SYLLABUS FOR LAW COLLEGE LL.B (THREE YEARS LAW DEGREE COURSE)

&B.A., LL.B. & BBA, LL.B (FIVE YEARS INTEGRATED COURSE)

1. The medium of instructions and examination shall be English and Hindi (Devanagari Script).

2. The Examination for the degree of LL.B shall consist of six semester examinations. These

examinations shall be held in three years. A student who clears all the six semesters' examinations shall be conferred with the degree of LL.B.

3. The Examination for integrated degree courses shall consist of ten semester examinations. The examinations shall be held in five years. A student who clears all the ten semesters' examination shall be conferred with the degree of B.A., LL.B/ BBA, LL.B etc.

ELIGIBILITY FOR ADMISSION:

(i) A graduate/post graduate in any discipline of knowledge with at least 50% marks in case of General category and 45% marks in case of SC/ ST, from any University established by an Act of Parliament or by a State Legislature or an equivalent National Institution recognized as Deemed University or a Foreign University recognized as equivalent to the status of an Indian University by an authority competent to declare equivalence, may apply for admission in the first semester of Three Years' Degree Programe.

(ii) An applicant who has successfully completed Senior Secondary School Examination or equivalent course from a Senior Secondary Board or equivalent constituted or recognized by a State Government or from any equivalent institution from a foreign country recognized by

the government of that country for the purpose of issue of qualifying certificate on successful completion of the course with at least 50% marks in case of General category and 45% in case of SC/ ST, may apply for and be admitted into the Centres of Legal Education to obtain the integrated degree in law with a degree in any other subject as the first degree.

(iii) The candidates who have obtained First Degree Certificate after prosecuting studies in Distance/ Correspondence mode shall also be eligible for admission in the Three Years LL.B. Programe.

(iv) No candidate shall be permitted to simultaneously register for a Law Degree programme with any other graduate or post-graduate or certificate course run by the University or an institute for academic or professional learning excepting in the integrated degree programme. However, candidates can pursue short term part time course on language, computer science or computer application of an institute or any course run by Centre for Distance Learning of a University.

(v) In order to get admission in the Three Year Degree Course in Law and Five Years' Integrated Degree Course, a General Category candidate must obtain minimum 50% of total marks in the qualifying examination and in case of SC/ST candidates the

minimum marks must not be below 45% of the total marks.

ADMISSION CRITERIA :

Admission to the affiliated colleges in any stream of Law courses shall be made on the basis of Entrance Examination to be conducted by the College/ University. The candidates who are otherwise eligible can appear in the Entrance Examination Test. In case the University does not hold such Entrance Examination for any Academic Year for whatsoever reason it may be, the affiliated colleges/ institutes shall be free to admit the students on the basis of criteria fixed by them, who otherwise are eligible for admission.

AGE AT THE TIME OF ADMISSION :

The University follows rules of Bar Council of India (BCI) according to which, presently the maximum age for seeking admission into a stream of Three Year Bachelor Degree Course in Law, is limited to Thirty Years (30). The University reserves the rights to give concession of 5 years for the candidates belonging to SC/ST or any Other Backward Community. The maximum age for seeking admission into a stream integrated Bachelor of Law degree programme is limited to twenty years (20 years) in case of General Category candidates and twenty two years (22 years) in case of SC/ST.

ATTENDANCE :

Though as per BCI rules, no student shall be allowed to appear in the End-Semester Examination unless the student concerned has completed the required percentage of attendance in the courses.No student shall be allowed to take the end semester examination in a subject if the student concerned has not attended minimum of 70% of the classes held in the subject concerned as also the moot-court exercises, tutorials and practical training conducted in the subject taken together. The Vice-Chancellor on recommendation of Principal/ Director of the concerned college can however, relax this rule in conformity with BCI rules.

CREDIT SYSTEM:

There shall be for each paper with 4 credit where 1 credit= 12 hours of class room teaching. The university adopts BCI mandate in this respect which states that there shall be four class hour for one hour duration each and one hour of tutorial/moot-court/ project per week. By implication it is expected that any course should be completed within at least 48 class hours.

a. For Three Year Degree course in Law, the course shall continue for not less than 15 weeks with at least 30 class hours per week including tutorials, moot-room exercises and seminars provided there shall be at least 24 lecture hours per week;

b. For Five Year Integrated Degree course in Law, the course shall continue for not less than 18 weeks with at least 30 class-hours per week including tutorials, moot-room exercises and seminars provided there shall be at least 24 lecture hours per week.

INTERNSHIP:

Each registered student shall have to complete minimum of 12 weeks internship for Three Year Course stream during the entire period of legal studies under NGO, Trial and Appellate Advocate, Judiciary, Legal Regulatory Authorities, Legislature and Parliament, other Legal Functionaries, Market Institutions, Law firms, Companies, Local Self Government and other such bodies where law is practiced either in action or in management. However, the internship in any year cannot be for a continuous period of more than Four Weeks. All the students shall be required to undergo internship training with Trial and Appellate Advocates at least once in the entire academic period. The period of internship can however, be modified as per BCI directions from time to time. Each registered student in 5 year integrated course shall have to undergo internship in consonance with the rules framed by Bar Council of India.

The number of total papers in BBA, LL.B course relating to management shall be 12 which are listed as under apart from compulsory English subject having two

papers. Both the English papers shall be common for BA, LL.B & BBA, LL.B.

TOTAL NUMBER OF PAPERS IN LAW TO BE OFFERED IN BOTH THE STREAMS.

For a regular law course in the Three Years' unitary stream or under the integrated double degree stream, there shall be not less than 28 papers in all which shall include 18 compulsory papers, 4 clinical papers and 6 optional papers from among the list of optional papers given by the BCI. However, the University introduces 20 compulsory papers as per the recommendations of the Curriculum Development Committee of the Bar Council of India. It is further clarified that all such papers shall be common for BA, LL.B & BBA, LL.B with the same code number. The syllabus/course curriculum of such compulsory, clinical & optional papers relating to Law shall also be common for LL.B 3 year course, though with different code number.

COMPLETION OF THE COURSE

A candidate can complete LL.B (Three Year) Course in a maximum period of Five years and a double degree 5 years integrated program in a maximum period of Seven years. In case a student fails to complete the course within the above stipulated period, he/she shall have to re-register him/her name in the course afresh if permitted

under the rules. However, the Vice-Chancellor reserves the right to extend such period for another one year in rare and deserving cases.

COURT ROOM EXERCISE (CRE)

1. There shall be Court Room Exercises in Law Courses as decided by the Faculty.

2. CRE schedule for students shall be finalized by the course teacher and the students must have to abide by it.

3. Director / Principal, Clinical Legal Education shall be the coordinator for CREs.

4. The number of Rounds shall be decided by the concerned course teacher in consultation with Director/ Principal, Clinical Legal Education.

5. Two teachers shall be present during the CRE in the Court Room (Along with the principal faculty there shall be one more faculty to assist him/her)

6. Students who remain absent from the CRE on the scheduled day shall not be given further chance. However, under extraordinary circumstances the matter shall be decided by the Director/Principal, Clinical Legal Education in consultation with Dean, Faculty of Law.

LAW COLLEGES IN UTTARAKHAND.

The following are the Law Colleges (Govt. and Private

/Deemed University which will help the student for contacting them as convenient to them for seeking admission:

Name of University	Type of University
University of Petroleum and Energy Studies, College of Legal Studies, Dehradun	State Public-Private University
ICFAI University, Dehradun	Deemed University
Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University	Central University
Uttarakhand Technical University, Dehradun	Public University
Jagran School of Law, Dehradun	Uttarakhand Technical University
Uttarakhand Open University, Haldwani	Public University
IMS Unison University, Dehradun	Private University
Libra College of Law, Dehradun	H.N.B. Garhwal Central University
Siddhartha Law College, Dehradun	Uttarakhand Technical University
Unity Law College, Udham Singh Nagar	Kumaun University
Himgiri Zee University, Dehradun	Private University

GOVERNMENT COLLEGES

Dayanand Anglovedic PG College-DAV PG College, Dehradun.

Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University,Srinagar.

Kumaon University – SSJ Campus, Almora.

Uttarakhand Technical University, Prem Nagar, Dehradun.

The LL.B. and LL.M. degree holders can start their own practice in various Courts and there are ample opportunities for dynamic Law Experts who can join Judiciary. The Judges of High Courts and Supreme Court are also considered amongst top most practicing Advocates having good experience. The Law Graduates/ LL.M. candidates can also seek jobs in Judiciary such as Subordinate Judicial Officers and Magistrate, Subordinate Officers and Court Room Staff. They can also get opportunity in seeking jobs in MNCs as Legal Counsel, Asst. Vice President (AVP)/General Manager (Legal). There are sufficient number of vacancies such as Lecturers, Professors and Dean of Law Colleges and Universities are also available.

♦♦♦

Lord krishna has said-
If you don't fight what you qwarat,
don't cry for what you lost
Nothing depends on tuck everything depends
on work, because even Luck has to work.

FUTURE PLAN FOR YOUTH OF UTTARAKHAND

Kamal Joshi
Chief Engineer (Retd.), Power dept. USA

The people of whole universe know very well that one can rise to great positions in his/her life after getting better education, knowledge and ability. We have very successful Doctors, Engineers and IT experts hailing from UTTARAKHAND and rendering their services not only in India but also abroad, particularly in USA and I want to share my experience with you. I have travelled the whole World from Switzerland to California to Andes and South pole to Russia , there is no place as beautiful as our Uttarakhand in the universe. The place where the holy Badrinath Dham and the Kedarnath Dham are located, from where the Pandavas and before that Shree Ram and Laxman transited their way to their final abode. The Uttarakhand is the place, where Guru Nanak Dev and Swami Vivekanand and other saints found peace, and where Mahatma Gandhi spent a whole lot of meditating time, praising Kausani as the only place like heaven in the whole World.

It is also known as the Dev Bhoomi. Such is our Uttarakhand -- with the greatest potential of Hydro-electric power, many times more than that of Switzerland, and where the young boys and girls are brimming with

enthusiasm to make their homes, the best places to live. Their villages are places of joy and their cities are shining stars not only of India but also of the whole World.

Every young person of Uttarakhand must complete high school education and then go to college, to pursue Medical, Engineering or Legal fields, or Business Management for further education or go to a trade school to learn a trade , like welding, plumbing, construction, electrician, electronics, or learn computer programming etc. That will enable each one to bloom in life in the field of their choice and try to pursue opportunities in your home state --there is no place like home and there is no home better than your home.

The World is changing very fast and as was the practice in the past, people left the mountains to pursue dreams in far off places, like I did. The future is changing and coming a full circle --the opportunities are knocking at your door where you live. The youth of Uttarkhand can, and will, make it a place of great cities, beautiful villages, with the best Hospitals and the Centre of Ayurvedic medicine, great Universities and tourist spots of beauty and relaxation. A place where honesty and spirituality will flourish and where there will always be peace and prosperity. Let me bring to your attention, and let you know -- that you are and will become what you think. Think you are the best computer programmer and you will be, think you are the best superstar of India and you will be. Mr. Dhoni is another superstar from Uttarakhnad.

He always thought that he was the best player of cricket and he became one. Always think big and focus on what you want to do. Today with internet and Google and your I phone -- sky is the only limit to what you want to learn and do. But it all begins with learning ABC and 123. Pay the utmost attention to your education -- by the time you are 16 your future is pretty well decided. Do the best, you can do, in your high school -- no fooling around --focus, focus, focus on your path to success and you will find the destination. Right,there is your beautiful home in the most beautiful vales and hills of the most beautiful Uttarakhand.

I also want you to know that there is never ending to ones learning and education. Our General BC Joshi, after he became the head of Indian Army, pursued his PhD thesis on the "Neeti Of Chanakya". If that does not motivate you to keep on learning, I do not know what will.

May Sri Ram ji bless you.

♦♦♦

CROSSWORD ON UTTARAKHAND

Vijay Khandurie
Educationist

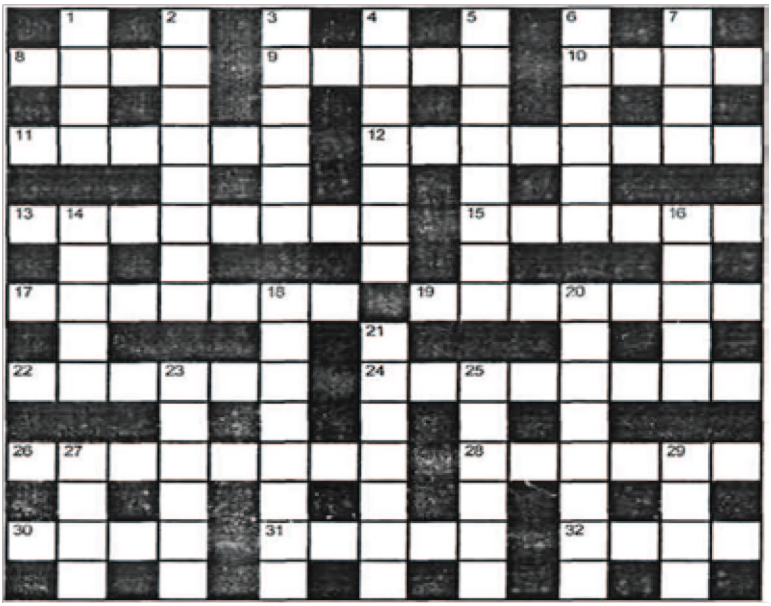

ACROSS

8. The last Indian village on the Indo-Tibet border (4)

9. The posture in which a yoga practitioner sits (5)

10. In order to avoid it, people from plains go to hills during summer (4)

11. This largest Asian antelope is also found in the Terai lowlands in the foothills of the Himalayas (6)

12. The most popular traditional Uttarakhandi folk song (4,4)

13. Ethno-linguistic people residing in the upper Himalayan valleys of Uttarakhand (8)

15. Incarnation of a deity on earth (6)

17. A hill station, in Pithoragarh district, famous for tea estates (7)

19. A glacier found in the upper reaches of the Kumaon Himalayas, to the southeast of Nanda Devi (7)

22. The longest and the second largest tributary of the river Ganga (6) 24. Pertaining to the Rigveda (8)

26. Bhatt ki : Extremely nutritious vegetarian food from the northern hills of Kumaon (8)

28. Chemical element which is also used in making jug pitcher in the hills (6)

30. A hazy view of hills during rainy season (4)

31. The pilgrimage tour in Uttarakhand, viz. Yamunotri, Gangotri, Kedarnath and Badrinath (5)

32. This condensed water from, atmospheric plays havoc in Uttarakhand (4)

DOWN

1. A Hindu goddess, seen as divine protector and the one who bestows moksha, or liberation (4)

2. The origin of river Ganga (8)

3. A group of people who are related to each other (6)

4. Famous barrage and dam across the Sharda river near Tanakpur, Champawat (7)

5. The 'Gateway of Kumaon', the third most populous city in Uttarakhand after Dehradun and Haridwar (8)

6. A base for trekking to Tungnath, third temple of Panch Kedar (6)

7. Jim Corbett National , where Project Tiger was launched in 1974 (4)

14. Man-eater animal usually found in hills of Uttarakhand (5)

16. A Hindu religious ritual of worship, a part oipuja (5) 18. The dark moon lunar phase (8)

20. Malsi , a tourist spot lying at the foot hills of the Shivalik range near Dehra dun (4,4)

21. Meena Rana, Dharni Dhar Chandola, Mola Ram belong to this category (7)

23. According to the Mahabharata, wife of Abhimanyu, son of Arjuna (6)

25. One of the largest pieces of flatland in the mountainous region of Uttarakhand where an airstrip was constructed in 1998-2000 (6)

27. Mussoorie and Nainital are the most famous stations in Uttarakhand (4)

29. the famous Mahabharata is said to be written in hills of Uttarakhand (4)

ANSWERS

Across:

8 Mana, 9 Asana, 10 Heat, 11 Nilgai, 12 Bedu pako, 13 Bhotiyas, 15 Avatar, 17 Berinag, 19 Pindari, 22 Yamuna, 24 Rigvedic, 26 Chutkani, 28 Copper, 30 Blur, 31 Yatra, 32 Rain.

Down:

1 Kali, 2 Gangotri, 3 Family, 4 Banbasa, 5 Haldwani, 6 Chopta, 7 Park, 14 Hyena, 16 Aarti, 18 Amavasya, 20 Deer Park, 21 Artists, 23 Uttara, 25 Gochar, 27 Hill, 29 Epic.

HOW MUCH YOU KNOW ABOUT UTTARAKHAND?

1. When was Uttarakhand emerged as the 27th state of the Republic of India ?

2. Earlier Uttarakhand was known as Uttaranchal. Since when the state is known as Uttarakhand?

3. How many districts are there in Uttarakhand?

4. Where is situated the High Court of Uttarakhand?

5. In which year was most of modern Uttarakhand ceded to the British as part of the Treaty of Sugauli?

6. According to the 2011 Census of India, Uttarakhand has a population of 10,116,752. What is its rank in India so far as the population is concerned?

7. About 83% of the population follow Hinduism in Uttarakhand. Which is the second largest majority religion in the state?

8. Who was the main activist who started the Chipko environmental movement?

9. On the bank of which river is situated Badrinath?

10. Which is the origin of the River Ganges and seat of the goddess Ganga?

11. In which district of Uttarakhand is situated the Gangotri National Park?

12. Which is the largest tributary of Yamuna in Uttarakhand?

13. Established in 1936 and covering 323.75 km2 in area, what was the earlier name of Jim Corbett National Park?

14. Which became the second tiger reserve in Uttarakhand after the Jim Corbett National Park which was chosen in 1974 as the location for launching Project Tiger 1?

15. Which river in Uttarakhand makes the Indian International Border between India and Nepal?

16. At the height of 4329 mts, which is an important pilgrimage place for Sikhs?

17. At an altitude of 1,220 m (4,003 ft) and 1 km long, which is the deepest of the lakes in the greater Nainital area?

18. Which place in Uttarakhand is popularly known as the Yoga Capital of the World?

19. Previously called Jaunsar Bawar, which town is situated between the Yamuna and Tons River?

20. 8 km from Joshimath, which is an important ski destination and winter resort in the Himalayan mountains of Uttarakhand?

ANSWERS: 1. 9 November 2000; 2. January 1, 2007; 3. 13 districts; 4. Nainital; 5. 1816; 6.19th; 7. Islam; 8. Gaura Devi; 9. Alaknanda; 10. Gangotri; 11. Uttarkashil; 12. Tons; 13. Hailey National Park; 14. Rajaji National Park; 15. Sharda; 16. Hemkund; 17. Naukuchia Tal; 18. Rishikesh; 19. Chakrata; 20. Auli (Box item)

SOME INTERESTING FACTS ABOUT UTTARAKHAND

- Uttarakhand is the only state in India with Sanskrit as one of its official languages
- It is believed that the sage Vyasa scripted the Hindu epic Mahabharata in the state
- Uttarakhand has a total area of 53,483 km" of

which 86% is mountainous and 65% is covered by forest.

- Jim Corbett National Park is the oldest national park in the Indian subcontinent.
- Sir Joseph Dalton Hooker, Director of the Royal Botanic Gardens, Kew was responsible to raise the Valley of Flowers.
- Badrinath was re-established as a major pilgrimage site by Adi Shankara in the 9th century.
- The name Badrinath is derived from two words: Badri which refers to a berry that was said to grow abundantly in the area, and nath means "Lord of.
- The original Gangotri Temple was built by the Gurkha general Amar Singh Thapa.
- The Ganga river is called Bhagirathi at the source and acquires the name Ganga (the Ganges) from Devprayag onwards where it meets the Alaknanda.
- Frederick E. Wilson (a.k.a. 'Pahari' Wilson or Raja Wilson.) built the Charlieville Hotel in the hill station of Mussoorie, which now houses the Government of India training institute for the Indian Administrative Service recruits.
- The river Yamuna, which emerges from Yamnotri Glacier at an elevation of 6,387 metres, is the longest river in India which does not directly flow to the sea.

JOB PROSPECTS IN DRDO

B M Sundriyal

India today has a proud position among the elite nations in the world, being: One of the 4 countries to have multi-level Strategic Deterrence Capabilities,- One of the 5 countries to have its own Ballistic Missile Defence (BMD) programme,- One of the 6 countries to have developed a nuclear-powered Submarine,- One of the 7 countries to have developed its own Main Battle Tank (MBT), an indigenous 4th gen Combat Aircraft and One of select few countries to have its own Electronic Warfare & multi-range Radar programme.

Competent manpower is inducted into DRDO through Recruitment & Assessment Centre (http://rac.gov.in) through several schemes such as All India DRDO Scientist Entry Test (SET), Annual Campus Talent Search, selection as scientist from candidates with fresh PhD under the ROSSA scheme, online selection for NRIs and selection of scientists under Lateral Entry Scheme.

HOW TO JOIN DRDO

I. As a DRDS Scientist:

- Induction to DRDS cadre as a Scientist is through RAC (Recruitment & Assessment Centre)
- Induction is largely at Scientist 'B' level (Group A gazetted) through GATE (Graduate Aptitude Test for Engg.)/ campus selection/ interviews.

- ROSSA scheme: Limited number of candidates with fresh PhD degree are inducted at Scientists 'C' level
- Higher Level: Lateral entry at higher levels is carried out on need basis
- Advertisements are published in Rozgar Samachar and leading dailies, besides RAC website
- Please visit RAC website: www.rac.org

II. AS STA 'B' / Technician 'A' DRTC cadre):

- Induction as STA 'B' and Technician 'A' is through tests/interviews conducted by CEPTAM (Centre for Personnel Talent Management)
- Advertisements are published in Rozgar Samachar and leading dailies.
- Please visit CEPTAM web page: www.drdo.org

III. Entry to Admin & Allied Cadre

- Recruitment is through tests/interviews conducted by CEPTAM (Centre for Personnel Talent Management)
- Advts. are published in Rozgar Samachar and leading dailies.
- Please visit CEPTAM webpage: www.drdo.org

♦♦♦

IS : 12071
CM/L : 5418060
Better then the Best
ROTOMEC™

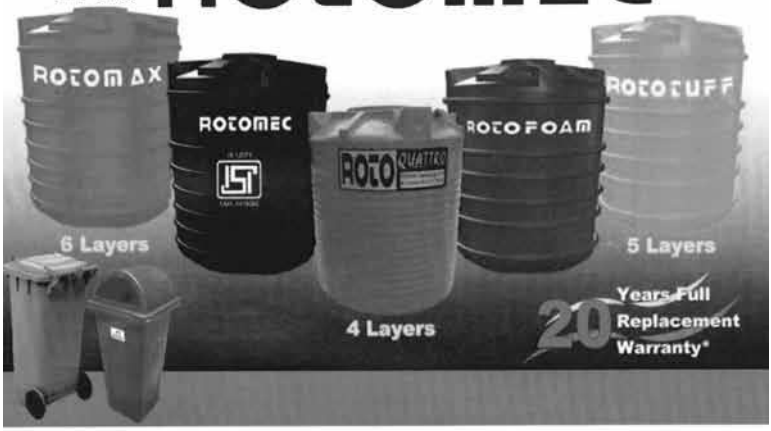

With Best Complements from :

ROTOMEC INDUSTRIES

Manufacture of "Rotomec" Brand ISI Marked Water Storage Tanks Squatting Plats, Dust Bins, Road Divider Cone and Septic Tank

Works Address :
Industrial Grouth Centre - Zone II
Bodhjungnagar Industrial Area
Sub-Division - Sadar,
Agartala, Tripura West

City & Sales Office:
Sakuntala road
Agartala, Tripura (W), 799001
Phone ; 0381- 238-6638
E-mail : rotomec.com.in

Website : www.rotomec.co.in

NOTES

With Best Compliments

From

G. S. Rawat

B. Sc. Engg. (Civil), DCE

Chairman & Managing Director

Hythro Engineers Pvt. Ltd.
Supreme Advertising Pvt. Ltd.
Hancraft Expo Designs Pvt. Ltd.

302 - 303, BHIKAJI CAMA BHAWAN,
11, BHIKAJI CAMA PLACE, NEW DELHI-110 066
Ph.: 011-26186038, 26180238
hythroengineers@airtelmail.in, supremeadvertising@airtelmail.in

Supreme Advertising Pvt. Ltd. sets up Smart Toilet Project

The "Supreme Advertising Pvt. Ltd." is one of the Companies, promoted by Shri G. S. Rawat, who is also an active Executive Member of Uttarayani, has set up the first ever smart public utility in the NDMC area at Chelmsford Club, Rafi Marg, New Delhi. This utility happens to be one of the 36 smart public utilities being built by the said Company at a cost of about Rs.7.00 crores. The project is part of the smart city. These smart utilities are world class as each one of them have extra-ordinary facilities such as bank ATM, water ATM, blood testing facility, ST vending machine, soft drink vending machine and free Wi-Fi as well as free rest-room facilities. The "smart utility complex" at Rafi Marg, New Delhi was inaugurated by Hon'ble Union Home Minister Shri Rajnath Singh recently in presence of various dignitaries including the Lt. Governor of Delhi. The Company has already built more than 200 public conveniences in New Delhi area at a cost of more than Rs.20 crores.

Besides above said contribution, the following activities are under-going in Dev Bhoomi "Uttarakhand" for considerable time:

i) The family have been distributing school uniform to needy students studying upto 12th Class, for last 15 years and also provided benches at few primary schools; ii) Rendering financial help to about 25 needy families by paying Rs.1000/- to Rs.2000/- per family, per month; iii) Provided drinking water to few villages near his native place; iv) The Company has carried out rural electrification work worth of Rs.100 crores approximately in the districts of Uttarkashi, Champawat, Pithoragarh and Rudraprayag.

The family has also installed "Piaos" with RO systems and water coolers at various places in Delhi including one at "Garhwal Bhawan". Also provided one Ambulance free of cost to "Uttarakhand Lok Manch which is parked at Garhwal Bhawan, New Delhi and can be requisitioned by contacting Tel. Nos.23362690, 9953312454 and 9350929567. The incomplete work at Badrinath Temple at Kidwai Nagar (East) at a cost of Rs.15 lakhs is being completed by the Rawat family.

The family have been hosting various annual functions of the Uttarayani and their contribution inludes--regular advertisements in it's Souvenirs, voluntary donation of Rs.5.00 lacs, hosting of Executive Body Meeting at their office at Bhikaji Place, New Delhi. The Uttarayani wishes best of luck to Rawat family and thanks them for this noble cause.